ज्ञानप्रसारार्थ

सम्पर्क :
द्वारा प्रशान्त आश्रम, ओन्ड,
जिला बलसार, द० गुजरात ३९६ ५२१

अनुवाद :
प्रा० शान्तिलालजी म० जैन

प्रकाशक :

चाँदमल सीपाणी,
मंत्री,
श्री जिनदत्तसूरि मण्डल,
दादावाड़ी, अजमेर (राजस्थान)

दूसरा संस्करण :
नवम्बर, १९७८

मूल्य चार रुपया पच्चीस पैसा
रु० ४.२५

मुद्रक :

शिरीशचन्द्र शिवहरे,
दी फाइन आर्ट प्रिंटिंग प्रेस,
अजमेर (राजस्थान)

समर्पण

जिनकी आतुर ज्ञान-पिपासा ने

इस कृति का सर्जन करने के लिए मुझे प्रेरित किया

उन

सब जिज्ञासुओं को ।

"स्मृतिपट पर से ओझल हो गये प्राचीनों ने जो बातें कही थीं उन्हींका, किन्तु जरा अन्य रीति से, पुनः उच्चारण करने का प्रारम्भ विज्ञान कर रहा है, इसके सूचक प्रमाण बढ़ते जा रहे हैं।"

डॉ० पॉल ब्रन्टन

विषय निर्देश

पुरोवचन

मुनिश्री अमरेन्द्रविजयजी वर्तमान के ऐसे विरल जैन मुनियों मे हैं, जिन्होने साम्प्रदायिकता का अतिक्रमण किया है। अभी कुछ ही बरस पहले उन्होने अपनी एक महत्त्वपूर्ण किताब 'आत्मज्ञान और साधनापथ' अरुणाचलम् के भगवान रमण महर्षि को समर्पित की थी। तो कट्टर साम्प्रदायिक जैन साधुओ और श्रावको की दुनियाँ में एक भूकम्प सा आया था। एकाग्र आत्मकामी और आत्मध्यानी मुनि अमरेन्द्रविजयजी की मुमुक्षा तक को सन्देह की दृष्टि से देखा गया था। उक्त किताव मुनिश्री की आत्मानुभव की साधना का एक दस्तावेज् है। उसे पढ़ते हुए लगा कि उन्होने अपनी मुक्ति की राह मे पड़ने वाली सारी ही रूढ़ धारणाओं और जड़ मर्यादाओं को तोड़ा है, और उनकी अदम्य अभीप्सा और मुमुक्षा उन्हे परम निर्ग्रंथ भगवान रमण तक भी ले गयो। उन्हे श्री रमण को पढ़ते हुए, 'लिबरेशन' या ग्रन्थिमोचन का अहसास हुआ। यह सच भी है। क्योकि परमहंस रमण के प्रश्नोत्तरो को पढते हुए, मैं भी कई बार ध्यानावस्था मे चला गया हूँ। इसी से अमरेन्द्र-विजयजी के लिये भी यह गौण रहा, कि श्री रमण ्न नही थे (जिन अवश्य थे), कि वे अद्वैत ब्रह्म के साक्षात्कारी थे, यह जगत् उनके लेखे सत्य नही, माया था। मुनिश्री को महत्त्वपूर्ण यह लगा कि रमण मुक्तात्मा थे, और उनकी वाणी श्रोता को मुक्त करती थी।

इसी कारण सद्भूत पदार्थवादी जिन-परम्परा के श्रमण अमरेन्द्रविजयजी ने, भगवान रमण को प्रणति दी थी। मेरे मन यही सच्चे अनैकान्ती जिनेश्वरो की परम्परा है। लेकिन अनुयायी जैनों का उस शुद्ध कैवल्य परम्परा से कुछ लेना देना नही। वे पन्थ, सम्प्रदाय, भेदाभेद और भेषधारी श्रमण से बुरी तरह ग्रस्त हैं। श्री अमरेन्द्रविजयजी ने उस अनेकान्त-विरोधी जड़ हठारोध का भंजन करके, वर्तमान मे सर्वतन्त्र-स्वतंत्र जिनों की शाश्वती परम्परा को फिर से उजागर किया है। इसी कारण वे मेरे मन प्रणम्य हैं।

❀ ❀ ❀

'विज्ञान और अध्यात्म' मुनिश्री की एक और ऐसी अनमोल कृति है, जिसमें उन्होने विज्ञान और भगवान् के बीच के चिर-कालीन विरोध का, पुष्ट प्रमाणो के साथ विसर्जन किया है। यहाँ फिर उनके कृतित्व मे सच्चे अनेकान्त की वैज्ञानिक प्रतिष्ठा हुई है।

'अनुत्तर योगी' खंड–३ मे मेरे अनुत्तर योगी महावीर प्रभु प्रसंगात् अपने पट्ट गणधर इन्द्रभूति गौतम से कहते हैं: 'यदि ब्राह्मण वाङमय आत्मा और सत्ता की कविता है, गौतम, तो श्रमण वाङमय आत्मा और सत्ता का विज्ञान है।' जैनो का यह दावा गलत नही है, कि जैन तत्त्वज्ञान आधुनिक विज्ञान के बहुत करीब है। जिनेन्द्रो और उनके द्रष्टा योगियो ने, सत्ता, आत्मा, पदार्थ, परमाणु, विश्व, जन्मान्तर, जीव, कर्म, बन्ध, मोक्ष आदि का जो अणिशुद्ध, गणित-निर्णीत ज्ञान विरासत मे छोडा है, उसमे बहुत कुछ ऐसा है, जो आज विज्ञान की प्रयोगशालाओ मे उत्तरोत्तर अधिकाधिक प्रमाणित होता जा रहा है। उसके अनेक उदाहरण पर्याप्त रूप से चर्चित हैं।

यह एक अनिवार्य और जिनसम्मत सत्य है, कि आज विश्व और वस्तु-सत्ता का जो परिणमन है, वे जहाँ खडे है, उससे पीछे नही लौटा जा सकता। लौटा जा सकता है, केवल इस परिणमन के मूल और आधार की खोज मे। यह काम योगी और वैज्ञानिक दोनो अपने खास तरीकों से अपने-अपने इलाक़ों मे करते हैं। लेकिन आज विज्ञान को नकार कर, किसी भगवान या आत्मा की सत्ता को हम ऊपर से मानवचित पर थोपना चाहेगे, तो वह सम्भव न होगा। वह सत्ता के नव-नव्य परिणमन को नकारने का मिथ्या-दर्शन होगा। वह जिन-तत्त्व का अपलाप होगा।

इधर के हमारे कई जैन मुनियों और विद्वानो ने भी इसे स्वीकारा है, और वे जिन तत्त्वज्ञान को विज्ञान की कसौटी पर कसते-जाचते दिखाई पड़ते हैं। पू० उपाध्याय मुनिश्री विद्यानन्दजी भी इस दिशा मे पूर्ण सचेतन है। कवि कर्मयोगी उपाध्याय श्री अमरमुनिजी ने भी विज्ञान-सम्मत भाषा मे तत्त्व और जीवन का

चिन्तन किया है। मुनि श्री डा० नगराजजी ने 'जैन दर्शन और आधुनिक विज्ञान' जैसी गहन गवेषणात्मक किताब लिख कर जिन-शासन की मूल्यवान सेवा की है। आचार्य तुलसी ने अपने शिष्यों को आधुनिक विज्ञानों में शिक्षित-दीक्षित किया है। साध्वी श्री राजीमती ने जैन योग को विज्ञान और मनोविज्ञान से जाँचा है, और मुनिश्री नथमलजी और कवि-चितक मुनिश्री रूपचन्दजी ने अपने तत्वचिन्तन को विज्ञान प्रदान किया है। स्व० न्यायाचार्य पं० महेन्द्रकुमार ने अपने अमर क्लासिक 'जैन दर्शन' में विज्ञान की नव्यतम उपलब्धियों के आधार पर जिन-तत्व का विवेचन किया है। महावीर के प्रति निःशेष समर्पित युवा-चितक भानीराम अग्नीमुख ने जैन दर्शन के पोर-पोर को वैज्ञानिक प्रकाश में खोला है।

और मुनि श्री अमरेन्द्रविजयजी ने 'विज्ञान और अध्यात्म' लिख कर, जैन परिधि से ऊपर उठकर, वैश्विक आत्मज्ञान और विज्ञान के सीमान्तों को एकीकृत कर दिया है।

❀ ❀ ❀

मैं बरसों से बार-बार यह लिखता और कहता आ रहा हूँ, कि एक दिन, भौतिक विज्ञान स्वयम् अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच कर, सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होता हुआ, अपनी भौतिक सीमा का अतिक्रमण कर जायेगा, और विशुद्ध तत्वज्ञान और आत्मज्ञान होने को बाध्य हो जायेगा। विज्ञान ने भौतिक भोग्य पदार्थ को चरम तक उपलब्ध किया, लेकिन उसके भोक्ता चैतन्य पुरुष का मानसिक और आत्मिक विकास उससे पिछड़ गया। तो पदार्थ पुरुष पर चढ़ बैठा, चेतन अचेतन का दास हो गया। अपनी तमाम भौतिक ताकतों के बावजूद, आदमी उस भौतिकता का प्रभु नहीं गुलाम हो कर रह गया। 'सब्जेक्ट' और 'आब्जेक्ट' का तारतम्य टूट गया। हमारा वैज्ञानिक युग आज सत्यानाश के किनारे खड़ा है।

ऐसे वक्त सर्वत्र ही ऐसे ज्ञाता-द्रष्टा चिन्तक उदय में आ रहे हैं, जो मनुष्य की जाति को, अस्तित्व मात्र को, इस सर्वनाश से उबारने के

लिए एक बुनियादी ज्ञानात्मक संघर्ष कर रहे है, पारगामी चिन्तन-दर्शन प्रस्तुत कर रहे हैं। यह परम्परा स्वयं विज्ञान के क्षेत्र मे सब से पहले उदय होती दिखायी पड़ी है।

आधुनिक विश्व का सर्वोपरि विज्ञान-ऋषि अल्बर्ट आइन्स्टाइन, भौतिक के सीमान्तों को अतिक्रमण कर, सूक्ष्म और विराट् महा सत्ता या अनन्त-असीम भगवान के साक्षात्कार तक पहुँचा था। मैक्स प्लांक, जेम्स् जीन्स, ओलीवर लॉज, सर आर्थर एडिंग्टन, शुद्ध विज्ञान क्षेत्र मे ऐसे ही अतिक्रान्तिकारी दृष्टाओं के रूप में उठे। उन्होने अपनी प्रयोगशालाओं में इन्द्रियातीत सूक्ष्म सत्ता और शून्य ब्रह्म तक को ठीक विज्ञानिक सत्य के रूप मे प्रत्यक्ष साक्षात् किया। अपने उस अनुभव को ठीक विज्ञान की तकनीकी भाषा मे अतिशुद्ध दस्तावेज़ किया। हमारे नार्लीकर ने आइन्स्टीन की परम्परा को और भी आगे बढ़ाया, वे उसे वेदान्त के और भी अधिक करीब ले आये।

विज्ञान से बाहर के ज्ञान-क्षेत्रो में भी, हमारी शताब्दि मे, ऐसे कई काल-भेदी चिन्तक और दार्शनिक आये, जिन्होंने अठारहवी और उन्नीसवी सदी के एकान्त वैज्ञानिक भौतिकवाद के सीमान्तों को तोड़ा। इन्द्रियेतर, अतीन्द्रिय, सूक्ष्ममनस्, अन्तश्चेतन और अतिचैतन को उन्होने अपने अनुसन्धान और चिन्तन का विषय बनाया। सारा आधुनिक मनोविज्ञान अन्ततः आज अन्तश्चेतन और आत्म के क्षेत्र में अन्वेषण कर रहा है। रॉकफेलर के सर्व-विज्ञान धुरन्धर डॉ० एलेक्सी केरल और डॉ० लिकाम्ण्टे ड्युनाय ने ठीक प्राकृतिक विज्ञानो की जमीन पर ही भौतिक-विज्ञान को आत्मज्ञान की अनन्त विकास-सम्भावनाओ के साथ जोड़ दिया। प्रख्यात दृष्टा-साहित्यकार एच० जी० वेल्स तथा एल्डुस हक्सले ने भौतिक और आत्मिक के संयोजन द्वारा पृथ्वी पर देवो का स्वर्ग उतरने का सपना देखा। हमारे यहाँ श्री अरविन्द ने भौतिक विज्ञान को पूर्ण स्वीकृति देकर, एक भौतिक पूर्णत्व से मण्डित विश्व में भगवान के दिव्य ऐश्वर्य को उतार लाने का विजन प्रस्तुत किया।

मुनिश्री अमरेन्द्रविजयजी में भी अपने युग और उसके पार तक देखने की एक दूरगामी दृष्टि है। वे विद्वान और चिन्तक तो उत्तम कोटी के है ही, लेकिन उससे भी अधिक वे एक तल्लीन और एकान्त-विहारी आत्म-साधक है, आत्मयोगी है। सिद्धसेन दिवाकर, हरिभद्र-सूरि, आबू के सिद्ध पुरुष आनन्दघनजी और योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी की प्रगतिमान परम्परा के वर्तमान मे वे एक अग्रणी संवाहक हैं। उन्होने 'विज्ञान और अध्यात्म' अपनी सत्य-खोज की अनिवार्य भीतरी पुकार मे से लिखा है। अपनी एक अत्यन्त निजी आध्यात्मिक जरूरत में से उन्होने यह कृति प्रस्तुत की है।

इस ग्रन्थ में समाहित उपादान नये नहीं हैं। सभी अध्यात्म-खोजी, विज्ञान के अध्येता प्राय: इनसे परिचित होते हैं। लेकिन मुनिश्री अमरेन्द्रविजयजी ने उस उपादान-सामग्री को अधिकतम और अप-टू-डेट एकत्रित किया है और फिर सम्भाव्य और अनिवार्य ज्ञान-विषयो के सन्दर्भ मे उसका जो गहरा अन्वेषणात्मक विनियोजन और मौलिक विवेचन किया है, वह अपने आप मे एक अनन्य उपलब्धि है।

मेरा तो विनम्र सुझाव है कि इस किताब को हजारो मे छपवा कर, इस युग के प्रबुद्ध जनो और जिज्ञासु युवा-पीढ़ी के बीच नि:शुल्क वितरित कर देना चाहिए। इस पुस्तक का शैक्षणिक मूल्य इतना अधिक है कि इसे तमाम भारतीय विश्वविद्यालयो के पाठ्यक्रम मे एक अनिवार्य 'अध्यात्म विज्ञान' विषय के रूप मे पढ़ाया जाना चाहिये।

मैंने आज से पच्चीस वर्ष पूर्व एक कविता लिखी थी: 'कल रुपया मर जायेगा।' आज आप देख ही रहे है, कि रुपया अपनी मौत मर रहा है। विश्वव्यापी मुद्रा-स्फीति इसका ज्वलन्त प्रमाण है। और उसी कविता मे मैंने एक और भी बात कही थी:

आज का भौतिक विज्ञान,
बनने जा रहा है, कल ज्योति-विज्ञान!
क्योंकि कल आदमी बदल देगा,

भौतिक को आत्मिक में, अचेतन को चेतन में :
क्योंकि कल मनुज को सत्ता का भेद मिल जायेगा ।

❀ ❀ ❀

मैं भौतिक का आत्मीकरण और
आत्मिक का भौतीकरण किया चाहता हूँ ।
मैं इन्द्रियों के प्रत्यक्ष भोग मे ही,
भगवान की भूमा का आस्वाद पाना चाहता हूँ ।

आप इन वक्तव्यो का कोई जैन दार्शनिक अर्थ न लगाये । यह एक कवि का मुक्त भविष्य-दर्शन है । लेकिन यह आज के मनुष्य की अभीप्सा है । इसका उत्तर देना पड़ेगा । इसी का उत्तर देने के लिए मैंने आजीवन आत्मसाधना की है और अपना तमाम साहित्य लिखा है । अपने तरीके से, अपने ही क्षेत्र मे, इसी का उत्तर देने के लिये श्रद्धेय मुनिश्री अमरेन्द्र विजयजी ने 'विज्ञान और अध्यात्म' लिखा है । उन्हे अपने एक सहधर्मी और सहयात्री गुरुजन के रूप मे पाकर, मेरे आनन्द की सीमा नही है ।

श्री माँ शती वर्ष : वीरेन्द्रकुमार जैन
२८ मई, १९७८
गोविन्द निवास, सरोजिनी रोड,
विले पारले (पश्चिम),
बम्बई ५६.

परिचय

[गुजराती आवृत्ति के आमुख से उद्धृत]

❀

.... आत्मा, पुनर्जन्म, परलोक और कर्म जैसी धर्मश्रद्धा की मूलभूत बातों के बारे में आज के मानव की जिज्ञासा को वैज्ञानिक संशोधनों के प्रकाश द्वारा सन्तुष्ट करने का सफल प्रयास करके पूज्य मुनिश्री ने यहाँ विज्ञान और अध्यात्म को निकट ला दिये है।

... स्थल एवं काल की मर्यादा हटा देने वाली टेलीफोन, वायरलेस, रेडियो, टेलिविज़न जैसी खोजें तो हमारे दैनन्दिन जीवन व्यवहार मे इतनी अधिक ओतप्रोत हो गई है कि आज का मानव विज्ञान को ही अन्तिम सत्य मानने लगा है। जनसाधारण की जहाँ यह स्थिति हो वहाँ विज्ञान की बोलवाला वाले वातावरण में पला-पोसा आज का युवा सिर्फ जो आँखों से दिखाई पडे, प्रत्यक्ष अनुभवगम्य हो और वैज्ञानिक पद्धति से सिद्ध हो उसी को वास्तविक माने यह स्वाभाविक है। नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यो मे उसे विश्वास नही रहा। ... ..इस पीढी को धर्म के सिद्धान्तो का उपदेश देना केवल निरर्थक शक्ति व्यय है, समय व्यय है। तब इसमें से मार्ग कैसे करना ? इस प्रश्न का प्रत्युत्तर विद्वान् मुनिश्री की यह छोटी-सी पुस्तक देती है। युवक, युवति अथवा प्रौढ जो कोई पढ़ेगा उसके मन को छूने वाला, लड़खडाती श्रद्धा को दृढ़ बनाने वाला यह निरूपण है।

अध्यात्म को 'हम्बक' कहने वाला वर्ग भी इस पुस्तक को मनन पूर्वक पढ़ने के बाद, धर्म की शरण मे आयेगा।

'हमारा प्राणप्रश्न' लेख मे पूज्य मुनिश्री ने वैज्ञानिको और आध्यात्मिकों के वीच समान भूमिका कहाँ और किस तरह है यह स्पष्ट वताया है। निरर्थक विवाद मे समय न गँवाते हुए वे कहते हैं, "हमारे अनन्त प्रवास की पश्चाद्भू मे हमारा वर्तमान जीवन किस तरह विताना श्रेयस्कर है ? इस प्राण प्रश्न को सुलझाने मे अपनी सर्व शक्ति लगानी चाहिये।"

" शिक्षा के क्षेत्र से सम्वद्ध मेरे जैसे व्यक्ति को लगता है कि इनका यह ज्ञान कॉलेज व हाई स्कूल के उच्च कक्षा के विद्यार्थियों को यदि मिले तो वहुत अच्छा परिणाम आएगा। विज्ञान के ऊपर आस्था रखने वाली नई पीढी मे इस पुस्तक का हो सके उतना अधिक प्रसार किया जाय यह अपनी आध्यात्मिक संस्कृति की रक्षा के लिए अतीव वाञ्छनीय है। "

धर्मसिद्धान्तो मे विश्वास न रखने वाले व्यक्तियो को भी इसका वाचन जीवन मे नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यो की आवश्यकता के वारे मे नये सिरे से विचार करने के लिये प्रेरित करेगा।

जेठालाल सी० शाह
अध्यक्ष, प्रकाश विद्याभवन, अहमदावाद

★

ोरे मन की बात

(प्रथम संस्करण के निवेदन का संक्षेप)

जुलाई, १९६९ मे समाचार प्राप्त हुए कि मानव ने चन्द्र के धरातल पर पदार्पण किया है। इसके कुछ दिनो पश्चात् समाचार-पत्रों मे वड़े-वडे अक्षरो मे शीर्षक छपे कि चन्द्र पर दूसरा सफल अभियान करके मानव वहाँ की मिट्टी लाया है। इन समाचारो ने धार्मिक क्षेत्र मे अच्छी खासी खलवली मचा दी। श्रद्धालु समझे जाने वाले वर्ग मे भी एक प्रश्न उठने लगा कि कौन सच्चा विज्ञान या धर्मशास्त्र ? भाविको की श्रद्धा टिकाये रखने के लिए धार्मिक क्षेत्रों में इसका ऐसा स्पष्टीकरण दिया जाने लगा कि 'चन्द्र पर पहुँचने की बात तो वैज्ञानिको द्वारा उड़ाई गई एक गप्प मात्र है।' परन्तु बुद्धि-जीवियो के गले यह बात उतर नही सकती।

प्रौढो की धर्मश्रद्धा भी इस प्रकार डाँवाडोल हो उठी हो तब नई पीढी की तो बात ही क्या ? युवावर्ग में तो आध्यात्मिक मान्यताओ को वक्र दृष्टि से देख गौरव माननेवालो की श्रेणी सदा रही है। और आज तो एक ऐसा वर्ग खड़ा हो रहा है, जो आध्यात्मिक तथ्यो के प्रति कुछ आदरभाव और जिज्ञासावृत्ति रखता है, फिर भी विज्ञान की उपलब्धियो से चौंधियाकर आध्यात्मिक तथ्यो पर विश्वास करने से हिचकिचाता है। युवक-युवतियों मे एक ऐसा वर्ग भी देखा जाता है, जिसे स्वय तो आध्यात्मिक जगत के ज्योतिर्धरों के वचनो मे श्रद्धा है, परन्तु स्कूल-कॉलेजो के आज के वातावरण मे वे अपनी यह श्रद्धा व्यक्त करने मे संकोच का अनुभव करते हैं। इतना ही नही, मित्रवर्ग से अलग न पड़ जायँ इसलिए उनकी बात मे स्वयं भी हामी भरते हैं। इस परिस्थिति मे, आज की पीढ़ी को और नई पीढ़ी को भी आध्यात्मिक तथ्यो का यथार्थ मूल्याकन करने की सही दृष्टि उपलब्ध हो इस दिशा मे अंगुलिनिर्देश करने की आवश्यकता मैं महसूस कर रहा था।

एक अनपेक्षित घटना ने भीतर उमडते इस विचार को मूर्त स्वरूप प्रदान कराया। फलतः 'विज्ञान अने अध्यात्म' शीर्षक एक गुजराती पुस्तक भी तैयार हुई।

पुस्तक को गुजरात पाठकों मे बहुत अच्छा आदर मिला। परिणामस्वरूप दश महीनो की अल्पावधि में इसके दो संस्करण प्रकाशित हुए। इतना ही नही, कई पाठकों ने तो भारपूर्वक सुझाव दिया कि यह पुस्तक नई एव वर्तमान पीढी के जैन-जैनेतर सब के लिए एकसी उपयोगी होने से अन्य भाषा भाषी पाठको को भी यह सुलभ बने इस हेतु विविध भाषाओं मे इस पुस्तक के अनुवाद प्रकाशित होने चाहिए।

हिन्दी राष्ट्रभाषा होने से उसके माध्यम द्वारा विशाल वाचक-वर्ग इसका आस्वाद ले सकेगा इस दृष्टि से प्रथम पसन्दगी हिन्दी अनुवाद की की गई, और अनुवाद में मूल की प्रसन्नता एवं निरूपण की स्पष्टता यथावत् रहे इस दृष्टि से, श्री शान्तिलालजी म० जैन (प्राध्यापक, एल. डी. आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद) को यह कार्य सौंपा गया। इस बीच, गुजराती पुस्तक के पाठको में से भी कतिपय लोगों ने, स्वयं हिन्दी अनुवाद करने की अपनी तत्परता प्रदर्शित की और इसके लिए मेरी सम्मति मांगी। उनमें से एक थे श्री चाँदमलजी सीपाणी, अजमेर। प्राध्यापक शान्तिभाई का किया हुआ अनुवाद तैयार था ही। वह मैंने उनको दिया। उसे देखकर श्री सीपाणीजी ने उसे श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, अजमेर की ओर से प्रकाशित करने की अपनी इच्छा प्रकट की और एतदर्थ मेरी अनुमति मांगी। और उसके मुद्रण-प्रकाशन की सारी जिम्मेवारी उन्होने स्वयं अपने कन्धे पर उठा ली। फलस्वरूप यह पुस्तक आज आपके हाथो मे है। मुझे आशा है, गुजराती की भाँति हिन्दी में भी यह लोकादर प्राप्त करेगी।

यहाँ मुख्यतः नई पीढी को दृष्टि समक्ष रखकर, उसे कुछ सहायभूत होने के उद्देश्य से थोड़ी सी बातें मैंने की हैं। इससे यह स्वाभाविक है कि आत्मा आदि के बारे मे, वैज्ञानिक स्तर पर,

विस्तृत एवं गहरी समीक्षा की अथवा आत्म-साधना के गहन रहस्यो की विवेचना की यहाँ जिन्होंने अपेक्षा रखी हो उनकी वह अपेक्षा यह पुस्तक पूरी न कर सके। आध्यात्मिक मूल्यों मे जिन्हे श्रद्धा है उन्हे भी, ऊपर-ऊपर से देखने पर यह पुस्तक शायद उपयोगी प्रतीत न हो। 'ऊपर-ऊपर' से इसलिए कहता हूँ कि विज्ञान भी ज्ञानियो के वचनो की पुष्टि कर रहा है यह जानकारी उन श्रद्धा-सम्पन्नो को भी रसदायी लगी है; इतना ही नही, उनमे से वहुतों ने तो इसके वाचन से उनकी अपनी श्रद्धा दृढ़तर होने का निजी अनुभव मेरे आगे अत्यन्त प्रमोद, आश्चर्य एवं आनन्द के साथ प्रगट भी किया है। फिर भी, सम्भव है कि प्रथम दृष्टि में उस वर्ग को अपने लिए यह पुस्तक उपयोगी प्रतीत न हो, परन्तु मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक के परिशीलन से नई पीढ़ी का धर्मश्रद्धारहित परन्तु मध्यस्थ दृष्टि से विचार करने वाला वर्ग आध्यात्मिक तथ्यों का यथार्थ मूल्यांकन करने की दृष्टि प्राप्त कर सकेगा, श्रद्धालु युवक वर्ग अपना श्रद्धादीप अधिक सतेज कर धन्यता का अनुभव करेगा और अपनी यह श्रद्धा अपने मित्र वर्ग मे गौरवपूर्वक व्यक्त करने का आत्मविश्वास भी प्राप्त करेगा।

अमरेन्द्रविजय

★

अपनी बात

श्री जिनदत्तसूरि मण्डल द्वारा सचालित श्री जिनदत्तसूरि ज्ञान-माला का अठारहवाँ पुष्प (दूसरी आवृत्ति) आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

प्रस्तुत 'विज्ञान और अध्यात्म' एक विद्वत्तापूर्ण सामयिक पुस्तक है।

वैज्ञानिक खोजो के प्रकाश में पू० मुनिश्री ने आत्मा, प्राण, पुनर्जन्म, देह व आत्मा का सम्बन्ध, सुख-समृद्धि का मूलस्रोत आदि विषयों पर विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय स्थापित कर, वर्तमान पीढी के लिये अध्यात्म-प्रधान चिन्तन सामग्री उपस्थित करते हुए, एक नया सन्देश दिया है।

पुनर्जन्म के विषय मे डॉ० ईआन स्टीवन्सन (अमेरिका की वर्जिनिया यूनिवर्सिटी मे स्कूल ऑफ मेडीसिन के न्यूरोलोजी और मानस शास्त्र विभाग मे प्राध्यापक) ने, अपने अध्ययन और अवलोकन के प्रकाश मे हाल ही मे दि० २२-१०-७२ को नई दिल्ली में मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज के डॉक्टरो के समक्ष अपने भाषण में स्पष्ट शब्दो मे कहा है कि मेरे बारह सौ परीक्षणो के आधार पर यह दावे से कहा जा सकता है कि पुनर्जन्म के सिद्धान्त को इन्कार नही किया जा सकता।

डॉ० स्टीवन्सन आदि के, पुनर्जन्म के अस्तित्व का समर्थन करने वाले, शोध प्रयोगो पर से यह निष्कर्ष निकलता है कि विज्ञान की शोध और योगबल के आधार पर प्रगट किये गये विश्वसत्य के बीच निकट का सम्बन्ध है। पुर्नजन्म के सिद्धान्त का इस प्रकार वैज्ञानिक अध्ययन-अवलोकन के आधार पर, विशेष समर्थन हो तो केवल विज्ञान पर ही आस्था वाले आज के मानव का विशेष उपकार हो सकेगा।

मुनिराज पू० अमरेन्द्रविजयजी महाराज साहब ने यहाँ ऐसे अनेकानेक शोध प्रयोगो विषयक प्रचुर मात्रा मे सन्दर्भ देकर तथा गहरा विवेचन कर पुस्तक को युवा पीढी के लिए तो बहुत ही उपयोगी बना दी है। इसी प्रकार हमारे अन्य विद्वान् मुनिगण भी इस दिशा में साहित्य-सर्जन करने का प्रयत्न करे तो अवश्य ही आज की युवा पीढी को नया मार्ग-दर्शन मिलेगा।

इस अपूर्व पुस्तक को प्रकाशित करने की आज्ञा पू० मुनिश्री ने इस मण्डल को प्रदान की, अतः हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।

पाठक गण इससे लाभ उठाये, यही मनोकामना है।

प्रथम आवृत्ति
पोष वद १०, सं० २०२६
दि० ३०-१२-७२
द्वितीय आवृत्ति
नवम्बर १, १९७८

चाँदमल सीपाणी
मन्त्री
श्री जिनदत्तसूरि मण्डल,
दादावाड़ी, अजमेर

★

१

आत्मा और 'ई. एस. पी.' संशोधन

आँधी आने से पहले भेडों को टीले के पीछे चले जाने का पूर्व-सूचन कौन करता है? वर्षा की प्रत्येक बौछार से पूर्व आश्रयस्थान ढूंढ लेने की प्रेरणा कछुए को कहाँ से मिलती है? यह अन्तः-प्रेरणा (इन्स्टिंक्ट अथवा 'इन्ट्यूइशन') कैसे पैदा होती है? यह विज्ञान के लिए एक समस्या है, जिसका समाधान पाने के लिए विज्ञान आज मन्थन कर रहा है।

बिना किसी भी प्रकार की पूर्व-विचारणा अथवा तर्क के, अकस्मात् ही होने वाले ज्ञान की ऐसी झलक का अनुभव मानव भी करता है। विशिष्ट परिस्थिति मे किसी-किसी व्यक्ति को बिना किसी भी प्रकार की पूर्व विचारणा के ज्ञान की ऐसी झलक का भास होता है। लुइसा ई. राइन (Louisa E Rhine) ने अपनी पुस्तक 'हिडन चेनल्स ऑफ दि माइण्ड' मे ऐसे अनेकानेक दृष्टान्तों का संग्रह किया है। उनमे से एक-दो दृष्टान्त हम यहाँ देखें।

अतीन्द्रिय ज्ञान की झलक

६ अगस्त, १९४५ के दिन प्रातः नींद मे से जगते ही अमेरिका मे एक मनुष्य ने अपनी पत्नी से कहा कि "तीन महीनो मे बेयोन (Bayonne) मे एक बडे धमाके के साथ दो-तीन लाख गैलन पेट्रोल अथवा गेसोलिन जल उठेगा, बहुतो की जान भी खतरे मे है परन्तु सावधानी बरती जाय तो यह दुखद घटना रुक सकती है।" इससे पहले उसने कभी बेयोन का नाम तक नही सुना था, बेयोन कहाँ है

उसकी भी खबर उसे नही थी। उनके पुत्र से उन्हे ज्ञात हुआ कि बेयोन न्युजर्सी (अमेरिका) मे है और वहाँ स्टेण्डर्ड ऑइल कम्पनी की रिफायनरी है। रिफायनरी के व्यवस्थापको को इसकी सूचना दी गई। उन्होने इस पूर्व-सूचन के लिए आभार माना; परन्तु न मालूम सावधानी के लिए योग्य कदम उठाये या नही, छ नवम्बर के दिन, यह भविष्यवाणी सत्य हुई और दुर्घटना घटी।

दूसरे एक उदाहरण मे एक स्त्री अपने अनुभव का वर्णन करती हुई कहती है कि 'उस समय मैं सत्रह वर्ष की थी। मेरी बड़ी बहन का विवाह एक अच्छे सगीतकार के साथ हुआ था, दोनो एक दूसरे से प्रेम करते थे और सुखी थे। एक दिन रात के समय मुझे स्वप्न आया कि मेरे बहनोई किसी लड़के की बन्दूक से अचानक निकली गोली से घायल होकर नीचे गिर पड़े है। अत्यधिक रक्त बह जाने से डॉक्टर के आने से पहले उसी स्थान पर उनके प्राण निकल गये। स्वप्न मे इसके बाद मैंने देखा कि मैं सो रही थी और मेरी माता की चीख सुनकर जग गई। मैं नीचे दौड़ी। मेरी माता हाथ मे तार के साथ मुझे दरवाजे मे मिली। उस तार मे उपर्युक्त दुखदायी घटना के समाचार थे। इस स्वप्न ने मुझे बेहद बेचैन बना दिया। मैंने अपनी बहन को पत्र लिखकर स्वप्न की बात बताई। शनीवार को उन्हे पत्र मिला तब उन्होने यह बात हँसकर टाल दी। परन्तु सोमवार को सुबह मेरे बहनोई का, मैंने स्वप्न मे देखा था ठीक वैसे, बन्दूक की गोली से घायल होकर, निधन हो गया; और उनका तार हमे मिला वह भी स्वप्न मे देखा था ठीक उसी परिस्थिति मे।

योगसाधना द्वारा 'दिव्य दृष्टि'

सामान्य मनुष्य कभी-कभी इस ज्ञान की झलक पा लेता है, परन्तु उस पर उसका अधिकार नही होता। दृष्टिमर्यादा से परे आये हुए स्थानो मे वर्तमान मे घटित घटनाओ के दर्शन अथवा भविष्य मे साकार होने वाले प्रसगो का ज्ञान उसे अपनी इच्छानुसार नही हो पाता, परन्तु योगसाधना द्वारा चित्त की शुद्धि एव स्थिरता बढने पर विशिष्ट योगसाधको को यह ज्ञान हस्तगत होता है, और वे

इसका उपयोग अपनी इच्छानुसार कर सकते है। जिस प्रकार टॉर्च का प्रकाश हम चाहे वहाँ फेक सकते है, उसी प्रकार योगी ज्ञान की टॉर्च इच्छित स्थल एव काल पर फेक सकता है। उसके ज्ञान को देश-काल का बन्धन नही रहता। सैकडो और हजारो मील दूर घटित घटनाओ को वह अपने स्थान पर बैठे बैठे ही प्रत्यक्ष देख सकता है। भूत-भविष्य की घटनाओ मे भी वह अपनी 'दृष्टि' डाल सकता है और सम्मुखवर्ती व्यक्ति के मनोगत विचार जान लेने की क्षमता भी रखता है।

शास्त्रो मे तथा आध्यात्मिक साधको के जीवन-चरित्रो मे ऐसे असख्य उल्लेख उपलब्ध है। हमारे अपने समकालीनो मे भी ऐसे अनेक व्यक्ति मौजूद है, जिन्होने ऐसी कुछ शक्तियाँ पाई हो¹। सच्चे साधक अपनी ऐसी शक्तियो का पता तक चलने नही देते, परन्तु उनके सम्पर्क में आने वाले को इसका परिचय कभी किसी मौके पर मिल जाता है। इसके दो-एक उदाहरण हम यहाँ देखे।

लन्दन मे पुरानी पुस्तको की एक दूकान पर राफेल हर्स्ट नामक एक अग्रेज पत्रकार को एक अज्ञात व्यक्ति से पहचान होती है। दिन बीतते गये और यह परिचय गाढ सम्बन्ध मे परिणत हो गया। एक दिन उस भारतीय मित्र ने अग्रेज से कहा, "एक दिन तुम भारत जाओगे और सच्चे योगियो की खोज मे सारे देश मे घूमो फिरोगे। अन्त मे तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण होगी" यह भविष्यवाणी सुनकर आश्चर्यान्वित हुए उस अग्रेज ने पूछा, "तुमने यह कैसे जाना ?" "हमारे प्रथम परिचय के समय ही मैंने यह जान लिया था। मुझे इसकी अन्त स्फुरणा हुई थी। अन्त स्फुरणा की शक्ति कैसे प्राप्त की जाय यह मुझे अपने गुरु ने सिखलाया है। और अब मैं उस पर पूरा भरोसा रखकर काम करता हूँ।

१ देखो Yogic Powers and God-Realization, (pp 162-95), by V M Bhatt, (Bhartiya Vidya Bhavan, Chaupatty, Bombay-7).

समय बीतने पर यह बात सच सिद्ध हुई। वह सफल पत्रकार अपने उज्जवल केरियर कारकिर्दी को तिलाजलि देकर भारत के साधु-सन्त एव योगियो के समागम के लिये भारत के कौने-कौने मे घूमा फिरा। उसने जन-सम्पर्क से दूर रहने वाले कितने ही योगियो और सन्तो की खोज कर उनका परिचय प्राप्त किया। उस समय भी उसे अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति के ऐसे अनुभव बार-बार हुए थे। उदाहरणार्थ कुम्भकोणम् के शकराचार्य के साथ की मुलाकात के अन्त मे उन्होने उस अग्रेज के मित्र के कान मे कहा कि, "तुम्हारा मित्र समग्र भारत मे प्रवास करेगा, अनेक योगियो से मिलेगा और अनेक गुरुओ का उपदेश सुनेगा। परन्तु अन्ततः उसे महर्षि (श्री रमण महर्षि) के पास वापस आना पड़ेगा। उसके लिये एकमात्र महर्षि ही योग्य गुरु हैं।"[२] और अन्त मे हुआ भी वैसा ही। बड़ी रखड़पट्टी के बाद उस अँग्रेज ने श्री रमण महर्षि के चरणों मे आश्रय लिया और उनके पास आत्मविचार एवं ध्यान की 'दीक्षा' ली।[3]

दूर दर्शन की प्रतीति

पूना निवासी श्री मीटकर में भी दूरदर्शन आदि ऐसी अतीन्द्रिय शक्तियाँ पाई गई हैं। पौरस्त्य एवं पाश्चात्य पत्रकारो

२. Dr Paul Brunton : A Search In Secret India, pp. 23-31 and 276, (Rider & Co).

३ राफेल हर्स्ट ने अपनी भारत यात्रा का रोचक वर्णन 'पॉल ब्रण्टन' के उपनाम से उपर्युक्त पुस्तक मे किया है। इस पुस्तक से श्री रमण महर्षि और लेखक को इतनी अधिक प्रसिद्धि मिली कि तब से श्री रमणाश्रम (तिरुवन्नमलई) की ओर विदेशी जिज्ञासुओ का अस्खलित प्रवाह बहना शुरु हो गया। और लेखक अब इसी उपनाम से ही प्रसिद्ध है। कुछ साल पहले इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हुआ है। उसका नाम है 'प्राचीन भारत की खोज'। गुजराती भाषा मे भी चार छः साल पहले इसका अनुवाद प्रकाशित हो चुका है।

ने भी इसकी जाँच पड़ताल करके इसका समर्थन किया है। (देखो : न्यूयॉर्क जर्नल, १० मार्च, १९४६). उनकी इन शक्तियों का निर्देश करते हुए 'योगिक पावर्स एण्ड गॉड रीअलाइजेशन' के लेखक श्री वी. एम. भट्ट लिखते है कि

"मैंने उनके बारे मे सर्व प्रथम जगन्नाथपुरी के श्री शकराचार्य से सुना। उस समय मैं येवला मे था और मीटकर पूना मे थे। इससे मैंने अपने मित्र प्रो. एन. जी. दामले एम. ए. (पूना मे दर्शन-शास्त्र के अध्यापक) को पत्र लिखकर निवेदन किया कि वे श्री मीटकर से मिलकर उनकी शक्तियों के बारे मे जाँच करे। श्री करमारकर और श्री बक्षी को साथ लेकर प्रो. दामले श्री मीटकर से मिले और उनकी शक्तियों का परिचय प्राप्त करने की अपनी इच्छा प्रगट की। मुधोल मे स्थित श्री बक्षी के घर का, उसके समीप आये छोटे मकानो का, उनमे रहे हुए माल-सामान का और उसके आसपास के प्रदेश का यथावत वर्णन करके श्री मीटकर ने उन्हे आश्चर्य मे डाल दिया, क्योंकि मीटकर ने अपनी सारी जिन्दगी मे वह प्रदेश देखा ही नही था। इसके अतिरिक्त स्व. डॉ. आर. डी. रानडे और अन्य मित्रों के साथ प्रो दामले ने कहा और कब फोटो खिचवाया था उसका वर्णन करके श्री मीटकर ने प्रो. दामले को सम्पूर्ण सन्तोष दिया। उन्होंने यह भी बताया कि उनमे से एक मित्र के पैर पर सफेद दाग था। श्री करमारकर के एक सम्बन्धी बम्बई मे एक अग्रगण्य डॉक्टर हैं और वह वहा के एक बडे अस्पताल मे काम करते हैं। वहा उन्होंने हाल ही मे एक ऑपरेशन मे नई ही पद्धति अपनाई थी। श्री मीटकर पूना मे ही थे, फिर भी उनसे उस ऑपरेशन का, रोगी की स्थिति का, रोगी के पलग का और ऑपरेशन मे अपनाई गई अभिनव पद्धति का शुरू से अन्त तक का सम्पूर्ण वर्णन सुनकर डॉ करमारकर तो उनके दूरदर्शन की ऐसी अद्‌भुत शक्ति से आश्चर्य मे पड़ गये। श्री मीटकर ने यह भी कहा कि स्वय डॉक्टर के हाथ की हड्डी टूट गई थी और धातु की पट्टी से जोडी गई है।

मेरा अपना अनुभव :

'श्री मीटकर की शक्ति की परीक्षा करने के लिये एक बार

मैने अपने मित्र के घर पर उन्हे आमन्त्रित किया। मैने उनसे पूछा कि निकटवर्ती भविष्य मे मुझे गुरु की भेट और आशीर्वाद प्राप्त होगे या नही? तनिक रुक कर उन्होने कहा कि गुरु का आशीर्वाद मुझे नासिक मे मिल चुका है। विशेष मे, नासिक मे श्री गजानन महाराज गुप्ते का आशीर्वाद मुझे प्राप्त हुआ उस प्रसग का उन्होने यथावत वर्णन किया, फलत. उस प्रसग की और उस अवसर पर मेरे मन मे जगे भावो की स्मृति ताजा हो गई, यद्यपि उस समय मैंने उसे अधिक महत्त्व नही दिया था।

"एसोशियेटेड प्रेस ऑफ अमेरिका' वाले श्री एस. जी. सतुरामन और 'नेशनल हेरल्ड', लखनऊ के श्री रामराव श्री मीटकर से पहली ही बार मिले तब श्री मीटकर ने रामराव के वर्धा, लखनऊ और कानपुर के घरो का सूक्ष्म ब्योरेवार वर्णन करके उनको आश्चर्य मे डाल दिया। रामराव को उनकी अतीन्द्रिय शक्ति की प्रतीति हो गई। मीटकर ने सतुरामन के बम्बई के घर का वर्णन किया और उस समय उनके घर मे कौन-कौन बैठे है यह भी बताया। बम्बई पहुँच कर तलाश करने पर उनकी बात सम्पूर्णतः सत्य ज्ञात हुई।"

श्री मीटकर लाइफ इन्शोरेन्स कार्पोरेशन मे एक अफसर हैं, पूना मे रहते हैं। नाम एम. वी. मीटकर है, परन्तु मित्रमण्डल मे 'बापू साहब मीटकर' के नाम से प्रसिद्ध है।

'त्रिकुटी भेद' से प्राप्त सहज ज्ञान

योगियो की अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति का एक और दृष्टान्त हम देखे। एक स्टेशन मास्टर की दस साल की लडकी की सर्पदश से मृत्यु हुई। श्री मकरन्द दवे की उपस्थिति मे वह स्टेशन मास्टर एक योगी के पास आता है, तब उस भाई का दु:ख कम करने की दृष्टि से उस योगी ने मृत लडकी के सर्पदश की पूर्व भूमिका का तादृश चित्र उपस्थित कर सर्व प्रथम अपने ज्ञान की यथार्थता की प्रतीति लड़की के पिता को कराई। उसके पश्चात् उस लड़की के गत जन्म का वृतान्त कहकर, उसके भावी जन्म का भी भविष्य कथन किया, जो समय बीतने पर अक्षरश: यथार्थ सिद्ध हुआ। इसका रोचक

वर्णन श्री मकरन्द दवे ने 'योगी हरनाथ के सानिध्य मे' नामक अपनी पुस्तक मे (पृ. ३७-४१) किया है। यह योगी अपनी शक्ति का रहस्य स्फोट करते हुए कहते हैं कि 'गुरु महाराज की कृपा से त्रिकुटी भेद हुआ तब तीन वस्तुएँ एक साथ मिली : स्वतन्त्रता, स्वानन्द और सहजज्ञान... . किसी भी वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करने पर उसके रहस्य का मुझे अनायास ज्ञान प्रकट होने लगा। किसी व्यक्ति को देखूँ तो उसका जीवन मेरे सामने खुल जाता है, किसी चीज को देखूँ तो उसका इतिहास ज्ञात हो जाता है। किसी वनस्पति को देखूँ तो उसके गुण धर्म अन्तर मे प्रकट होने लगते हैं।'[४]

४ मकरन्द दवे : 'योगी हरनाथना सान्निध्यमां,' पृ २३, ३० (वोरा एण्ड कम्पनी, बम्बई ३)

ऐसी अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति के लिए जैन परिभाषा मे अवधिज्ञान, विभंगज्ञान और मन पर्यवज्ञान शब्द प्रचलित है। विभग अथवा अवधिज्ञान के द्वारा किसी भी वस्तु का ज्ञान विना किसी देश एव काल के बन्धन से हो सकता है। मन पर्यव ज्ञान से दूसरो के मन के विचार जाने जा सकते है। ऐसा उल्लेख मिलता है कि भगवान् महावीर के शिष्यो मे से तेरह सौ मुनियो को अवधिज्ञान और पाँच सौ को मन पर्यवज्ञान प्राप्त हुआ था। वर्तमान समय मे जैन साधकवर्ग मे ऐसी अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति का प्रादुर्भाव किसी को शायद ही होता है। तटस्थ एव सत्यशोधक मनोवृत्ति से अपनी साधना का अन्वेषण कर जैन साधको को इसके कारण का पता लगाना चाहिये।

उच्च आध्यात्मिक भूमिकाओ का स्पर्श जिनके द्वारा सम्भव होता है उन चित्तशुद्धि, चित्तस्थैर्य और ध्यान जैसे साधना के महत्वपूर्ण अगो पर आवश्यक भार देने के बदले बाह्य क्रियाकाण्ड पर और उसमे भी गुण की अपेक्षा उसके परिमाण पर ही विशेष भार तथा ध्यानाभ्यास के प्रति नितान्त उपेक्षा का तो यह परिणाम नही होगा? (लेखक कृत 'आत्मज्ञान और साधनापथ' का परिशीलन जिज्ञासुओ को इस अन्वेषण मे सहायक होगा।)

ई. एस. पी. संशोधन

साधारण मनुष्यो को भी यदा कदा ऐसे प्रातिभ ज्ञान की स्फुरणा के छुटपुट अनुभव होने पर भी, सामान्यत पश्चिम मे ऐसी बातो का पहले मजाक उड़ाया जाता था। फलत. लोग अपने अनुभव कहने में हिचकिचाते थे। परन्तु इस दिशा में वैज्ञानिक स्तर पर सशोधन का प्रारंभ होने से अब परिस्थिति बदल गई है। लगभग चालीस साल पहले अमेरिका मे ड्यूक युनिवर्सिटी के तत्वावधान में ड्यूक पेरासाइकोलॉजी लेबोरेटरी मे श्री जे बी. राइन ने यह कार्य हाथ मे लिया। उसके बाद तो अनेक स्थानों पर यह कार्य आगे बढ़ रहा है। और इस विषय मे किये जा रहे प्रयोगों एवं उनके परिणामो का निरूपण करने वाला काफी साहित्य अब उपलब्ध है।[५]

यह ज्ञान बिना किसी भी इन्द्रिय की सहायता के होता है, इससे इस शक्ति को आधुनिक परामनोविज्ञान ने नाम दिया है: 'एकस्ट्रा सेन्सरी पर्सेप्शन ई.एस.पी.'। अंग्रेजी मे सामान्यत: इसके लिए 'क्लेरवॉइन्स,' 'टेलीपैथी' और 'इन्ट्यूइशन' शब्द प्रचलित हैं।

इस ज्ञान के बारे मे चल रहे अन्वेषणो ने यह बता दिया है कि मनुष्य, आज तक विज्ञान मानता आया है वैसा, मात्र भौतिक तत्वों का पुतला नही है। इन सशोधनों के प्रमुख संचालक श्री जे बी. राइन लिखते है कि "मानव अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति रखता है यह अब

५ इनमे से कुछ ग्रन्थो के नाम हैं :

(i) The Reach of the Mind : J. B Rhine, (Faber & Faber, 1948).

(ii) New World of the Mind : J B Rhine, (Faber & Faber, 1954)

(iii) The Imprisioned Splendour Raynor Johnson, (Harper & Row, 1953)

(iv) Challenge of Psychical Research Gardner Murphy, (Hamish Hamilton, 1961)

एक निर्विवाद वास्तविकता है... .... इस विषय मे निरन्तर अन्वेषण हो रहे हैं, और कई शोध हुए हैं, जो क्रान्तिकारी है। क्रान्तिकारक इसलिए कि नई शोध का स्वीकार एकदम नही होता, क्योंकि वे पुरानी रूढ मान्यताओ और सिद्धान्तो को झकझोरते हैं। मनुष्य मे रही अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति के प्रमाणो के बारे मे भी कुछ ऐसा ही है; वे वर्तमान विज्ञानमान्य, मनुष्य विषयक सिद्धान्त जो मनुष्य को मात्र भौतिक तत्त्वो का बना मानता है—के विरुद्ध जाते है। अतीन्द्रिय ज्ञान विषयक तथ्य मानव मात्र भौतिक तत्त्वों का बना है इस सिद्धान्त के साथ मेल नही खाते"[६]

ई एस पी के अतिरिक्त अन्य अनेक प्रकारो से भी यह सशोधन हो रहा है। इसमें अपने स्थूल शरीर मे से निकलकर सूक्ष्म

६ Now the occurrence of ESP (extra sensory perception) has been shown to be a fact .... Research in ESP has been going on steadily, especially so over the last twenty-five years, and inspite of the many difficulties and the small number of workers, some discoveries have been made that are revolutionary Why are they revolutionary ? Because .. . discoveries, if really new, are not readily accepted, they upset too many old habits and theories The evidence for ESP does just that As Arthur Koestler explains in "The Sleepwalkers," ESP runs counter to current scientific theories about man; theories that interpret man in terms of purely physical and chemical (or mechanistic) processes. The facts about ESP do not fit the physical theory of man and those who hold to that theory are likely to reject the disturbing facts at first In time, of course, fact will triumph and any conflicting theory be rejected,

—J. B. Rhine : In his forward to "Hidden Channels of the Mind."

शरीर से अन्यत्र जा-आने की बात का[७] और पुनर्जन्म के सिद्धान्त का भी समावेश होता है।

इन संशोधनों के द्वारा आई क्रान्ति

ये संशोधन जडवादी पाश्चात्य मानस मे भी कितना जबरदस्त परिवर्तन ला रहे हैं। एक अमेरिकन उद्योगपति और बेंकर इन संशोधनो मे दिलचस्पी लेने के पूर्व की अपनी नास्तिक मनोभूमिका का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि, "तब मुझे आश्चर्य होता था कि लोग इतना भी क्यो नही समझते कि मृत्यु जीवन की समस्त लीला का निश्चयात्मक रूप से अन्त लाती है। मृत्यु के पश्चात् जीवन की शक्यता की चर्चा ही क्यो? मृत्यु होने पर सब कुछ समाप्त होता है इसमे किसी भी प्रश्न के लिए अवकाश ही कहाँ है? विज्ञान के प्रयत्नो के बावजूद तीन सदियो मे वह एक भी आत्मा की अमरता सिद्ध नही कर सका है। अत: शून्य मे से कुछ खड़ा करने के ये सब प्रयत्न किस लिए?" यही व्यक्ति परामनोविज्ञान के संशोधनो मे गहरे उतरने के बाद लिखते है कि "परामनोविज्ञान के संशोधनो मे से फलित निष्कर्ष मे से सबसे अधिक महत्त्व की बात यही स्पष्ट होती है कि अन्ततः मानव भौतिक यंत्र मात्र नही है। मानव का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक गत तीन सौ वर्षों से यही मानते आये है कि मानव भौतिक तत्त्वों का खिलौना मात्र है। इस मान्यता से अलग नये प्रमाण, मानव सचमुच क्या है, इसकी सच्ची जानकारी की

७. (i) The Imprisoned Splendour, (pp 218/240) Raynor Johnson, (Harper & Row, 1953).
(ii) The Projection of the Astral Body, Muldoon and Carrington, (Rider, 1929).
(iii) The case for Astral Projection, Muldoon, (Aries Press, 1938)
(iv) Astral Projection, Oliver Fox, (Rider, 1939)
(v) Practical Astral Projection, Yrams, (Rider, 1935)

तरफ जाता एक विराट कदम है। ....परामनोविज्ञान के संशोधन हमें कहाँ ले जायेंगे इसकी तो आज कल्पना करना भी कठिन है। मनुष्य में भौतिक तत्वों से विलक्षण कुछ-कुछ आध्यात्मिक तत्व रहा है, इसका प्रमाण विराट प्रभाव पैदा करेगा। मृत्यु के उपरान्त शरीर का नाश होने पर भी कुछ कायम रहता है इस सत्य का उद्घोष आखिरकार 'लेबोरेटरी'-प्रयोगशाला को करना पड़ेगा। अतीन्द्रिय ज्ञान विषयक संशोधन ने तो ऐसी संभावना की सूचना कभी की कर दी है। और... . याद रखें कि इस नव विज्ञान का यह तो अभी प्रारम्भ ही है।"[८]

८ पहले Why couldn't everyone, I wondered, see . .that death peremptorily ended the whole show ? And why all the argument about the possibility of life after death ? Anyone could plainly see that a dead body was very dead indeed How could anyone seriously believe otherwise ? Three hundred years of science had failed to prove the immortality of a single soul So why try to make something out of nothing ?

बाद में Of all the findings that have emerged from parapsychology research, perhaps the most significant is the fact that man is not, after all, merely a physical machine For three centuries the scientists of human nature have regarded man as nothing more than a physical contraption The new evidence to the contrary is a wonderful step towards learning what man really is

There is no telling how far the parapsychology research will lead us The proof that there is something extra-physical, or, spiritual, in human personality has momentous implications Eventually the *laboratory* will answer even that all time prize-winner among questions Does any part of human being survive the death of the physical body ? Already research in extra sensory perception has indicated, in its freedom from the effects of time and space, the plausibility of some sort of survival And remember that this relatively new science has barely begun

—Morey Bernstein A Search for Bridey Murphy, pp 75 & 256.

'दि फाइन्डिंग ऑफ दि थर्ड आई' में वेरा स्टेन्ली आल्डर ने लिखा है कि "थोडे से संशोधन ने यह संभावना प्रकट की है कि विज्ञान की खोजें और पूर्वकालीन ज्ञानी पुरुषों के वचन एक-दूसरे में समा जायेंगे। इन दोनों में जो अन्तर दीखता है वह मात्र शाब्दिक और निरूपण का ही है।"[१] प्राकृतिक जगत के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त कर उन पर प्रभुत्व स्थापित करती विज्ञान की नित्य-नई खोजों व आविष्कारों से प्रभावित हो आज का शिक्षित मानव आध्यात्मिक जगत से दूर हट रहा है तब उपर्युक्त उद्गार किसी का भी ध्यान आकर्षित करे यह स्वाभाविक है।

आज कल भले ही सामान्य मनुष्य भौतिक विज्ञान की सिद्धियों से चौंधियाता हो और सब विषयों में विज्ञान को ही प्रमाणभूत-ऑथारिटी-मानकर अपने मन्तव्य स्थापित करता हो, परन्तु, स्वयं विज्ञान तो आध्यात्मिक जगत की ओर जिज्ञासा के भाव से देख रहा है और आध्यात्मिक जगत के ज्योतिर्धरों के कथनों को अपनी प्रयोगात्मक शैली से परीक्षण करने के लिए समुत्सुक है। इस जिज्ञासा में से प्रादुर्भूत संशोधन आज विज्ञान-जगत में इस सत्य का उद्घोष कर रहे हैं कि 'शरीर के नाश के पश्चात् भी कुछ अविनश्वर रहता है।'

१ A little research has brought to light the possibility that the discoveries of men of science to-day may coincide with the knowledge of the mystics of all times, with a difference only of presentation and nomenclature

—The Finding of the 'Third Eye,' p. 127

२

चैतन्य क्या रासायनिक प्रक्रियाओं का उत्पादन है ?

अपने संशोधनों के परिणामो का निर्देश करते हुए विज्ञान की एक शाखा आज यह स्वीकार करती है कि मानव देह मे ऐसा कुछ है जो शरीर के विलय के पश्चात् भी कायम रहता है। जीवविज्ञान (बायोलोजी) नाम की उसकी दूसरी एक शाखा कहती है कि शरीर से स्वतंत्र चेतना जैसी कोई वस्तु नही है। अमुक रासायनिक संयोजन द्वारा चेतना प्रकट होती है और शरीर के विघटन के साथ नष्ट होती है। अपनी इस धारणा के आधार पर जीवविज्ञान यह आशा रखता है कि एक दिन वह मात्र रसायनो द्वारा प्रयोगशाला मे जीवन का निर्माण कर सकेगा। जीवन-निर्माण की स्वयकल्पित रासायनिक प्रक्रिया सिद्ध करने का प्रयत्न यह शाखा अत्यन्त परिश्रम-पूर्वक कर रही है।

जीवविज्ञान की एक प्रकल्पना

शिकागो विश्वविद्यालय के एक वैज्ञानिक स्टैन्ली मिलर अपने प्रयोगो के बल पर ऐसा अनुमान करते है कि पृथ्वी पर आज जैसा वातावरण है वैसा वातावरण बना उससे पहले उसके वायुमडल मे हाइड्रोजन, एमोनिया और मिथेइन ही थे, ऑक्सिजन उसमे नही था। उस समय ऑक्सिजन तो केवल पानी मे ही था। इन तीनो को एक ट्यूब मे इकट्ठा कर उसमे अल्ट्रा वायोलेट किरणो से अभि-

व्याप्त विद्युत्-चिनगारियाँ छोड़ी गईं। उनसे होने वाली रासायनिक प्रक्रिया के द्वारा एक सप्ताह में उसमें बहुत से 'एमिनो एसिड' बने।

इससे उत्साहित हो उन्होंने एक प्रकल्पना प्रकट की कि "पृथ्वी के ठंडी होने के पश्चात् उसके वातावरण में रहे एमोनिया, मिथेइन हाइड्रोजन आदि वायु और वाष्प के अणु बिजली में से विकीर्ण होने वाली अल्ट्रावायोलेट किरणों के कारण कार्बनिक और अकार्बनिक यौगिक (कम्पाउण्ड) में परिणत हुए और उसमें से क्रमश कार्बो-हाइड्रेट, नाइट्रेट, फारमल्डीहाइड, एमिनो एसिड जैसे पदार्थ बने। इस प्रकार कालक्रम से प्रोटीन जैसा जटिल 'कम्पाउण्ड' तैयार हुआ। विशिष्ट एन्झाइमों की सहायता से प्रोटीन सक्रिय बना। और जन्म प्रजनन और मृत्यु आदि जैविक कार्य (वाइटल फन्क्शन्स) जिसके द्वारा सम्पन्न होते हैं वह न्यूक्लिक एसिड अस्तित्व में आया। उसमें से क्रमश वाइरस, बेक्ट्रिया जैसे जन्तुओं की उत्पत्ति हुई। इन आदिम जीवों से पृथ्वी पर जीवन का प्रारम्भ हुआ।

"इसके बाद पृथ्वी के वायु मण्डल में जैसे जैसे परिवर्तन आता गया वैसे वैसे अधिक विकसित जीवों का निर्माण होता गया। एक कोषीय जीवों में से बहुकोषीय जीव अस्तित्व में आये। प्रथम 'अमीबा' जैसे एक कोषीय सादे जीवों से आरम्भ हुआ, फिर उत्तरोत्तर अधिक विकसित और अधिकाधिक संकुल शरीररचना वाले जीव पैदा हुए। इस क्रम से विविध जीव सृष्टि का इस पृथ्वी पर विकास हुआ। आखिरकार अरबों कोषों द्वारा निर्मित मानवदेह का प्रादुर्भाव हुआ" (ऐसा अनुमान किया जाता है कि वयस्क मनुष्य के शरीर में लगभग साठ खर्व कोष होते हैं। प्रति सैकंड उनमें से पाँच करोड़ कोष नष्ट होते हैं और उतने ही नये पैदा होते हैं।)

विज्ञान की धारणा है कि कोष चेतना की प्राथमिक इकाई है। प्रोटीन, कार्बो-हाइड्रेट्स और पोटेशियम, मेग्नेशिया तथा लोह के क्षार उसके (कोष के) रासायनिक घटक तत्त्व हैं, और प्रोटीन बनता है कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सिजन, नाइट्रोजन, गन्धक एवं फोस्फरस के रासायनिक संयोजन से। फलत. चैतन्य विविध रासा-यनिक प्रक्रियाओं का ही सर्जन है ऐसी धारणा का स्वीकार करने को

विज्ञान विवश हुआ है। परन्तु जीवविज्ञान की यह तो एक अटकल मात्र ही है। इस अटकल (hypothesis) के आधार पर प्रयोग करके जीवन का सृजन करने के लिए वह प्रयत्नशील है। परन्तु अपने पास इतनी प्रचुर सामग्री होने पर भी, मत्रा रासायनिक सयोजन (synthesis) के द्वारा लेवोरेटरी मे जीवन की उत्पत्ति, विज्ञान क्या कर पाया है ?

विज्ञान की मर्यादा

सिन्थेसिस द्वारा विज्ञान एमिनो एसिड अथवा प्रोटीन बना देगा, परन्तु वह एक प्राथमिक कोष का निर्माण तक नही कर सका है यह एक वास्तविकता है। लाखो वैज्ञानिक मिलकर न तो रक्त की एक बूद बना सकते है और न कार्वोनिक रसायनो का रहस्य पाकर उनके जैसे रसायन सिन्थेसिस द्वारा उत्पन्न कर सकते है। मधुप्रमेह के रोगी के शरीर मे इन्स्युलिन की कमी दूर करने के लिये आवश्यक इनस्युलिन या वैसे अन्य होर्मोन्स भी विज्ञान तैयार नही कर सका है। इनके रासायनिक घटक तत्वो का ज्ञान उसके पास होने पर भी इन्स्यूलिन, अन्य वैसे होर्मोन्स अथवा रक्त की आवश्यकता उपस्थित होने पर विज्ञान को जीव सृष्टि के पास ही जाना पडता है।

जीव निर्माण की जो प्रक्रिया जीवविज्ञान प्रस्तुत करता है उसका उपयोग करके वह फूल की एक पत्ती तक का निर्माण कर सका है ? चेतनयुक्त एक छोटा-सा बीज भी विशाल वटवृक्ष खड़ा कर सकता है अथवा फूल मे रग, सुगन्ध, कोमलता आदि पैदा कर सकता है। कीचड जैसी कुरूप और दुर्गन्धयुक्त सामग्री मे से कमल का बीज सुन्दर, सौरभपूर्ण कमल का सृजन करता है। जब कि विज्ञान, सजीव बीज की सहायता के बिना, वनस्पति जैसे अत्यल्प विकसित जीवन की भी उत्पत्ति नही कर पाता। इतना ही नही, एक निर्जीव कोष भी वह नही बना सका।

इस प्रकार वनस्पति जैसी अल्प विकसित जीव सृष्टि की कार्यक्षम काया' भी, बिना सजीव 'बीज' की मदद के केवल रासायनिक प्रक्रियाओ के द्वारा बनाई नही जा सकती, तो फिर चेतना की उत्पत्ति की तो बात ही क्या ?

मान ले कि कोष-सर्जन मे विज्ञान को सफलता मिली और उसमें जीवन स्पन्दित हुआ, तो भी इससे इतना ही सिद्ध होगा कि जीवन की अभिव्यक्ति के लिए योग्य परिस्थिति, योनि अथवा शरीर का निर्माण किया जा सका है, अर्थात् जीव को अन्य जगह से आकर बसने के लिए योग्य वातावरण अथवा 'घर' पैदा करने मे विज्ञान को सफलता मिली है, न कि चेतन्य का सर्जन करने मे। हालांकि फिलहाल वस्तुस्थिति तो यह है कि कोष तक का निर्माण विज्ञान नही कर पाया है।

'प्रवासी' चेतना

अथक प्रयास करने पर भी विज्ञान आज तक चेतना के निवास के योग्य एक सीधा सादा 'घर' कोष तक बना नही पाया है, फिर भी अपनी बात मे कुछ तथ्य है यह बताने के लिये जीवविज्ञान के समर्थक अपना अन्तिम दाव लगाते हुए दलील करते है कि "जीवन का सर्जन करने मे भले आज विज्ञान सफल न हुआ हो, किन्तु एक बात को तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि इस पृथ्वी पर पहले जीवन नही था और अब इतनी जीवसृष्टि है। इस जीवसृष्टि का उद्गम कहाँ से हुआ? शून्य में से इतना सृजन कैसे हुआ? अतएव मानना ही पड़ेगा कि पृथ्वी ठण्डी होती गई और उस पर जीवन के लिए आवश्यक और अनुकूल वातावरण जैसे जैसे निर्मित होता गया वैसे वैसे, पहले बताया उस क्रम से, रासायनिक परिवर्तनो की शृंखला आगे बढ़ती चली, और कालक्रम से विविध जीवसृष्टि का इस पृथ्वी पर विकास हुआ। यह न मानो तो एक बार जो पृथ्वी सर्वथा उजाड़ थी, उस पर आजकल जो इतना वैविध्यपूर्ण जीवन दृष्टिगोचर हो रहा है उसे तुम कैसे समझा सकोगे? इसके अतिरिक्त अश्मीभूत अवशेष (पृथ्वी की गहराई मे मिलते वनस्पति और प्राणियो के जीवावशेष) fossils आदि के उपलब्ध ढेर से प्रमाण भी इस बात का समर्थन करते हैं कि इस पृथ्वी पर क्रमश. उत्तरोत्तर अधिकाधिक विकसित जीवसृष्टि अस्तित्व मे आई है। इन सब प्रमाणो की अवगणना तुम कैसे कर सकते हो?"

एक बात हम यहाँ न भूले कि इस पृथ्वी पर जीवसृष्टि का

विकास कैसे हुआ इसका विचार हम यहाँ नही कर रहे हैं परन्तु हमारी मूल बात तो मात्र यही ही है कि चेतना रासायनिक प्रक्रिया का उत्पादन है या नही ? इस बात पर विचार करते हुए हमने यह देखा कि केवल रासायनिक प्रक्रिया द्वारा चेतना के निर्माण की बात तो अलग रही, डायाटोम (diatom) और अमीबा (amoeba) जैसे एककोषीय जीवो के शरीररूप एक सीधा-सादा कोष भी उत्पन्न नही किया जा सकता। अतः पृथ्वी के ठण्डी होने पर इस पृथ्वी पर जीवन का प्राकट्य हुआ' इसका अर्थ इतना ही किया जा सकता है कि जीवन के लिए अनुकूल परिस्थिति का निर्माण होने पर, ब्रह्माण्ड मे स्थित अन्य ग्रहो के ऊपर 'मृत' आत्माओ ने वहाँ से आकर यहाँ निवास शुरू किया और पृथ्वी का वातावरण जैसे जैसे बदलता गया, यहाँ निवास योग्य 'घरो' मे विकास होता गया इन 'घरो' के खण्डो (कोष-cell) की सख्या और साजसज्जा बढती गई। और इस प्रकार पूर्ण वयस्क अवस्था मे साठ खर्व कोषो को धारण करने वाली मानवकाया इस धरती पर अस्तित्व में आई न कि चैतन्य। यहाँ पर विकसित होते 'घरो' मे बसने वाली चेतना को तो विराट विश्व के अन्य किसी प्रदेश मे से स्थानान्तर करके आई हुई प्रवासी अथवा 'निर्वासित'[१०] ही माननी पडेगी, उसकी यहाँ उत्पत्ति नही हुई।[१०] (इस विराट ब्रह्माण्ड मे इस पृथ्वी के अतिरिक्त अन्यत्र भी जीवन है। विशेष जानकारी के लिए देखो-प्रकरण चौथा)

एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायगी। कोई कारखाना टेलीवीज़न सेट उत्पन्न करता है, परन्तु कारखाने मे बना वह टी वी सेट कार्य तो तभी करता है जब टेलीवीज़न केन्द्र से प्रसारित टेली-

१० जिस तरह अपने शरीर मे पुराने कोषो का विघटन और नये कोषो का सर्जन होता रहता है और ससार मे कहीं नये शहर और गाव विकसित होते हैं और कहीं उजाड होकर नष्ट हो जाते हैं, इसी प्रकार ब्रह्माण्ड मे पुराने ग्रहो और तारो का विघटन होकर नयो का सर्जन होता होगा, तथा उनमे से किसी ग्रह पर जीवन के योग्य परिस्थिति का अत होता होगा, व साथ-साथ किसी ग्रह पर जीवन के योग्य परिस्थिति विकसित भी होती होगी।

वीजन वेव्ज उसमें प्रवेश करे। **कारखाने में तैयार हुए टी. वी. सेट और चित्र एवं ध्वनि के द्वारा उस सेट को 'सजीव' बनाने वाली विद्युत चुम्बकीय तरंगों का जैसे स्वतन्त्र अस्तित्व है उसी प्रकार विविध जीवसृष्टि के शरीर और उनमें अभिव्यक्त चेतना का स्वतंत्र** अस्तित्व है। चेतना की **अभिव्यक्ति** भले ही शरीर के योग से होती हो, परन्तु शरीर के साथ उसकी उत्पत्ति नही होती।

ज्ञानचेतना का आधार

मानव शरीर की रचना पोषण, शुद्धि, रक्षा, मरम्मत आदि के लिए उसमे रहे हुए स्वयं सचालित तन्त्रो के बारे में आज जो कुछ भी जाना जा सका है उस पर मनुष्य विचार करे तो भी उसे प्रतीति हुए बिना नही रहेगी कि इस सृजन और इसके संचालन के पीछे कोई अज्ञात शक्ति रही हुई है, यह मात्र रासायनिक प्रक्रियाओं का ही निर्माण नही है।

चिमगादड़ मनुष्य की अपेक्षा बहुत कम विकसित प्राणी है। उसका मस्तिष्क थोड़े-से ग्रामो का है, परन्तु इस छोटे-से मस्तिष्क की एक शक्ति ने वैज्ञानिको को आश्चर्यमुग्ध बना दिया है। वह उडता है तब अगाढ अन्धकार मे भी उसके मार्ग मे आने वाले अति-सूक्ष्म अवरोध को वह दूर से पहचान लेता है। कमरे मे अत्यन्त महीन तारो की अटपटी जाल सी गूंथकर और उसमें चिमगादडो को उड़ते रखकर वैज्ञानिको ने उनकी इस शक्ति का गहरा परीक्षण किया है। उससे वे जान सके है कि चिमगादड़ का छोटा-सा मस्तिष्क प्रबल राडर और कोम्प्युटर का सयुक्त कार्य करता है। सूक्ष्म तारो के सयुक्त गुम्फन मे भी वे किसी भी तार को अथवा एक-दूसरे को बिना छूये ही उड सकते हैं। इस छोटे-से मस्तिष्क को यह आश्चर्यजनक ज्ञानशक्ति क्या मात्र किसी रासायनिक सयोजन को ही निर्मिति है ?

विज्ञान की सकल्पना है कि कोष चेतना की प्राथमिक इकाई है। असख्य कोष इकट्ठे होकर शरीर के भिन्न भिन्न अवयव बनते हैं और वे अलग अलग इकाई के रूप मे स्वतन्त्र कार्य करते हैं, और अपने घटक कोषो की भाँति ये सब अवयव मिलकर शरीररूपी एक

बड़ी इकाई बनाते हैं। इस शरीररूपी इकाई के भिन्न भिन्न अवयव अन्य अवयवों के साथ सुसंगत रहकर अपना स्वतन्त्र कार्य करते हैं, उसी प्रकार इस प्रत्येक अवयव के घटक कोष भी परस्पर सुसंगत रहकर अपना स्वतन्त्र कार्य करते हैं। अर्थात् प्रत्येक कोष (अपनी) स्वतन्त्र चेतना प्रदर्शित करता है।

विज्ञान की इस धारणा को स्वीकार करें, तो यह प्रश्न उपस्थित होता है कि स्वतन्त्र चेतना वाली ये इकाइयाँ (शरीर के भिन्न-भिन्न अवयव और उनके घटक कोष) मात्र कार्यरत रहे इतना ही नही वे इस प्रकार सुसकलित रहकर कार्य करें जिससे शरीररूपी एक बड़ी इकाई का निर्माण हो और वह कार्य करती रहे ऐसी योजना—सयोजन कौन करता है ? और मृत्यु होने पर शरीररूपी इकाई के स्थगित हो जाते ही उसके साथ समग्र अंग (जो स्वयं भी चेतना की स्वतन्त्र इकाइयो के रूप मे कार्य करते हैं) और उनके भी घटक कोष (जो चेतना को छोटी छोटी स्वतन्त्र इकाइयाँ हैं) एक साथ ही क्यो चेतनाहीन हो जाते हैं ? हृदय बन्द होने से एक अन्य सब प्रकार से स्वस्थ, मनुष्य मरता है तो उसी क्षण आँख देखना क्यो बन्द कर देती है ? आँख की दर्शनशक्ति तो विनष्ट नही हुई, क्योकि वही आँख दूसरे सजीव शरीर मे लगाई जाय—ट्रान्सप्लेट की जाय, तब वह देख सकती है। आँख तो वही है, तो फिर यह भेद क्यो ? मृत शरीर मे वह आँख नही देखती अर्थात् 'देखने वाला' जहाँ से चला गया हो वहाँ उस आँख से कुछ भी ज्ञान नही होता, और जहाँ 'देखने वाला' मौजूद है वहाँ उसी आँख से उसके सम्मुख आया हुआ रंग-रेखायुक्त दृश्य दीखता है। इससे क्या यह सिद्ध नही होता कि सम्मुख स्थित रूप का आँख के द्वारा ज्ञाता देखने वाला कोई दूसरा ही है; आँख तो उसका मात्र उपकरण है।

जीवन और मृत्यु की भेद-रेखा कौन खींचता है ?

जीवनतत्त्व को समझने मे विज्ञान निष्फल रहा है इस बात को स्वीकार करते हुए मेल्बोर्न विश्वविद्यालय के क्वीन्स कॉलेज के, भौतिक-वैज्ञानिक के तौर पर प्रसिद्ध, प्राध्यापक डॉ० रेनोर जोन्सन

लिखते हैं कि—"जीवविज्ञान के क्षेत्र में भौतिक एवं रसायन शास्त्रों का प्रयोग, उनके अपने स्तर पर, कुछ सफल हुआ है और उसके परिणाम स्वरूप बायो-फिजिक्स (Bio-Physics) एवं बायो-केमिस्ट्री (Bio-Chemistry) की विद्याशाखाएं हमे प्राप्त हुई हैं, परन्तु चैतन्य की प्रमुख लाक्षणिकताओ पर वे शाखाएँ तनिक भी प्रकाश नही डाल सकी हैं ।... ... दृश्यमान पार्थिव पदार्थों के सम्बन्ध स्थापित करने में तर्क को उल्लेखनीय सफलता मिली है; आधुनिक विज्ञानरूपी प्रासाद इसका प्रमाण है । परन्तु भौतिक विज्ञान एवं रसायन विद्या के क्षेत्रों से बाहर, जीवविज्ञान विषयक जांच का कार्य जहां तर्क को सौंपा गया है उसमें, उसकी सफलता की मात्रा अल्प है । ऐसा होने का कारण यह है कि वहा एक नये तत्व चेतना का प्रवेश होता है । **मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन चित्त और पार्थिव तत्व के एक विशिष्ट एवं व्यवस्थित संयोग की अवस्था है । उस संयोग के बिखरते ही जीवन-तन्त्र जीवन की सभी लाक्षणिकताओं से विहीन हो जाता है, और शेष रहता है रसायनों का एक संकुल ढेर मात्र ।"[११]**

---

११. Physics and chemistry applied in the biological field have had their successes on their own level and have given us bio-physics and bio-chemistry, but on the phenomena most characteristic of life they have thrown no explanatory light ... Reason has had remarkable success in formulating relationships between physically observed quantities, and of this success the edifice of modern science is the evidence To the degree, however, in which, reason has been applied beyond the fields of physics and chemistry to that of biological enquiry its successes have been less spectacular, and this is because a new element, life, is now involved Life I shall regard as a state of organic association of Mind with matter. dissolve this association and the organism loses the characteristics of life and is no more than a complex aggregate of chemical substances.

Dr. Raynor Johnson,
The Imprisoned Splendour, pp 28-4

मृत्यु एवं जीवन की भेदरेखा के सूचक तत्व का एक भौतिक शास्त्री के द्वारा दिया गया यह निर्देश है। इसका स्पष्ट तात्पर्य यह है कि शरीर में प्रवृत्त रासायनिक प्रक्रियाओ में से जीवन का निर्माण होता हो अथवा रक्ताभिसरण और हृदय की धडकनो के आधार पर वह टिका हो ऐसा नही है। इसके विपरीत शरीर का अस्तित्व, हृदय की धडकन, रक्त का अभिसरण और शरीर मे प्रवर्तमान समस्त रासायनिक प्रक्रियाओ का आधार उसके साथ जो 'चित्त का संयोग' हुआ है वह है। मानो कि एक आदमी किसी दुर्घटना मे मर गया और उसका हृदय दूसरे के शरीर में स्थापित करने के लिए निकाल लिया जाता है। तो, उसे जिस क्षण मृत घोषित किया गया उस क्षण उसका हृदय चालू होता है या बन्द ? यदि वह चालू हो तो उस समय उस आदमी की मृत्यु हुई यह कैसे तय किया गया ? और यदि उसके बन्द हो जाने से मृत्यु घोषित की गई हो, तो उस शरीर मे अपने कार्य से विरत हुआ हृदय दूसरे शरीर मे पुन: कार्यरत कैसे हो जाता है ? और, यदि न्यूक्लिक एसिड ही सर्व प्रकार के 'वाइटल फन्क्शन्स' का आधार हो तो, हृदय अर्थात् शरीर के मात्र एक अवयव के बन्द हो जाने से सभी 'वाइटल फन्कसन्स' बन्द क्यो हो जाते हैं ? एक ओर तो ऐसा देखा जाता है कि पूर्ण सशक्त-वाइटेलिटी से परिपूर्ण-शरीर भी हृदय के बन्द होते ही 'मृत' हो जाता है, तो दूसरी ओर नितान्त अशक्त शरीर भी—जिसके अनेक अवयव कार्य करने मे अक्षम हो गये हो और जिसकी जीवनशक्ति क्षीण हो गई हो—लम्बे अर्से तक जीवित रहता है, जीवन बनाये रखता है। उस रुग्ण शरीर मे भी चयापचय की क्रिया चालू रहती है, जबकि सुदृढ शरीर को भी हृदय बन्द होते ही 'मृत कलेवर' घोषित करना पड़ता है। मृत्यु होते ही, उस शरीर मे सभी अवयवो के समस्त कोषो का विघटन (decomposition) क्यो होने लगता है ? यदि प्रत्येक कोष की अपनी व्यक्तिगत चेतना हो, तो इस व्यक्तिगत चेतना वाले, उस शरीर के सभी कोष एक ही साथ अपना कार्य करने से विरत क्यो होते हैं ?

हठयोग का 'चमत्कार'

अपने आसपास की दुनियाँ मे होने वाली घटनाओं का मनुष्य ध्यानपूर्वक निरीक्षण करता रहे तो, विज्ञान के संशोधनो और परीक्षणो में बिना गहरे उतरे ही, अपनी सामान्य सूझ-समझ (common-sense) से भी, देह से परे किसी तत्त्व की प्रतीति उसे हो सकेगी। हृदय के बन्द हो जाने से मृत्यु हो जाने की घटना तो अब प्रतिदिन की बात हो गई है, तो दूसरी ओर अपनी इच्छाशक्ति से केवल श्वासोच्छ्वास ही नही, रक्ताभिसरण और हृदय तक को बन्द करके घण्टो और दिनो तक अपने शरीर को मृत की भाँति निश्चेष्ट बनाकर 'पुन' जीवित होने वाले हठयोगियो की कितनी ही कहानियाँ आये दिन अखबारो में आती हैं। उन कहानियो मे कुछ शायद 'गप्प' भी हो। भोली-भाली जनता में सिद्ध पुरुष अथवा सत की धाक जमाकर पैसे ऐंठने अथवा सस्ती कीर्ति कमाने के लिए देखने वालो की आँखो मे धूल झोककर ऐसा आभास पैदा करने के दृष्टान्त भी बनते रहते हैं। फिर भी हठयोग को अन्याय न हो इस दृष्टि से ऐसे भी कतिपय दृष्टातो का यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है जो कठोर परीक्षा के पश्चात् खरा सोना सिद्ध हुए हैं।

सच्चे योगियो की खोज मे भारत आये एक अंग्रेज पत्रकार डॉ० पॉल ब्रन्टन ने इस बारे मे अपने अनुभव का निर्देश करते हुए लिखा है[१२] कि "एशिया और अफ्रिका मे भिन्न भिन्न स्थानो और प्रसगो पर लेखक का ऐसे योगियो और फकीरो से मिलन हुआ है जो श्वासोच्छ्वास, रक्ताभिसरण और हृदय तक को बन्द कर देने की असाधारण शक्ति प्रदर्शित कर सकते थे। इतना ही नही, वे वायु-विहिन शव पेटी मे अथवा जमीन के भीतर घण्टो और दिनो तक रह कर 'पुन.' जीवित हो सकते थे। ऐसी शक्ति रखने वाले सच्चे योगियो और ढोंगियो को अलग अलग छांटने के लिये लेखक ने उनके

12. Dr Paul Brunton, The Quest of the Overself, pp. 60-2, (Rider & Co., London)

पराक्रमों का खूब ध्यान से निरीक्षण किया था। उसे पूर्ण संतोष हुआ है कि इन शक्तियों का वस्तुत अस्तित्व है। उनमे से एक योगी तो थोड़े ही समय पहले चालीस दिनों से भी अधिक समय तक, कही से भी हवा भीतर न घुसने पाये इस तरह, सिमेण्ट से मजबूत बन्द की हुई कब्र मे रहा। परन्तु इस बारे मे मैं अपना व्यक्तिगत प्रमाण प्रस्तुत करना नही चाहता। विवाद को जिसमे अल्प अवकाश हो वैसे स्वतन्त्र प्रमाण भी है और वे सन् १९३६ के आसपास के ही हैं, बहुत पुराने नही।

"उनमे से प्रथम है 'द मद्रास मेल' नामक ब्रिटिश आधिपत्य के, तथा आरूढ पत्रकार के तौर पर प्रसिद्ध अंग्रेज सम्पादक द्वारा सपा-दित, एक विश्वसनीय भारतीय दैनिक की कतरन :

तीस मिनिट तक जीवित समाधि

१५,००० लोगों द्वारा देखा गया योगी का पराक्रम

मछलीपट्टम, दिसम्बर (१९३६)

"योग का एक आकर्षक पराक्रम मैसूर के योगी शकरनारायण स्वामी ने रामलिगेश्वर मन्दिर के पटागण मे पन्द्रह हजार लोगों के सामुख कर दिखाया। आधे घण्टे तक उन्होने जीते जी समाधि ली थी।

"लेफटेनेण्ट कर्नल के० वी० रामराव, आइ० एम० एस०, डिस्ट्रिक्ट मेडिकल ऑफिसर, के सम्मुख ....खास तैयार की हुई सन्दूक मे योगी को बिठाकर, उस सन्दूक को गड्ढे मे उतारकर मिट्टी से ढाँक दिया गया। आधे घण्टे के पश्चात् सन्दूक को बाहर निकालने पर उसमे योगी समाधि मे बैठे मालूम हुए। आधे घण्टे के पश्चात् योगी के होश में आने पर लोगो ने हर्षनाद से उनका अभि-वादन किया था।"

"दूसरा है मेजर एफ० यीट्स ब्राउन (F. Yeats Brown) नामक एक मित्र का।....लन्दन के 'सण्डे एक्सप्रेस' मे उन्होने ये तथ्य प्रकाशित किये थे।

"... इनमें से एक प्रसग पर, जिसमे मैं उपस्थित था, योगी एक घण्टे तक वैसी स्थिति मे रहे; दूसरे प्रसग पर मरण समाधि में वे पन्द्रह मिनिट रहे।"

'उस 'शव' की परीक्षा करने वाले डॉक्टरो ने कहा कि जीवन का कोई चिन्ह प्रतीत नही होता। पूर्व निर्धारित समय पूर्ण होने पर योगी सजीवन हुए थे।"

"तीसरा है मद्रास के "सण्डे टाइम्स" (फरवरी १९३६) का। ये रहे उसके शब्द :"

हृदय और नाड़ी पर काबू
एक योगी का अद्भुत पराक्रम

'अहमदाबाद के सिविल सर्जन कर्नल हार्टी तथा अन्य कितने ही डॉक्टरो के समक्ष आँखें मूँदकर जमीन पर बैठे स्वामी विद्यालंकार नाम के एक योगी ने काफी समय तक हृदय एव नाडी पर के अपने काबू की अद्भुत प्रतीति कराई थी। उस समय हृदय की धडकनो की परीक्षा की गई थी और इलैक्ट्रो-कार्डियोग्राम लिया गया था। इस परीक्षा के परिणामो से यह स्पष्ट होता था कि योगी का इन अवयवो पर पूर्ण आधिपत्य था।

'पच्चीस घण्टे तक जमीन के भीतर दबे रहने के अतिरिक्त दूसरे भी अनेक असामान्य प्रयोग उन्होने कर दिखाये थे।"

"प्रमाण के रूप मे इस अन्तिम घटना का मूल्य इस तथ्य मे सन्निहित है कि एक सैनिक अधिकारी और सर्जन की योग्यता रखने वाले अग्रेज की उपस्थिति मे यह घटित हुई थी। इससे, जाँच की कितनी कड़ी शर्तें उसमे रखी गई होगी इसकी कल्पना करना कठिन नही है।"

पजाब मे रणजीतसिंह के राज्यकाल मे हरिदास नाम का एक हठयोगी ऐसी ही कठोर परीक्षा और सैनिको के कडे पहरे मे चालीस

दिनों तक जड़ समाधि मे, कब्र में गाडे गये मुर्दे की तरह, जमीन मे गडा रहा था।

२८ दिनों के पश्चात् 'कब्र' में से बाहर निकलने वाला फकीर

हमारे अपने समकालीनो मे भी ऐसी शक्ति रखने वाले व्यक्ति मिलते हैं। ऐसा एक व्यक्ति है इजिप्त का प्रसिद्ध फकीर डॉ. ताह्रा वे (Tahra-Bay) वह कोई पुराणपन्थी फकीर नही है। उसने टर्की के कुस्तुन्तुनिया मे आधुनिक शिक्षा लेकर डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की है। इसलिए वह अपनी शक्तियो की वैज्ञानिक रीति से परीक्षा कराने के लिये उत्सुक रहता है। बचपन से ही उसे हठयोग की शिक्षा मिली थी। अध्ययन पूरा करने के बाद उसनें ग्रीस में अपना दवाखाना शुरू किया। वहाँ एक बार, घण्टे-दो घण्टे तक नहीं, परन्तु एक साथ अट्ठाईस दिनो तक जमीन मे गड़े रहकर उसने अपनी शक्ति का परिचय दिया था। जीवित समाधि लेकर पुनः सजीव बाहर निकलने का यह प्रदर्शन वहाँ के ईसाई अग्रणियो को पसन्द नही था, इसलिये उन्होंने इसे रोकने का भरसक प्रयत्न किया, परन्तु ताह्रा स्वय डॉक्टर होने से अपनी इच्छानुसार प्रयोग करने की सरकार ने उन्हे अनुमति दी। इसके बाद वह इटली गया था, और वहाँ उसने कई प्रसिद्ध वैज्ञानिको को अपनी इस शक्ति की परीक्षा करनें का मौका दिया था। उन्होने उसे शीशे की शव पेटी मे रखकर और ऊपर से रेती भर कर शव पेटी का ढक्कन कीलियों से जड़ दिया। इसके बाद वह स्नानागार के पैंदे मे रखी गई। आधे घण्टे के पश्चात् पुलिस ने आकर यह प्रदर्शन (डिमोन्स्ट्रेशन) रोक दिया। परन्तु उस आधे घण्टे तक तो, इन सब कसौटियो के बीच, उसका वह प्रयोग सफल रहा। इसके बाद फ्रांस मे भी इसी तरह कोफिन में, पानी के नीचे, चौबीस घण्टे तक वह रहा था। उस समय वहाँ के डॉक्टरो ने इस प्रयोग मे विशेप दिलचस्पी ली थी और उसकी सच्चाई का निश्चय करने के लिए उन्होने कोई जाच बाकी नही रखी थी। परन्तु ताह्रा वे को उसका तनिक भी डर नही था। वे तो चाहते थे कि इस विषय मे वैज्ञानिक दृष्टि से सशोधन हो। और

इसमे कोई तिकडम नहीं आजमाई गई इसका प्रेक्षको को निश्चय हो सके इसलिए वह शवपेटी पानी मे उतारने देता था।

इजिप्त की राजधानी काहिरा मे अपने मित्रों और डाक्टरो की एक मण्डली के समक्ष जीवित समाधि लेकर पुन' सजीवन होने की अपनी इस तथा अन्य शक्तियो का ताहरा वे ने जो प्रभावशाली परिचय दिया था उसका तथा उसके द्वारा इनके किये गये स्पष्टीकरणो का विस्तृत और प्रतीतिकर ब्यौरा "ए सर्च इन सिक्रेट इजिप्त" (पृ० १०४-२६) मे उसके लेखक ने किया है। जीवविज्ञानी और डॉक्टर यह वर्णन पढे तो उन्हे प्रतीति होगी कि मानव देह की विज्ञान को ज्ञात सभी करामातो से भी बढकर कोई अकल्पनीय करामात इस देह मे रही है, जिसका रहस्य अभी विज्ञान की पहुँच से परे है।

ऐसी शक्तियाँ रखने वाले सच्चे योगी प्रसिद्धि से दूर रहना चाहते हैं। साधनारत उन योगियो को ऐसी शक्तियो का प्रदर्शन करने के लिये ललचाया नही जा सकता। ऐसी शक्तियो का प्रदर्शन प्राय: निम्न स्तर के योगी ही किया करते है। फलत. ऐसे प्रमाणभूत दृष्टान्त विरले ही पाये जाते है। परन्तु ये विरले दृष्टान्त भी बहुत कुछ कह जाते हैं।

शरीर से स्वतंत्र अस्तित्व

हार्ट फेल हो जाने से नीचे लुढक पडे व्यक्ति की तरह जड़ समाधि मे स्थित व्यक्ति के शरीर मे भी हृदय की गति तो बन्द ही होती है, फिर भी एक मृत और दूसरा जीवित ऐसा भेद कैसे सम्भव होता है ? जड़ समाधि मे स्थित व्यक्ति का हृदय स्थगित होने पर भी वह अपना जीवन चालू रख सकता है। जीवन के चिह्न रूप मानी गई श्वासोच्छ्वास, रुधिराभिसरण, हृदय की धड़कन आदि शरीरगत सब क्रियाएँ बन्द होने पर भी उसका देह विघटित (disintegrate) नही होता और निश्चित समय पर—समाधि मे लीन होने से पूर्व निश्चित किये गये समय पर योगी अपने उस निष्प्राण से कलेवर को पुन: गतिशील करता है। हृदय बन्द पड़ने से बना निर्जीव

शरीर थोड़े समय ज्यों का त्यों पड़ा रहे तो उसमे सड़ान शुरू हो जाती है, परन्तु योगी का शरीर दिनो तक पड़ा रहे तब भी क्यो नही सड़ता ? जड़ समाधि मे हृदय की गति, रक्त का परिभ्रमण आदि जीवन की अनिवार्य आधारभूत समझी जाने वाली क्रियाएं (vital functions) दीर्घकाल पर्यन्त बन्द हो जाती है, फिर भी जीवन का क्यो अन्त नही होता ?

यह तथ्य विचारशील मनुष्य को इस बात की प्रतीति कराता है कि शरीर को जीवित बनाने वाला तत्त्व कार्यरत शरीर का अर्थात् मात्र किसी रासायनिक प्रक्रिया का उत्पादन नही है ।

जीवविज्ञान रासायनिक प्रक्रियाओ द्वारा जीवननिर्माण का अपना दावा प्रमाणित नही कर सका है; जीवननिर्माण विषयक अपनी मात्र परिकल्पना (hypothesis) ही वह प्रस्तुत करता है, परन्तु अपनी उस परिकल्पना के अनुसार रासायनिक सयोजन द्वारा जीवन का निर्माण करने मे जीवविज्ञान निष्फल ही रहा है । जबकि विज्ञान की अन्य शाखाओ ने तो शरीर से स्वतत्र अस्तित्व रखने वाला कोई तत्त्व शरीर मे बसा है इसके सूचक कई सुनिश्चित प्रमाण प्रस्तुत किये है ।

☆

३

वैज्ञानिक स्तर पर पुनर्जन्म के सिद्धान्त की स्वीकृति

हम मे रही हुई अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति का आधारभूत कोई अज्ञात तत्त्व शरीर मे रहा है ऐसी प्रतीति कराने वाले ई एस पी. विषयक संशोधनो की बात हम प्रथम प्रकरण मे कर चुके हैं।

ई. एस. पी. (अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति) को भाति ही पुनर्जन्म के बारे मे भी परामनोविज्ञान (पेरासाइकोलॉजी) द्वारा व्यापक सशोधन हो रहा है। इसके परिणामो से पुनर्जन्म को न मानने वाले पश्चिम में खलबली मच गई है। जहाँ धार्मिक मान्यता ने भी पुनर्जन्म को स्वीकृति नही दी ऐसे पश्चिम के देशों में भी, इन संशोधनो के निश्चयात्मक परिणामो के फलस्वरूप, अब पुनर्जन्म का सिद्धान्त त्वरा से मान्य होता जा रहा है।

जातिस्मरण के दृष्टान्त

भारत मे जयपुर विश्वविद्यालय के पेरासाइकोलोजी विभाग द्वारा ऐसा सशोधन हाथ मे लिया गया था। उस विभाग ने पूर्व-जीवन की स्मृति जिसे हुई हो वैसे पाँच सौ से अधिक दृष्टान्त इकट्ठे किये है। इस सशोधन-कार्य के मुख्य सचालक श्री बेनर्जी के लेख से उदाहरणार्थ दो-तीन दृष्टान्त यहाँ प्रस्तुत करता हूँ।

बिहार मे जाटिया नामक एक गाँव मे डेढ़-दो साल का एक

बालक बार बार कहा करता था कि 'मेरी माँ लका मे है....मेरा भाई भी लंका मे है। वह चश्मा लगाता है। मुझे वहाँ जाना है।' उसकी इन बातों मे क्या तथ्य था यह तो तभी ज्ञात हुआ जब कि एक दिन आनन्द नैत्र्य नामका एक सिलोन निवासी, पिता रमेश असीसिंघ और माता सावित्री की कुक्षी से जन्म पाये हुए बालक को खोजता हुआ जाटिया गाँव मे आ पहुँचा।

बात यह हुई कि सिलोन निवासी सुरेश मैत्रीमूर्ति नामक एक बौद्ध साधु ने अपनी मृत्यु से पहले कहा था कि मृत्यु के पश्चात् वह उत्तर भारत मे जन्म लेगा। उसकी मृत्यु के दो साल बाद उसके एक सम्बन्धी और गुरु ने उसकी जानकारी पाने के लिए प्रयत्न शुरू किये। इसके अनुसंधान मे आनन्द नैत्र्य ने मद्रास आकर भृगुसहिता वाले एक ज्योतिषी से सम्पर्क स्थापित किया। ज्योतिषी ने कहा कि सुरेश का जन्म बिहार मे हुआ है। उसके पिता का नाम रमेश असीसिंघ और माता का नाम सावित्री है। वह दस वर्ष की अवस्था में पुनः बौद्ध भिक्षु बनेगा और सिलोन मे आकर स्थिर होगा। इस जानकारी के आधार पर आनन्द ने बिहार आकर 'सुरेश' की खोज शुरू की, परंतु वह समझ गया कि यह कार्य सरल नही था। अनेक मुसीबतो और व्याकुलताओ के बाद बिहार के एक कोने मे आये हुए गाँव मे उसे 'सुरेश' का पता लगा।

चाँदगरी नाम के एक छोटे-से गाँव मे सन् १९५१ मे मुनेश का जन्म हुआ था। बचपन से ही वह इटारनी के किसी भजनसिह की बात कहता और स्वयं ही वह भजनसिह है ऐसा दावा करता। गत जन्म की अपनी पत्नी, पुत्री और परिवार की बातें भी वह करता था। परन्तु किसी ने उस ओर ध्यान नही दिया। प्रसंगवश उसके दादा ने उसकी बात मे कुछ दिलचस्पी ली और जमालपुर जाते समय एक बार वे बीच मे इटारनी उतरे। वहाँ तलाश करने पर १९५१ मे मृत्यु प्राप्त किसी भजनसिह का पता उन्हे चला। उसके कुटुम्बियो से वे मिले और भजनसिंह के एक भाई को अपने साथ चाँदगरी ले आये। मुनेश ने उसे देखते ही पहचान लिया। बाद मे मुनेश को इटारनी ले जाया गया। वहाँ उसने कुटुम्ब के प्रत्येक सभ्य को

पहचान लिया। इतना ही नही, भजनसिंह की प्रत्येक चीज को भी उसने पहचान लिया और भजनसिंह की मृत्यु के वाद घर मे हुए सव परिवर्तन भी वतलाये। उस समय भजनसिंह की विधवा अपने पीहर गई थी, वह भी मुनेश को वात सुनकर वहाँ आयी। मुनेश ने उसको सहेलियो के वीच उसे पहचान लिया और पति-पत्नी के वीच हुए वहुत से व्यक्तिगत प्रसग भी कह सुनाये। इस पर अयोध्यादेवी (भजनसिंह की विधवा) को निश्चय हो गया कि पूर्वभव के अपने पति के साथ उसका मिलन हुआ है।

मुरादावाद निवासी श्री सी एल. शर्मा और मायादेवी की पुत्री ढाई साल की आयु मे ही अत्यन्त कठिन और अल्प ज्ञात शास्त्रों के पाठ वोल जाती थी। उत्तर प्रदेश और राजस्थान के राज्यपालो, राजस्थान हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश, राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति आदि सुप्रसिद्ध व्यक्तियों और राष्ट्र के अनेक साक्षरों की उपस्थिति मे इस लड़की ने अपनी शक्ति का परिचय दिया था और चमत्कारिक स्मृति एव शुद्ध उच्चारण के लिए सबने उसको भूरी-भूरी प्रशंसा की थी।

यहाँ यह स्मरण रखना आवश्यक है कि पुनर्जन्म विषयक इस संशोधन कार्य मे स्थान पर जाकर, कानूनी अदालतो मे जिस वारीकी के साथ प्रमाणो की जॉच की जाती है वैसी कठोर जाँच और प्रमाणो की परीक्षा करने के पश्चात् ही किसी भी केस को पुनर्जन्म के केस के रूप मे मान्यता दी जाती है। व्यक्तिगत केसो की जाँच के विवरण की जयपुर विश्वविद्यालय के परामनोविज्ञान विभाग ने जो पुस्तिकाएँ 'प्रभु' 'इस्माइल' 'मुनेश' आदि प्रकाशित की हैं उनको देखने से इसका निश्चय हो सकेगा।

पुनर्जन्म का इन्कार अशक्य

'इन्टरनेशनल स्पिरिच्युआलिस्ट फेडरेशन' (ज्यूरिच-स्विट्जलैंड) के भूतपूर्व प्रमुख कार्ल मूलर कहते हैं कि "भिन्न भिन्न देशो मे से और विना किसी अपवाद के गत अस्सी सालों के वीच के इकट्ठे किये गये

सात सौ केसों का हमने जो विभागीकरण किया है उसमें आये वैविध्य और प्रकार भेदों को देखते हुए पुनर्जन्म का इन्कार करना अत्यन्त कठिन है। " ""कुछ गौण प्रश्न (जैसे कि स्त्री का पुरुष होना अथवा पुरुष का स्त्री होना, मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच कितना अवकाश रहता है, इत्यादि) उपस्थित होते हैं, फिर भी पुनर्जन्म के मूलभूत तथ्य के समर्थक प्रमाण प्रबल हैं।"[१३]

"पुनर्जन्म कोई अपवाद नही है, परन्तु इस पृथ्वी पर आई हुई मानव बस्ती मे से बड़ी सख्या ने पहले यहाँ जन्म धारण किया था ऐसा निर्देश 'एज-रिग्रेशन' के प्रयोग भी करते है "[१४]

एक नई दिशा में से प्राप्त अकाट्य प्रमाण

पुनर्जन्म विषयक सशोधनो मे जातिस्मरण की घटनाओ के

१३. They (the groups) are all established by a total of some seven hundred cases, from different countries and with few exceptions, from the past 80 years In view of the diversity and variety of the various groups it becomes very difficult to 'explain away' reincarnation There is strong evidence in favour of the simple fact of reincarnation, but it is clear that a number of secondary problems (such as a change of sex, the 'intermission'—the time spent in the Beyond, counting from death till the next birth, etc) arise.

Karl E Muller, What is the Proof for Reincarnation ? Parapsychology, Vol. 6, '1964–65,) pp 154-55

१४. Age-regression experiments suggest that reincarnation is not an exception but the overwhelming majority of mankind has a previous incarnation on earth

ibid p. 151

अभ्यास के अतिरिक्त एक नई पद्धति का भी प्रयोग हो रहा है। वह है हिप्नोटिक 'एज-रिग्रेशन'। अमेरिका मे मानस-चिकित्सा का खुलकर उपयोग हो रहा है। इस चिकित्सा मे, रोग की जड़ में कोई मानसिक ग्रन्थि (complex) कारणभूत है या नही यह जानने के लिए अपनाई जाने वाली पद्धतियो मे से एक पद्धति में रोगी को हिप्नोटिज्म द्वारा गाढ 'ट्रान्स' (नींद जैसी अवस्था) मे सुलाया जाता है, और फिर भूतकाल की स्मृतियाँ जाग्रत की जाती हैं। सामान्यतः अति दूर के भूतकाल के विशिष्ट प्रसंग ही हम याद कर सकते है, परन्तु दस साल पहले अमुक दिन हमने क्या क्या किया था वह याद नही आता। परन्तु गाढ ट्रान्स की स्थिति मे वह दिन मानो आज हम जो रहे हों उतनी स्पष्टता से स्मृति पट पर उभर आता है।

प्रथम रोगी को वर्तमान काल से दस साल पहले, पन्द्रह साल पहले. इस तरह बचपन तक ले जाया जाता था। इस बीच, बाद मे, यह भी देखा गया कि रोगी कभी-कभी इस जन्म में न घटी हो वैसी बाते भी करने लगता है, और . इस तथ्य ने पुनर्जन्म के सिद्धान्त का विरोध करने वाले डॉ एलेकजंडर केनन जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डॉक्टर और वैज्ञानिक को भी पुनर्जन्म मे दृढ श्रद्धालु कैसे बनाया यह हम उनके अपने शब्दो मे ही देखे

"वर्षों से मैं पुनर्जन्म के सिद्धान्त से भड़कता था और उसे मिथ्या सिद्ध करने के लिए मैं पूरी कोशिश करता। 'ट्रान्स' मे रहे हुए मेरे रोगी जब ऐसी बाते करते तब मैं उनसे कहता कि वे मूर्खतापूर्ण प्रलाप करते हैं। परन्तु ज्यो-ज्यो समय बीतता गया और एक के बाद दूसरे रोगी यह बात कहने लगे तब मैंने इसका तथ्य जानने के लिए तलाश शुरू की। आज तक मैं एक हजार से अधिक केसों की परीक्षा कर चुका हूँ और मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि पुनर्जन्म एक वास्तविक तथ्य है। एक हजार से भी अधिक केसो में से प्रत्येक केस मे इस जीवन से पहले सौ वर्ष से लेकर ईसवी सन् पूर्व

दो तीन अथवा उससे भी अधिक हजार वर्ष पहले इस पृथ्वी पर जन्म लेने की बात ज्ञात हुई।"[१५]

अपने संशोधन का थोड़ा ब्यौरा देकर वे आगे जाकर कहते हैं कि, "पाठक यह देख सकेंगे कि मैंने यह केवल कल्पना के बल पर नहीं, प्रत्युत कड़ी परीक्षा के बाद ही, उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर कहा है। आज (१९५०) तक जाँचे गये तेरह सौ केसों में सतत स्थिर प्रमाण उपलब्ध हुए हैं, जो अत्यन्त विश्वस्त और उत्साह प्रेरक हैं यह प्रमाण पूर्णतः भौतिक सिद्धान्तों को मानने वालों के आक्रमणों से टक्कर ले सकते हैं। अत्यन्त कट्टर, दोषदर्शी और शंकाशील व्यक्ति भी इसकी उपेक्षा नहीं कर सकते"।[१६]

१५ For years the theory of reincarnation was a nightmare to me and I did my best to disprove it and even argued with my trance subjects to the effect that they were talking nonsense, and yet, as the years went by, one subject after another told me the same story inspite of different and varied conscious beliefs, in effect until now, well over a thousand cases have been so investigated and I have to admit that there is such a thing as reincarnation.

In every one of over a thousand cases I have looked into, the existence has gone back to a previous existence on earth over a period varying from a hundred years previously to two, three or more thousand years B C

The Power Within, (Rider, 1950), p. 170-71.

१६ The reader will see that my remarks are not based upon supposition, but upon tested evidence which has been most remarkably and encouragingly constant throughout the investigations, which number over thirteen hundred to date, such evidence as this defies the attacks of the most materialistic doctrinaires and cannot lightly be passed over, even by the most hardened cynic.

ibid. p. 188.

हिप्नोसिस

इन संशोधनों के बीच उन्हें कर्म सिद्धान्त की प्रतीति भी हुई थी। इसके बारे में हम आगे देखेंगे।

हिप्नोसिस (हिप्नोटिज्म के प्रभाव में नींद जैसी अवस्था) की गहरी ट्रान्स–जिसे 'सोम्नेम्ब्युलिस्टिक ट्रान्स' कहते हैं गे अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति का उद्‌घाटन और देश-काल की मर्यादा के बंधन टूटते देखे गये हैं। इस अवस्था में मात्र पूर्वजन्म की ही नही, अनेक जन्मो की स्मृति जाग्रत हो सकती है। मात्र स्मृति ही नही, स्मरण किये गये समय की अवस्था और प्रसंग के अनुरूप आवाज, हावभाव आदि भी व्यक्त होते हैं। उदाहरणार्थ, बचपन का प्रसंग हो तो बालक जैसा स्वर और तुतली बोली, दुःख का प्रसंग हो तो वेदनापूर्ण स्वर आदि। मानो स्मृति मे लाया गया पूर्व जीवन का प्रसंग किसी निपुण अभिनेता द्वारा उस समय अभिनीत हो रहा हो। यह तथ्य, ट्रान्स में कही गई बात सिर्फ कल्पना की तरंग नही है परन्तु उस व्यक्ति के पूर्वानुभूत प्रसंग हैं इस बात की प्रतीति कराने वाला एक सबल प्रमाण बन जाता है।

इस विषय में जिसे दिलचस्पी हो वह 'ए सर्च फोर ब्राइडे मर्फी'[१७] नाम की पुस्तक पढ़े। हिप्नोटिक ट्रान्स में 'एज-रिग्रेशन' किस तरह कराया जाता है, उसके द्वारा कैसी अद्‌भुत जानकारी उपलब्ध होती है, पुनर्जन्म के सिद्धान्त की इससे प्रबल पुष्टि किस प्रकार मिलती है और ऐसे संशोधनों के परिणाम स्वरूप अमेरिका मे उच्च स्तर के बुद्धिजीवी समाज मे पुनर्जन्म का सिद्धान्त कितनी व्यापक मान्यता पा रहा है इत्यादि का विस्तृत विवेचन–एक व्यक्ति पर किये गये 'एज-रिग्रेशन' के प्रयोग का शुरू से अंत तक के घटना-क्रम को बता कर, उपन्यास जैसी चित्ताकर्षक शैली मे—एक वैकर ने उस पुस्तक मे किया है।

१७. "A Search for Bridey Murphy" Morey Bernstein (Hutchinson, 1956).

अमेरिका में पुनर्जन्म के सिद्धान्त को प्रतिष्ठित करने मे एड्गर केसी नामक एक व्यक्ति का भी बहुत बड़ा हिस्सा रहा है।

वर्जिनिया बीच का 'चमत्कारी मानव'

हम पहले कह चुके हैं कि गहरे 'ट्रान्स' में आत्मा की अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति का उद्घाटन होता है। अत', ट्रान्स मे अन्य व्यक्तियो के पूर्व जीवन अथवा भावी जीवन के बारे मे जानना असंभव नही है। एड्गर केसी ने इस प्रकार गहरे 'ट्रान्स' में रहकर २५०० व्यक्तियों के पूर्व जीवन कहे थे। यहाँ पर एक आशका हो सकती है कि 'हिप्नोसिस के प्रभाव में व्यक्ति अपने ही पूर्व जीवन का निर्देश करता है तब, पहले कहा उस तरह, उसके मुख पर के भाव, स्वर परिवर्तन आदि द्वारा कथित प्रसंग का सवेदन वह कर रहा हो ऐसा स्पष्ट देखा जाता है। यह बात दूसरे के पूर्व जीवन की जानकारी प्रस्तुत करते समय तो नही हो सकती। तो फिर इस प्रकार दूसरे व्यक्ति के पूर्व जीवन का किया हुआ कथन सत्य है न कि सिर्फ तरग—इसका सवूत क्या है? लेकिन एड्गर केसी के बारे मे ऐसी आशंका के लिए कोई स्थान ही नही था, क्योंकि उसने इससे पहले तीस हजार रोगियो की सफल चिकित्सा, बिना रोगी को देखे ही—और कई बार तो हजारो मील दूर होते हुए भी—रोग का निदान और उसके निवारण के अव्यर्थ उपचार का निर्देश करके की थी।

बात इस प्रकार है कि इक्कीस वर्ष की अवस्था मे एड्गर बीमार पड़ा। उससे वह अच्छा तो हुआ, पर उसकी वाचा नष्ट हो गई—वह गूंगा बन गया। उसकी वाचा पुन: लाने के सब उपचार निष्फल रहे। एक बार किसी प्रवासी हिप्नोटिस्ट ने उसे ट्रान्स मे डालकर बोलता किया, परन्तु 'ट्रान्स' मे से जगने के बाद वह बोल नही सका। वह व्यवसायी हिप्नोटिस्ट तो दूसरे दिन अन्यत्र चला गया, परन्तु प्रथम 'ट्रान्स' के समय उपस्थित एक सिखाऊ हिप्नोटिस्ट ने सोचा कि केसी 'ट्रान्स' मे बोल सकता है उस समय बाद मे न बोलने का कारण उसी से जाना जा सकता है। उसने प्रयोग किया। और, नवी कक्षा से आगे जिसने कभी अध्ययन नही किया था ऐसे केसी ने ट्रान्स की अवस्था मे एक डॉक्टर की अदा से डॉक्टरी

परिभाषा में रोग का कारण, उसका निदान और उपचार कह सुनाये। उस प्रकार उपचार करने पर केयी पुनः बोलने लगा। सिखाऊ हिप्नोटिस्ट स्वयं काफी अर्से से पेट के दर्द से पीड़ित था। केसी को एक प्रयोग के लिए समझाकर उसने अपने रोग का निदान भी केसी से प्राप्त किया और वह भी स्वस्थ हो गया। शनै शनै यह बात डॉक्टरो तक पहुँची। वे भी अपने उलझन भरे केसो मे केसी का मार्गदर्शन लेने लगे। इस प्रकार एड्गार केसी के तीस हजार 'हेल्थ रीडिंग' का श्रीगणेश हुआ। उसके बाद तो यह भी ज्ञात हुआ कि केसी रोगी की अनुपस्थिति में भी निदान कर सकता है। प्रश्न करते समय रोगी कहाँ है इतना ही सूचित करना पर्याप्त होता था। केसी स्वय 'ट्रान्स' मे जाता और फिर प्रश्न पूछने पर मानो एक्स-रे मे सारा शरीर देख रहा हो उस तरह बोलने लगता। 'हम वह शरीर देख रहे है " और फिर, डॉक्टरी विद्या का क-ख भी न जानने वाला केसी, एक विशेषज्ञ कन्सल्टेण्ट दूसरे डॉक्टर से कहता हो उस तरह, डॉक्टरी परिभाषा मे रोग का निदान, उसका कारण और अन्त मे उपचार बिना हिचक के झडप से कहता। उसके कहे उपचार मे वैविध्य रहता था। एलोपैथी जैसी कोई एक ही चिकित्सा पद्धति का वह आश्रय नही लेता था। जहाँ सुप्रसिद्ध डॉक्टरो ने हाथ धो दिये हो वसे अटपटे केस भी, शरीर रचना, रोग अथवा औषध के बिना किसी प्रकार के ज्ञान के ही केसी सुलझाता। उसकी चिकित्सा इतनी पारगत होती थी कि आज भी डॉक्टर उसके रेकार्ड (records) का अध्ययन करते है।

—केसी के लाइफ रीडिंग्स

ओहियो (अमेरिका) के आर्थर लेमर्स नामक एक साधनसम्पन्न प्रकाशक ने एक मित्र से केसी की अद्भुत शक्ति के बारे मे सुना तब उसने सोचा कि जिस मनुष्य के पास ऐसी अतीन्द्रिय शक्ति हो वह मानव मन को सदियो से परेशान करती निगूढ उलझनो—यथा मानव जीवन का हेतु क्या है ? मृत्यु के बाद क्या होता है ? भिन्न भिन्न दर्शनो मे कौनसा दर्शन सत्य के सर्वाधिक समीप है इत्यादि— पर क्या प्रकाश नही डाल सकता ? लेमर्स खास इसी काम के लिए

ओहियो से, केसी उस समय जहाँ रहता था उस अलाबामा में स्थित सेल्मा नाम के स्थान पर गया। केसी की अद्भुत शक्ति मे, रोग की चिकित्सा के अतिरिक्त इतर शक्यताएँ देख सकने वाला लेमर्स ही प्रथम व्यक्ति था। उसने केसी को अपनी बात समझाई और प्रथम प्रयत्न मे ही केसी ने घटस्फोट किया कि लेमर्स 'पूर्व-भव मे एक साधु था।' यहाँ से केसी के लाइफ रीडिंग्स शुरू हुए। केसी पूर्व भव की बात बतलाकर, उस गत जीवन का वर्तमान जीवन पर क्या प्रभाव पडेगा वह भी कहता और जिस व्यक्ति को उसने कभी देखा तक न हो उसके स्वभाव, विशेषताएँ, मानसिक विकास इत्यादि का भी सुनिश्चित निर्देश करता जिसकी सच्चाई आश्चर्यजनक मालूम पडती। इससे जिन्होने उसकी इस शक्ति का प्रत्यक्ष परिचय पाया था, उन्हे केसी की बात मे तनिक भी आशका नही होती थी। इस प्रकार केसी द्वारा किये गये 'लाइफ रीडिंग्स' की सख्या भी ढाई हजार तक पहुँची।

सन् १६४५ मे अडसठ वर्ष की आयु मे केसी की मृत्यु होने से पूर्व उसके प्रशसको ने उसके नाम पर एक सस्था भी स्थापित की। उस सस्था मे एड्गर के तीस हजार 'हेल्थ रीडिंग्स' और ढाई हजार 'लाइफ रीडिंग्स' के रेकार्ड सुरक्षित रखे हैं, जिनके आधार पर कई प्रकार के सशोधन जारी हैं। वह सस्था एक मासिक बुलेटिन भी प्रकाशित करती है। इस प्रकार एड्गर केसी द्वारा किये गये ढाई हजार 'लाइफ रीडिंग्स' ने भी अमेरिका मे पुनर्जन्म के सिद्धान्त को प्रतिष्ठित करने मे महत्व का योग प्रदान किया है। दो-तीन दशाब्दियो तक तो उसने अमेरिका मे खलबली मचा दी थी।[१८]

१८. उस समय समग्र अमेरिका जिसके पीछे पागल था उस 'मिरेकल मेन ऑफ वर्जिनिया बीच' के ऊपर वहाँ कई पुस्तकें भी लिखी गई, जैसे कि

(i) There Is A River Thomas Sugrue,
(ii) Many Mansions—Dr Gina Cerminara,
(iii) Edger Cayce : Man of Miracles Joseph Millard,
(iv) You Will Survive After Death—Sherwood Eddy,
(v) Venture Inward Hugh Lynn Cayce, (Harper & Row)

अन्त रहित अस्तित्व : आत्मतत्त्व

इस प्रकार, पश्चिम में भी, पुनर्जन्म का सिद्धान्त अधिकाधिक प्रतिष्ठा पा रहा है।[१९] मेलबर्न विश्वविद्यालय के, वर्षों से इस विषय का अध्ययन-संशोधन करने वाले, एक वैज्ञानिक डॉ रेनोर जोन्सन "दि इम्प्रिजण्ड स्प्लेण्डर" नाम की अपनी पुस्तक में परा-मनोवैज्ञानिक संशोधनों की चर्चा का उपसंहार करते हुए लिखते हैं कि 'संक्षेप में, मृत्यु हमारे अस्तित्व का अन्त नहीं लाती ऐसा मानने के लिए हमारे पास पर्याप्त विश्वसनीय प्रमाण हैं।"[२०]

पूर्व जन्म की स्मृति इस जीवन में होती है इस तथ्य ने मात्र पुनर्जन्म को ही सिद्ध नही किया, अपितु, 'हमारी स्मृति रासायनिक परिवर्तनों के द्वारा हमारे मस्तिष्क के कोषों मे संग्रहित हमारी अनुभूतियों के आधार पर ही जगती है' आधुनिक विज्ञान की इस मान्यता को भी ललकारा है। जो शरीर नष्ट हो चुका मिट्टी या

१९. पुनर्जन्म का समर्थक विपुल साहित्य पश्चिम मे प्रकाशित हो रहा है। उनमे से कुछ के नाम फुटनोट १८ मे दिये हैं। उनके अतिरिक्त दूसरे ये हैं

(1) The Problem of Rebirth Hon. Ralph Shirley,
(2) Ring of Return Eva Martin,
(3) Twenty Cases Suggestive of Reincarnation I Stevenson,
(4) After Life Dr. William Wilson,
(5) The Power Within (Chaps. 17 & 18) Dr. Alexander Cannon,
(6) The Imprisoned Splendour (p. p. 270-93 & 375-88) Dr. Raynor Johnson,
(7) Reincarnation—Based on Facts—Dr. Karl E. Muller, (Psychic Press Ltd., 23, Great Queen Street, London)

२०. To sum up : we have enough trustworthy evidence to anticipate our survival of the change called death.
The Imprisoned Splendour, p. 293.

राख में मिल गया—उस जीवन की स्मृतियां भी, उपर्युक्त रीति से जगाई जा सकती हैं। इससे यह बात सिद्ध होती है कि स्मृतियों का आधार शरीर नहीं, परन्तु अगले देह का त्याग कर नया शरीर धारण करने वाला कोई स्वतन्त्र तत्व है।

इस प्रकार गत जन्मों की स्मृति की वास्तविकता तीन बातें सिद्ध करती हैं:

१. ज्ञान का आधार शरीर नहीं है।

२. शरीर से भिन्न अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखने वाला कोई तत्व शरीर में है, और

३. शरीर के नाश के साथ उसका नाश नहीं होता।

न्यूयार्क के एक मानस-चिकित्सक ने तो यहाँ तक कहा है कि "हो सकता है कि जन्म से पहले का मनोविश्लेषण हमे जकड़े हुए विज्ञान के भौतिकवाद की रही सही कड़ियो को नेस्तनाबूद कर दे।"[२१]

शरीर से आत्मा के स्वतन्त्र अस्तित्व को प्रतीति कराने वाला और सामान्य पुनर्जन्म की अपेक्षा एक विशिष्ट प्रकार के उदाहरण का यहाँ उल्लेख करना समुचित होगा। डॉ० बेनर्जी लिखते हैं कि "कुछ वर्ष पहले रसूलपुर मे जसबीर नाम का एक लड़का रात के समय मर गया। उसके माता-पिता की इच्छा थी कि सुबह से पहले उसका अन्तिम संस्कार न किया जाय। इस बीच जसबीर में प्राण होने के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे, और दो तीन दिनों में तो वह बिलकुल स्वस्थ हो गया। परन्तु स्वस्थ होने के पश्चात् उस लड़के का वर्ताव कुछ विचित्रसा हो गया। उस घर का भोजन लेने से भी उसने इन्कार कर दिया। वह कहने लगा कि मैं ब्राह्मण हूँ, और रसूलपुर से २२ मील दूर आये वेहेड़ी गाँव के निवासी शकरलाल त्यागी का

२१. Prenatal psychology may shatter the last fetters with which scientific materialism has bound our minds

A Search for Bridey, Murphy. p. 120.

पुत्र हूँ। इसलिये ऐसी व्यवस्था की गई कि उसकी रसोई एक ब्राह्मण स्त्री बना दे। इस तरह डेढ़ वर्ष बीतने पर एक दिन वेहेड़ी गाँव के एक शिक्षक पण्डित रविदत्त रसूलपुर आये। जसबीर ने उन्हे तत्काल पहचान लिया और शंकरलाल त्यागी के घर और वेहेडो के ग्रामजनो के बारे मे वह उनके साथ बातें करने लगा। इससे सबको आश्चर्य हुआ। उसे वेहेडी गाँव ले जाया गया। वहाँ उसने अनेक ग्रामजनो को पहचान लिया। वहाँ ज्ञात हुआ कि जसबीर में उपर्युक्त परिवर्तन हुआ उसी समय शंकरलाल त्यागी के २५ साल के युवा पुत्र की दुर्घटना में मृत्यु हुई थी।" मानो दुर्घटना में आहत शरीर अपनी अभिव्यक्ति के लिये कार्यक्षम प्रतीत न होने पर उसे छोड़कर उसमें रही आत्मा ने अपनी अभिव्यक्ति के लिये जसबीर का खाली पड़ा चोगा उपयोग मे ले लिया।

देह और आत्मा का सम्बन्ध—विज्ञान की परिभाषा में

आध्यात्मिक विचारधारा से अपरिचित और आधुनिक विज्ञान की परिभाषा से अभ्यस्त व्यक्ति आत्मा और देह का सम्बन्ध टेलीविजन सेट और हाईफ्रिकवन्सी-विद्युत-चुम्बकीय-तरंग की उपमा द्वारा सरलता से समझ सकेगा। टेलीविजन सेट के पर्दे पर दीखती सजीव आकृतियों की हलन-चलन और उसमें से प्रसारित ध्वनि का मूल क्या है यह खोजने के लिये पूरे सेट की बारीकी से जाँच करने पर अन्त में क्या हाथ आता है? उस सेट में आई हुई विविध ट्यूबे, ट्रान्सफॉर्मर आदि अवयव चित्रो और ध्वनि को व्यक्त करने मे किसी न किसी प्रकार सहायक होते हैं, परन्तु उन दोनों (चित्र एवं ध्वनि) की जड तो कुछ भिन्न ही होनी है। जिसका कार्य दिखाई पडता है परन्तु जो स्वय अदृश्य रहती हैं, वे हैं टेलोविजन की हाइफ्रिक-वन्सी' तरगे। उनकी अनुपस्थिति मे चाहे जैसा नया सेट भी न तो चित्र उठा सकता है और न ध्वनि। टेलीविजन की हाइफ्रिकवन्सी तरगे हमारी आखो से अदृश्य रहती है, अन्य किसी इन्द्रिय से भी हम उसे जान नही सकते, परन्तु टेलाविजन सेट मे वे प्रविष्ट होती हैं तब उनकी उपस्थिति हमारे लिये व्यक्त होती है। इसी प्रकार आत्मा हमारी इन्द्रियो से हमें ज्ञात नही होती, परन्तु वह जिसमे व्यक्त हो सके वैसे

सेट–शरीररूपी सेट में प्रविष्ट होती है तभी उसके कार्य पर से उसका अस्तित्व हम जान सकते हैं। उस शरीर रूपी सेट के मस्तिष्क रूपी ट्रान्सफोर्मर और पर्दे पर ज्ञान, ऊर्मि, अनुभूति, स्मृति आदि व्यक्त होते हैं, परन्तु उसका मूल वह ट्रान्सफोर्मर अथवा पर्दा स्वय नही, किन्तु हाइफ्रिकवन्सी तरग स्थानीय चैतन्य शक्ति है। इस चैतन्य शक्ति को हम चाहे जिस नाम से पहचानें, परन्तु इसकी उपस्थिति के बिना 'सेट' सजीव नही बनता। इसके अलावा, टेलीविजन सेट का उपयोग करते करते उसकी ट्यूबें घिस जायँ अथवा ट्रान्सफोर्मर बिगड जाय तव टेलीविजन तरगे उस 'मृत' सेट द्वारा व्यक्त नही हो सकती, परन्तु स्वयं तरगे तो सेट की उस जीर्ण अवस्था से अस्पृष्ट रहती हैं। उसके स्थान पर एक नया सेट रखो तो तरगे उसमे प्रविष्ट हो उस सेट के पर्दे को 'सजीव' बना देंगी। ऐसा ही शरीर और आत्मा के बीच का सम्बन्ध है। पुराना शरीर अपनी अभिव्यक्ति के लिये अयोग्य बनने पर आत्मा नये चोले मे जाकर व्यक्त होती है। पूर्व के शरीर के नाश से उस पर कोई प्रभाव नही पड़ता। आत्मा को व्यक्त होने के लिये (अस्तित्व के लिए नही) शरीर की आवश्यकता होती है, परन्तु शरीर ही आत्मा नही है। शरीर को सजीव **बनाने वाला तत्त्व शरीर से भिन्न है जैसे टेलीविजन सेट से टेलीविजन वेञ्ज।**

☆

४

आधुनिक खगोल और परामनोविज्ञान द्वारा निर्दिष्ट 'परलोक' की झांकी

सर ओलिवर लॉज, प्रो. विलियम मेकार्थी, राइन, एलेक्जेण्डर केनन, रेनोर जोन्सन आदि ने आत्मा के अस्तित्व एवं पुनर्जन्म के सिद्धान्त को अब वैज्ञानिक स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया है। अतएव आज आत्मा और पुनर्जन्म की बात का इन्कार, पूर्वग्रह का परित्याग कर तटस्थ रूप से सोचने वाले व्यक्ति से, सम्भव नही है यह हम देख चुके हैं। अब रहा प्रश्न पुनर्जन्म के स्थान के बारे मे।

प्रियजन की सदा स्नेह बरसाने वाली आखो को जब मनुष्य अन्तिम बार, किसी भी प्रकार का भाव या प्रतिक्रिया बिना प्रकट किये, निश्चेष्ट देखता है, तब, वह नास्तिक हो तो भी उसके मन मे विचार आ ही जाता है कि धर्मशाला का कमरा खाली करके चले जाने वाले यात्री की तरह 'हंस' इस शरीर मे से उड गया है। और सचमुच इसी अवसर पर मनुष्य यह जानने के लिए इच्छुक रहता है कि वह 'प्रियजन' कहाँ गया होगा ? उसका अता-पता कुछ मिल सकता है ? और यदि यह जानकारी देने वाला कोई अतीन्द्रिय ज्ञानी उसे मिल जाय तो ऐसा कौन विरही जन है जो प्रसन्न न हो ?

इस पृथ्वी पर के अपने पुराने निवास स्थान का परित्याग कर चल देने वाले 'विश्व प्रवासियो' का व्यक्तिगत पता दे सकने का अधिकार भले ही कोई अतीन्द्रिय ज्ञानी योगीजन ही रखता हो,

परन्तु वह प्रवासी जिस देश का वासी बनता है उस 'देश' का कुछ परिचय तो आज विज्ञान भी हमे देने लगा है।

चन्द्र पर गये अवकाशयात्री कहते हैं कि वहाँ जीवन के अस्तित्व की कोई सम्भावना नही है। तो क्या मृत्यु के पश्चात् आत्मा पुनः इसी पृथ्वी पर ही अवतरित होती है ? मात्र हमारी इस पृथ्वी पर ही जीवसृष्टि है यह बात धर्मशास्त्रो को मान्य नही है। धर्मशास्त्र तो भारपूर्वक कहते है कि हमारी पृथ्वी की अपेक्षा अत्यन्त विशाल असंख्य 'द्वीपों' पर जीवसृष्टि है। जिनमे से कुछ 'द्वीप' पर तो मानव भी बसा हुआ है। इसके अतिरिक्त, मानव की अपेक्षा अधिक सामर्थ्य एवं ऐश्वर्य सम्पन्न देवों से वसे अनेक देवलोकों की बात भी शास्त्रो मे स्थान स्थान पर आती है। तो चन्द्र पर जीवन न होने की अवकाश यात्रियो की बात और धर्मशास्त्रो की उपर्युक्त बातो का मेल कहाँ रहा ? दोनों मे से सत्य कौन ? ऐसे प्रश्न जिज्ञासु मानव के मन मे उठ सकते हैं। इस उलझन को सुलझाने मे आधुनिक खगोल विज्ञान (astronomy) हमे सहायभूत होता है।

अनन्त ब्रह्माण्ड

जिस चन्द्र पर पहुँचने की वैज्ञानिक बात करते है वह, आधुनिक खगोल विज्ञान के मत से, हमारे सूर्यमण्डल के एक ग्रह–पृथ्वी का एक उपग्रह है। हमारे स्वर्ग गंगा के विश्व मे इस सूर्य के जैसे अरबो तारे-सूर्य हैं, और हमारे सूर्य के आसपास जिस तरह हमारी पृथ्वी और इतर ग्रह चक्कर काटते है, वैसे इन इतर तारो के-सूर्यों के आसपास भी चक्कर काटते ग्रह होगे। तारक विश्व मे हमारे इस सूर्य की भाँति करोड़ो सूर्य होते है। करोडो सूर्य जिनमे आये हो ऐसे तारक विश्व भी सिर्फ एक दो ही नही है। ऐसे तो करोड़ो तारक विश्व अवकाश मे बिखरे हुए हैं, ऐसा आधुनिक खगोल विज्ञान कहता है।

शास्त्रो मे विश्व की अकल्प्य विराटता का चित्र खीचा गया है। इसी प्रकार, टेलीस्कोप और स्पेक्ट्रोस्कोप से सज्ज हो विश्व की क्षितिजो को निहारने मे प्रवृत्त आधुनिक खगोल विज्ञान भी कितना बड़ा ब्रह्माण्ड स्वीकारता है यह हम सर्व प्रथम देखे।

सामान्यतः स्वच्छ रात्रि के समय हम खुली आँख से ३००० तारों को देख सकते हैं, परन्तु खगोलवेत्ताओं का कहना है कि आकाश में असंख्य तारे हैं। हमारा यह चन्द्र जितने आकाश को आच्छादित करता है, अर्थात् अनन्त आकाश मे दृष्टिक्षेप करने पर चन्द्र के कारण हमे जितना आकाश नही दीखता उतने भाग में छः सौ तारक विश्व आये है, और आकाश का एक भी कोना ऐसा नही है जहाँ तारक विश्व न हो।

आकाशगंगा के आश्चर्य

स्थल एवं काल के अत्यन्त विशाल नाप दिखलाने के लिए, दैनन्दिन जीवन-व्यवहार में उपयोग मे ली जाती इकाइयाँ असुविधाजनक एवं अपूर्ण प्रतीत होने पर, धर्म शास्त्रो ने कई इकाइयाँ नियत की हैं शास्त्रो की तरह विज्ञान को भी विराट विश्व मे तारों का एक दूसरे से अन्तर सूचित करने के लिए गणित के आँकडो मे मीलो या किलोमीटरो मे संख्या देने के बदले नये परिमाण देने पड़े हैं। पृथ्वी से तारो का अन्तर बताने के लिये विज्ञान द्वारा स्वीकृत परिमाण है प्रकाशवर्ष। एक प्रकाशवर्ष यानी एक सैकण्ड मे एक लाख छियासी हजार मील लगभग तीन लाख किलोमीटर—के वेग से गति करता प्रकाश एक वर्ष मे जितना अन्तर काटे उतना अन्तर। चन्द्र से पृथ्वी तक—लगभग सवा दो लाख मील अर्थात् ३,८४,००० किलोमीटर—आने मे प्रकाश को लगभग सवा सैकण्ड लगता है। नौ करोड और तीस लाख मील १४ करोड़ ८८ लाख किलोमीटर—दूर रहे सूर्य मे से निकलकर पृथ्वी तक आने मे प्रकाश को करीब आठ मिनिट (५०० सेकण्ड) लगते हैं, और नैप्च्यून के तेज को हमारी आँख तक पहुँचने मे चार प्रकाशघण्टे लगते हैं, अर्थात् पृथ्वी से चन्द्र सवा प्रकाशसैकण्ड, सूर्य लगभग सवा आठ प्रकाशमिनट और नैप्च्यून चार प्रकाशघण्टे दूर कहा जायगा। परन्तु यह तो हमारी अपनी सूर्यमाला की अर्थात् हमारे अपने घर की बात हुई।

हमारे अपने सूर्य से समीपतम दूसरा सूर्य-तारा इतना दूर है कि उसके प्रकाश को हम तक पहुँचने मे चार वर्ष से कुछ अधिक समय लगता है। परन्तु चार वर्ष के पश्चात् प्रकाश की उपलब्धि तो

समीप की समझी जाती है। दूसरे तारो के प्रकाश को हम तक पहुँचने मे पचास, सौ अथवा पाँच सौ वर्ष भी लगते हैं। उदाहरणार्थ, ध्रुव तारे के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुचने मे ४५० वर्ष लगते हैं। अवकाश मे हमारा अपना सूर्य एक एकाकी तारा है। कई स्थानों पर बहुत से तारे मिलकर तारा-गुच्छ बनाते है। ऐसे कितने ही तारा-गुच्छ हमारे तारा-जगत् मे हैं। कुछ नजदीक हैं, तो कुछ दूर। ऐसे अधिक दूर रहे तारो के गुच्छ दूर से देखने पर धूम्रपटल स दीखते है। ऐसे कितने ही तारा-गुच्छ, तारे, निहारिकायें आदि मिलकर हमारा ताराविश्व बना है। अन्दाज ऐसा है कि इसमे छोटे बडे मिलाकर १०० अरब तारे है। ये हमारे आसपास चारो ओर के अवकाश मे—समीप से लेकर दूर तक—बिखरे पड़े है। ये सब मिलकर फूली हुई पूड़ी जैसे आकार का हमारा तारा-जगत् बनाते हैं, जिसका व्यास एक लाख प्रकाश वर्ष है।

हमारे समीपवर्ती एक पड़ोसी तारालोक का नाम एण्ड्रोमिडा-लोक अर्थात् मई ३१ है। खुली आँखो से देखने पर धुएँ के एक दाग जैसा ही यह दीखता है। दूरबीन लगाकर देखने पर ही ज्ञात होता है कि वह एक तारालोक है। वह हमसे २२ लाख प्रकाशवर्ष दूर है। उसका व्यास है दो लाख प्रकाशवर्ष। विशालकाय दूरबीनो से तीन अरब प्रकाशवर्ष दूर रहे तारालोक देखे गये हैं। रेडियो-टेलीस्कोप ने तो इससे भी दूरवर्ती सृष्टि के समाचार मानव को दिये हैं। दस अरब प्रकाशवर्ष दूर से आती और किसी भी तारालोक की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली तरगे रेडियो टेलीस्कोप से पकड़ी गई है। आधुनिक खगोलविज्ञान ने प्रबल रेडियो-तरगो के उन उद्गम स्थानो को नाम दिया है 'क्वेसाई स्टेलर्स' (quasi-stellars) अर्थात् तारा-कल्प, क्योंकि वे न तो तारे हैं, न तारालोक। कोई भी 'क्वेसार' पृथ्वी से एक अरब प्रकाशवर्ष से कम अन्तर पर नही है। इतनी दूरी से 'देखे' जाएँ इतना प्रकाशित कोई सामान्य तारे नही हो सकते, और अधिक से अधिक प्रकाशित तारालोकों की अपेक्षा भी 'क्वेसार्स' तो सौ गुना अधिक प्रकाशित मिलते हैं किन्तु, कद मे तारालोकों की अपेक्षा ये बहुत छोटे होते हैं। गत एक-दो दशको मे एक सौ से भी अधिक 'क्वेसार' उपलब्ध हुए हैं।

जीव-सृष्टि वाले ग्रह

इस प्रकार, विज्ञानमान्य विश्व की सीमाये विस्तृत होती जा रही है। वैज्ञानिक साधनो के द्वारा जितने अवकाश मे दृष्टिक्षेप किया जा सकता है उसमे कितने ग्रहों पर जीवन की शक्यता है? होइल (Hoyle) के मतानुसार हमारे अपने तारालोक के कुल १०० अरब तारो मे से एक करोड तारे ग्रह वाले होगे, और उनमे से दस लाख ग्रहो पर जीव सृष्टि के अस्तित्व की सभावना है। अमेरिकन वैज्ञानिक डॉ० स्टीफेन्स एच० डोल के कथनानुसार अकेले हमारे अपने तारा लोक मे ही जीवन की सम्भावना वाले पृथ्वी जैसे पचास करोड़ ग्रह विद्यमान होगे इनमे से हर दस हजार ग्रहो मे से एक ग्रह 'बुद्धिशाली जीववाला' हो, तब भी पचास हजार ग्रहो पर बुद्धि की उत्कृष्ट लीलाओ की आशा की जा सकती है। दूसरी ज्योतियों में से नियत अन्तर पर स्पन्दन (pulses) आ रहे है ऐसा स्वीकार तो आज वैज्ञानिक कर ही रहे हैं। यद्यपि ये स्पन्दन किस प्रकार उत्पन्न होते है और कहाँ से आते हैं यह गुत्थी अब तक पूरी तरह सुलझाई नही जा सकी है, फिर भी वैज्ञानिक मानते है कि ये स्पन्दन यदि कृत्रिम हो तो उन्हे भेजने वाले हमारी अपेक्षा विज्ञान मे अधिक आगे बढे हुए किसी अन्य ग्रह पर के जीव हो सकते है।

शास्त्रो ने विशाल देवविमान, देवलोक और 'द्वीपो' के जिन अति विशालकाय क्षेत्र विस्तारो का निर्देश किया है उनको स्वीकारने मे अनेक लोग कठिनाई महसूस करते है। आधुनिक खगोलविज्ञान द्वारा निर्णीत तारो के विस्तार के माप भी प्रारम्भ मे वैसे ही लगेगे, परन्तु वे बुद्धि को मान्य रखने पडते है, क्योकि भूमिति त्रिकोण-मिति, रेडियेशन इत्यादि द्वारा मान्य सिद्धान्तो के आधार पर वे निश्चित किये गये हैं। इसके अनुसार, हमारी सूर्यमाला मे आये गुरु ग्रह का व्यास ८०,००० मील है। हमारी पृथ्वी जैसे १३०० ग्रह इस एक ग्रह मे समा जायँ उतना यह बड़ा है। सूर्य का व्यास आठ लाख मील-तेरह लाख बरानवे हजार किलोमीटर है। रोहिणी तारा का व्यास आठ करोड़ मील है, और वृश्चिक मे आये हुए पारिजात

नामक तारा का व्यास ३६ करोड़ मील-साठ करोड किलोमीटर-से अधिक है। इसका कद इतना बड़ा है कि तीन करोड़ सूर्यो को वह अपने मे अँटा सकता है। यह स्वीकार आज का वैज्ञानिक गणित कर रहा है। इससे भी अधिक विराटकाय तारो का अस्तित्व आकाश मे है। ब्रह्ममण्डल-Auriga-नामक तारामण्डल के एक तारा एप्सिलोन Epsilon का व्यास तीन अरब पचहत्तर करोड़ किलोमीटर है। हम यह न भूलें कि यह माप उसके क्षेत्रफल का नही, अपितु व्यास का है। अब इससे भी बहुत बडे तारे का पता चला है, उसका नाम है V ३८१ वृश्चिक। इस तारे का व्यास सूर्य व्यास से ३००० गुना है। हमारी पृथ्वी का व्यास सिर्फ आठ हजार मील है, इस तुलना मे इन तारो के विराट कद और अमेय क्षेत्रफल की भी कुछ कल्पना आ सकेगी।

ऊपर हमने जिसका उल्लेख किया है उन, परामनोविज्ञान के क्षेत्र मे किये जाते 'एज रिग्रेशन' के द्वारा पूर्वजीवन की स्मृति जाग्रत करने के प्रयोगो मे इस पृथ्वी के अतिरिक्त अन्यत्र जीवन बिताने की बात अनेक व्यक्तियो से उपलब्ध हुई है। ऐसे १३८२ प्रयोग करने वाले डॉ० एलेक्झेण्डर केनन आदि के सशोधन के रिपोर्ट देखे तो हमें यह विश्वास हो जायगा कि इस पृथ्वी के अलावा अन्यत्र जीवसृष्टि है। इतना ही नही, शास्त्रो मे वर्णित देवलोक जैसी जीवन परिस्थिति वाले स्थान भी विश्व मे हैं। उनमे से एक दो दृष्टान्त हम यहां देखें।

इस सशोधनकाल मे एलेक्झेण्डर केनन ने 'ट्रान्स' मे रहे हुए एक व्यक्ति से उसके जन्म से पाँच वर्ष पूर्व की स्मृतियाँ जाग्रत करने को कहा। तब उस व्यक्ति ने कहा कि मैं शुक्र पर हूँ। तुम समय का जो नाप बताते हो उससे उलझन पैदा होती है क्योकि तुम्हारी पृथ्वी पर है वैसा समय यहाँ नही है। वहाँ की शुक्र पर की—जीवन की अन्य परिस्थिति के बारे मे उनसे किये गये प्रश्नो के उत्तर से मालूम हुआ कि जीवन की कला सीखना ही वहाँ की मुख्य प्रवृत्ति है। साथ ही उन्होने यह भी सूचित किया कि पृथ्वी पर हम समझते हैं उस अर्थ मे यहाँ कोई धन्धा-रोजगार नही है। वहाँ रात-दिन नही है, पर सदा अत्यन्त तेजस्वी प्रकाश रहता है—इतना अधिक तेजस्वी कि अधिक

से अधिक प्रकाशित दिन मे भी हमारी पृथ्वी का वर्णन "अन्धकाराच्छन्न गृह" के रूप में किया गया।[२२]

'एस्ट्रल वर्ल्ड'

अमेरिका (Pueblo, Colorado) की एक गृहिणी रथ-सिमोन्स ने 'एज रिग्रेशन' के प्रयोग के समय अपने पूर्व भव का ब्योरा देते हुए कहा कि 'मैं 'एस्ट्रल वर्ल्ड' मे हूँ। यहाँ हमे खाने की या सोने की आवश्यकता नही होती और थकान भी नही लगती।'

'वहाँ तुम अपना समय कैसे गुजारती थी ?'

'बस मात्र ···देखते रहना।'

'(कुछ काम नही तो) तुमको समय (दिन) लम्बा नही लगता था ?'

'समय बीतता है ऐसा यहाँ हमे लगता ही नही। तुम्हारे जैसे दिन और रात यहाँ नही हैं।'

२२. We then took the subject's memory back another five years and found that she was then living on the planet Venus Here, however a question arose which caused us some little difficulty at first The subject pointed out that our computations were based upon Earth-time and that this created a confusion because there was no such time-factor on Venus

Some interesting details were given as to the nature of life on Venus. I asked her what went on there, and she replied that instruction in the art of living was the main activity, also she indicated that work as we know it on Earth did not exist on that planet. The medium informed us that the light on Venus was constant and extremely brilliant; so brilliant, in fact, that our Earth was described as the 'dark planet' even on its brightest day

The Power Within, p. 180.

'तुम वहाँ थी तव पृथ्वी पर स्त्रिओं के घर पर क्या हो रहा है यह तुम जानती थी ?'

'मेरा उस ओर लक्ष्य नहीं था। हम चाहे तो जान सकते है।'

'तुम जान सकती हो ?'

'हाँ, चाहूँ तो····तुम (वहाँ हो तो) चाहो वह देख सकते हो···· सब कुछ।'

इच्छामात्र से तुम चाहो वह देख सकती हो ?'

'सकल्प मात्र से··· (वहाँ) तुम सिर्फ विचार करो .. और सब देख पाते हो।'

'तुम दूसरे के मनोभाव जान सकती हो ?'

'यदि मैं उस ओर ध्यान दूँ तो जान सकती हूँ।···· ···· वह क्या चाहता है अथवा क्या सोचता है वह जान सकती हूँ।'

'वहाँ 'एस्ट्रल वर्ल्ड' में वृद्धावस्था, रोग, मृत्यु जैसा कुछ है ?'

'यहाँ मृत्यु नही है। तुम (वहां हो तो) मात्र वहां से अन्तर्हित हो जाओगे····दूसरे जीवन में····चले जाओगे, बस ··वहा मृत्यु नही है।'

'और, कोई रोग ?'

'ना।'

....

"एस्ट्रल वर्ल्ड में तुम थीं तब पृथ्वी पर आये हुए मनुष्यो का भविष्य क्या तुम देख सकती थी ? पृथ्वी पर रहे लोगों को क्या तुम वहाँ से देख सकती थी ? उनका भविष्य में क्या होगा यह तुम जान सकती थी ?

'हाँ'

'तुम यह कैसे कह सकती हो ? एक दृष्टान्त दो।'

'वहाँ रहने वाले को अन्यत्र जन्म लेने से पहले''' मालूम हो जाता है कि उसे वहाँ से जाना है।'''वे देख सकते हैं,'''क्या होने वाला है यह वे लोग '' वहाँ रहे हुए लोग''' देख सकते हैं।[२३]

२३. Did you ever have to eat anything ?
No.
you never had to eat ?
No. never ate, never sleep....never get tired there.

And you didn't sleep ? (p.120).
No. No sleep.
How did you spend all of your time ?
Oh.... . . just ....watching,
Did it seem like it was long time, or did time mean anything ?
No. no night or no day... like you had it. (p. 123).
While you were .. in this astral life, ... could you tell what was going on in Belfast at Brian's house ?
No.
You didn't know ?
I didn't... watch. You could.
You could watch ?
You could....but .. I didn't watch....you could just see....just anything
You could see anything you wanted to see, just by wanting to see it ?
Just willing it....so you just think....you see everything.

....

I see. Could you read his thoughts then, could you read his thoughts all the time ?
... If I thought of it....I could know what he wanted and think. (p. 143).

I see ... was there anything, were there anythings in the astral world such as death, disease, or old age ?
There was no death, there was just a .. passing off... you passed from that existence to another existence. That's all. there was no death.

पाठक यहाँ यह स्मरण रखे कि ये शास्त्रो मे दिये गये वर्णन नही हैं। ये तो हैं आधुनिक परामनोविज्ञान के प्रयोगो के रिपोर्ट। देवलोक के शास्त्रोक्त वर्णन वहाँ रात-दिन नही है, नित्य अत्यन्त तेजस्वी प्रकाश है, प्रत्येक देव को अमुक मर्यादा में अतीन्द्रिय ज्ञान होता है जिससे वह भूत-भविष्य में दृष्टिक्षेप कर सकता है, देवो को आहार और निद्रा की आवश्यकता नही होती, आहार की इच्छा होने पर बिना आहार लिये ही तृप्ति हो जाती है, आयु पूर्ण होने से पूर्व उन्हे यह ज्ञात हो जाता है, देवो को हमारी तरह नौ महीने गर्भवास और उसके बाद बाल्यावस्था में से विकास करते हुए युवावस्था की प्राप्ति करनी नही होती, परन्तु वहाँ उत्पन्न होते ही युवा शरीर प्राप्त होता है आदि के साथ ये तथ्य कितने हूबहू मिलते-जुलते है।

देवलोक मे उत्पन्न होते ही वयस्क युवा शरीर प्राप्त होता है इसका प्रतीति कराने वाला एक दृष्टान्त[२४] यह रहा।

Any disease ?
No. (p. 145)
Could you look at the people on earth and see what was going to happen to them ?
Yes.
You could ?
Yes
You could see the future ?
Yes
I see What makes you say that you could ? Give us an example Because .. .. before. you were born....you would know you would pass . just see things that were going to happen . . they could see ... people knew what was going to happen ...if you were there. (p 151)

A Search for Bridey Murphy, Morey Bernstein.

२४ श्री अरविन्द जानी (अमेरिका मे पेरासाइकोलोजी के प्रोफेसर पूर्व-जन्म की स्मृति आपका खास विषय है) के मुख से सुनी हुई एक बात। आलेखक : श्री सुरेश वकील, 'सदेश' (गुजराती दैनिक) ता० २ नवम्बर, १९६९।

मुझे इस समय मेरी मृत्यु की सुबह याद आती है। दस बजे थे। मेरे माता, पिता–सारा कुटुम्ब मेरे बिस्तरे के चारो ओर था। मेरी छाती मे वेदना असह्य थी। ... वेदना एकदम बढने लगी। बोलना तो दूर, श्वास लेना भी असंभव होने लगा। लाख-लाख बिच्छू एक साथ काटते हो ऐसी भयकर पीडा होने लगी। सारी पृथ्वी डूबती हो ऐसा लगने लगा ... अपार वेदना थी।

अचानक मेरी सारी वेदना दूर हो गई। और मैं कहाँ? मैं अपने घर मे नही थी! मैं एक सुन्दर उद्यान मे आये घने पेड़ की छाया मे सोई हुई थी। मैंने आँखें खोली। आसपास कोई नही था। दूर से एक मनुष्य मेरी ओर आ रहा था। चाँदनी जैसे सफेद वस्त्र उसने पहने थे।

"चलो, उठो, मैं तुमको सब बताऊँ।" मेरे समीप आ उसने कहा।

"यहाँ क्या देखने योग्य है?"

"तुम्हारी जगह और दूसरा भी बहुत कुछ।"

मैंने आहिस्ते से उठने का प्रयत्न किया। बिना तनिक भी पीड़ा के मैं उठ सकी। मैंने चलकर देखा। मैं तेजी से चल सकती थी। मुझे कोई पीड़ा नही थी। मैं बिलकुल स्वस्थ थी।

मेरी दृष्टि मेरे शरीर पर पडी। मेरा शरीर बदल गया था। मेरा शरीर हल्का, तेजस्वी और सुन्दर था।

वह शरीर कहाँ गया? जहन्नम मे गया। मुझे वह शरीर नही चाहिए। उस शरीर मे तो अपार पीडा थी। मुझे अब पीड़ा नही चाहिए। उस शरीर मे मुझे अपने माता पिता तो क्या, मृत्यु के समय जिसे देखने के लिए मैं लालायित थी वह मेरा प्रियतम मिले तब भी मुझे वह शरीर नही चाहिए। उस भयकर वेदना से आज भी मैं काँप उठती हूँ।

सामने से सुन्दर स्त्री-पुरुषो का एक समूह आ रहा था। उनमे से कुछ के हाथ मे वाद्य थे, कुछ गा रहे थे, कुछ लोगो के हाथ मे अत्यन्त सुगन्धित फूलो वाली डालियाँ थी।

"ये सब कौन हैं?" मैंने उस व्यक्ति से पूछा।

'यक्ष, किन्नर, गंधर्व ।'

'कहाँ जाते हैं ?'

'आनन्दयात्रा पर ।'

'मैं उनके साथ जा सकती हूँ ?'

'हाँ'

मैं उनके साथ आनन्दयात्रा मे सम्मिलित हुई । सम्मिलित होते ही मैं पृथ्वी पर की सब चीजें भूल गई ।

शास्त्र में उल्लिखित देवलोक जैसा जीवन विश्व मे कहीं पर है इसका विश्वास इन बातों से नहीं होता ?

चन्द्र के धरातल पर दूसरी सृष्टि !

आधुनिक विज्ञानमान्य सिद्धान्त के अनुसार एक सम्भावना यह भी की जा सकती है कि आज हम जहाँ एक प्रकार की सृष्टि का अनुभव करते हैं वहाँ किसी भिन्न प्रकार की सृष्टि का अस्तित्व हो । भौतिक विज्ञान मानता है कि हमें दृश्य और प्रत्यक्ष अनुभव मे आने वाला जगत् भिन्न भिन्न लम्बाई और कम्पन (फ्रिकवन्सी) युक्त विद्युत चुम्बकीय तरंगो (electro-magnetic radiation) का ही खिलवाड़ है । प्रयोगशाला द्वारा प्राप्त हमारा सारा ज्ञान इन्द्रियों अथवा इन्द्रियग्राह्य जानकारी देने वाले साधनो पर आधारित है । हमारी इन्द्रियाँ विश्व में रही हुई विद्युत चुम्बकीय तरंगो में से अमुक ही तरगो (वाइब्रेशन्स) को पकड़ सकती हैं । हमारी आँख .०००४ सेन्टीमीटर से लेकर ०००७ सेन्टीमीटर की लम्बाई की तरंगो को ग्रहण कर सकती हैं, इससे कम ज्यादा लम्बाई की तरंगो वाली वस्तु हमे दृश्य नहीं होती । दृश्य तरंगो से कुछ अधिक .०००८ से .०३२ सेन्टीमीटर लम्बी इन्फ्रारेड किरणे हमारी आँख पकड़ नही पाती । यद्यपि हमारी चमड़ी पर हम उन्हे गरम स्पर्श के रूप में अनुभव करते हैं । इसी प्रकार .०००३ से ००००१ सेन्टीमीटर

लम्बी अल्ट्रा-वायोलेट किरणे आँख के लिये कुछ छोटी पड़ती हैं, परन्तु फोटोग्राफिक प्लेट पर वे पकड़ी जा सकती है। एक्स-रे इससे भी छोटी है। उससे भी फोटोग्राफिक प्लेट पर चित्र अंकित हो सकता है। इसी प्रकार दृश्य प्रकाश से कम ज्यादा लम्बाई की दूसरी भी विद्युत चुम्बकीय तरगे जैसे कि रेडियम मे से निकलती गामा किरणे, कोस्मिक किरणे, पाउर किरणे, रेडियो एव टेलिविजन किरणे है, जो प्रकाश से मात्र लम्बाई मे ही भिन्न है और आँख से दृश्य न होने पर भी भिन्न भिन्न साधनो से गृहीत हो सकती है। इनमे बाहर की तरगसृष्टि भौतिक विज्ञान के लिये आज अगम्य है।

चन्द्र पर की परिस्थिति का जो दर्शन विज्ञान को आज उपलब्ध हुआ है वह भी विज्ञान की इस मर्यादा के अधीन है। हमारी इन्द्रियाँ और आज के वैज्ञानिक साधन ग्रहण कर पाते है उनसे बाहर की तरंगो को जानने की क्षमता यदि हमे प्राप्त हो तो, हो सकता है कि किसी भिन्न सृष्टि का ही हमे यहाँ दर्शन हो, इस बात का स्वीकार आज विज्ञान भी कर रहा है।[२५]

अलग-अलग लंम्बाई के विद्युत-चुम्बकीय तरगो के द्वारा पदार्थ के पाये जाते दर्शन भिन्न भिन्न प्रकार के होते है। फलतः विज्ञान आज जिन तरगो को ग्रहण नही कर पाया वे कल गृहीत हो तो आज उजाड़ दीखते चन्द्रमा पर कोई नई ही जीवन लीला के दर्शन क्या नही हो सकते ? चन्द्र पर की सृष्टि विषयक विज्ञान का आज

२५. These philosophical subtlties have a profound bearing on modern science For the human eye is sensitive only to the narrow band of radiation that falls between the red and violet It is evident, therefore, that .what man can perceive of the reality around him is distorted and enfeebled by the limitations of his organ of vision The world would appear far different to him if his eyes were sensitive, for example, to X-rays.

The Universe and Dr Einstein, p 23.

का दर्शन कल सर्वथा बदल जाय ऐसी सम्भावना का इन्कार करना संभव नहीं।

'लण्डन सोसाइटी फोर साइकिकल रिसर्च' के अध्यक्ष (१९४५) श्री जी एन एम. टेरिल ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा था कि "जगत् को ग्रहण करने की हमारी इन्द्रियो की शक्ति की जहाँ मर्यादा आ जाय वही प्रकृति की लीला भी रुक जाय और उस सीमा से बाहर कोई भिन्न नियम प्रवर्तित न हो; ऐसा मानने के लिए कोई प्रमाण नही।"[२६]

जहाँ एक प्रकार की सृष्टि का अनुभव हमे होता हो वहाँ उससे विलक्षण सृष्टि के अस्तित्व की बात मानने मे कुछ कठिनाई महसूस होती हो तो, इसे सरलता से समझने के लिए, हम अपने ही अनुभव की एक बात लें। हम जिस कमरे मे बैठे हो वहाँ यदि रेडियो न हो तो आसपास बैठे व्यक्तियो के और नजदीक से आने वाली दूसरी आवाजो के अतिरिक्त अन्य आवाज के अस्तित्व का हमें ख्याल तक नही होता। फिर भी दिल्ली से, बड़ौदा से, लण्डन से, न्यूयॉर्क से, मास्को से अथवा टोकियो से ब्रॉडकास्ट हो रही विविध आवाज, बिना एक दूसरे मे विक्षेप डाले, उसी वातावरण में पडी है। हमारे कान अमुक तरगे–एक सैकण्ड मे १६ से ३२,७६८ कम्पनयुक्त तरगे–पकड़ सकते है। इससे अधिक कम्पन (फ्रिकवन्सी) और अधिक लम्बाई (वेव-लेंग्थ) वाली तरंग हमारे लिए अश्राव्य होती हैं। ट्रांजिस्टर उन तरंगो को पकड़ कर हमारे कान जिन्हें ग्रहण कर सकें वैसी तरगों मे रूपान्तरित करता है तब हमे उनके अस्तित्व का ज्ञान होता है। यही बात इतर इन्द्रियो को भी लागू होती है। प्रत्येक इन्द्रिय की अपनी मर्यादा है। कान की तरह आख भी अमुक

२६. There is no reason why nature should terminate at the point where our senses cease to register it, and no reason why, beyond this point, it would not be governed by unfamiliar laws

Proceedings of London Society for Psychical Research, Vol 47, p 301.

(.००००४ सेन्टीमीटर से .००००७ सेन्टीमीटर लम्बी तरंगो द्वारा व्यक्त होता) रूप ही पकड सकती हैं। हमारे आसपास के वातावरण में हम देख सकते हैं उन 'रूपाकृतियों' के अतिरिक्त इतर 'रूपाकृतियाँ' है ही नही ऐसा नही कहा जा सकता। टेलिविजन सेट के पर्दे पर चित्र कैसे उठते है? इस सेट में ऐसी करामात है कि हमारी आँख जिस 'रूप' को पकड नही सकती, उसी 'रूप' को वह वातावरण में से पकड सकता है, और फिर हमारी आँख ग्रहण कर सके वैसे ढाँचे मे से उसे ढालकर हमारे समक्ष उसे पर्दे पर उपस्थित करता है।

अब, हमारी इन इन्द्रियो मे ही यदि ऐसा परिवर्तन लाया जा सके कि आज वे जिन तरंगो को ग्रहण कर सकती हैं उनसे भिन्न तरंगे भी वे ग्रहण कर सकें, तो इन इन्द्रियो के समक्ष की वर्तमान मे दृष्ट सृष्टि लुप्त हो नई सृष्टि उनसे दीखने लगेगी। योगी कहते हैं कि अमुक प्राणायाम के अनन्तर पृथ्वी पर चलने पर भी पृथ्वी का स्पर्श प्रतीत नही हो पाता; अर्थात् विद्युत-चुम्बकीय तरंगो की ग्राहकता की अपनी स्पर्शेन्द्रिय की 'रेन्ज' उससे बदल जाती है। बिना प्राणायाम के विशेषज्ञ के निर्देशन के अथवा अत्यन्त उत्साह मे आकर मात्रा से अधिक परिमाण मे किये जाते प्राणायाम के भयस्थानो का निर्देश करते हुए एक योगी (यदि मैं भूलता न हूँ तो यूरोप मे अत्यन्त लोकप्रिय बनी पुस्तक "योग एण्ड हेल्थ" के लेखक सल्वराज येसुदिन) ने अपनी छोटी उम्र मे हुए ऐसे एक स्वानुभव का उल्लेख किया है। शनैः शनैः क्रम बढावें के बदले उन्होने प्रारम्भ मे ही एक साथ पौन घण्टे तक एक प्राणायाम किया। उसके बाद आसन पर से उठते समय उन्हे ज्ञात हुआ कि उनकी स्पर्श की शक्ति चली गई है। इससे उन्हे चिन्ता होने लगी। करीब पन्द्रह मिनट के बाद नीचे की धरती का स्पर्श पुनः अनुभव किया तब उन्हे समाधान हुआ। वेरा स्टेन्ली ऑल्डरने प्राणायाम की सहायता से भारी वजन भी फूल सा हल्का कैसे बन जाता है उसका एक प्रयोग अपनी पुस्तक 'दि फाईन्डिग ऑफ दि थर्ड आई' (पृ० ९५) में दिया है। उन्होनें यह भी सूचित किया है कि एक मिनट मे छब्बीस

हल्के श्वासोच्छ्वास लेने से थोडी देर के बाद किसी पीडा का अनुभव नही होता ।

इन तथ्यों पर चिन्तन करने से हमे यह प्रतीत होगा कि जगत् का हमारा दर्शन केवल पदार्थलक्षी-objective अर्थात् द्रष्टानिरपेक्ष वास्तविक वस्तुदर्शन नही हो सकता । किन्तु यह दर्शन बहुत अंश मे आत्मलक्षी-subjective याने द्रष्टासापेक्ष रहता है ।

अन्वेषण की अपूर्णता

रेनोर जोन्सन का कहना है कि "इन्द्रियों से अनुभूत जगत् का चित्र जीवन के दैनन्दिन व्यवहार के लिए पर्याप्त है, परन्तु जब हम उसके रहस्य तक पहुँचना चाहते है तब उससे ऊपर की भूमिका से अवलोकन करना पड़ता है; और तब हमे एक नई ही दुनियाँ के दर्शन होते हैं, जिसका, हमे परिचित जगत् तो मात्र एक पहलू ही है । . .नीचे की भूमिका के दृष्टिकोण से, ऊपर की किसी भूमिका के अस्तित्व का बोध न हो, इतना ही नही, उसकी सम्भावना का विचार तक काल्पनिक और रहस्यमय लग सकता है । किसी भी अन्वेषण की स्वाभाविक अपूर्णता का सकेत इसमे से मिलता है । भौतिक विज्ञान ने मात्र एक भूमिका पर से–इन्द्रियानुभूत भौतिक भूमिका पर से–प्राप्त जानकारी का अन्वेषण किया है । अतएव भौतिक जगत् को सम्पूर्णता समझने के लिए किसी उच्च स्तर पर पहुँचकर उस स्तर पर से हमें उसका मूल्यांकन करना चाहिये ।"[२७]

आज परामनोवैज्ञानिक अपने संशोधन कार्य में मानव मन की अतीन्द्रिय ज्ञान-शक्ति का उपयोग कर रहा है । फलतः इन्द्रियों की पहुँच से बाहर के जगत् में विज्ञान अब प्रवेश करने लगा है ।

२७ The common sense picture of the world is adequate for the ordinary business of living, but as soon as we want to know meanings, we have got to approach on a higher level of significance, and then we discover a world very unlike the familiar one—a world of which, the latter is only a partial aspect .. From the view point of a lower grade of significance, the very existence of any higher grade may be unrecogni-

ऐसे संशोधनो के आधार पर एलेक्जेंडर केनन कहते है कि "....पृथ्वी केवल भौतिक देहधारियों से ही बसी है ऐसा नही है; परन्तु अन्य सूक्ष्म (एस्ट्रल और ईथिरिक) देहधारियो का भी उस पर निवास है। चेतना के अन्य स्तरो के अस्तित्व की तथा, एक दूसरे मे ओतप्रोत लेकिन परस्पर के ज्ञात सम्पर्क से रहित, एक के भीतर दूसरी दुनियाँ के अस्तित्व का मात्र निदश ही नही, परन्तु इस विषय में किसी भी प्रकार की आशंका के लिये अवकाश हो न हो ऐसी प्रतीति भी मुझे हुई है।"[२८] हमारी धरती पर व्यन्तर देव बसते हैं इस शास्त्रोक्त मान्यता को इस विधान से एक वैज्ञानिक-केनन साइकोग्राफ[२९] के शोधक-के द्वारा पुष्टि मिलती है।

पहले का वैज्ञानिक अपने प्रयोगो मे टेस्ट ट्यूब और सूक्ष्म दर्शक यन्त्र का उपयोग करता था वैसे अब वह अपने प्रयोगो के साधन के

sed, and even to postulate it may seem imaginative or mystical. This general standpoint indicates the inherent limitations present in any type of enquiry.

Natural science has ordered and classified and correlated data on one level of significance : the physical level or level of sense-data ... so fully to understand the physical world, we must penetrate into and interpret from a higher significant grade The Imprisoned Splendour, pp 103-4.

२८. All the subjects so far used have stated that the Earth is populated not only with physical beings but also with astral and etheric beings .... . The existence of other levels of consciousness, and the words within worlds which are interpenetrating but not in mutual conscious contact, has not only been stated by the subjects as a matter of fact, but has also been demonstrated by them in ways which permit of no doubt in the matter.

The Power Within, pp. 185-6.

तौर पर मानव मन का भी उपयोग कर रहा है। इस प्रकार हो रहे शृंखलाबद्ध संशोधनों के परिणामस्वरूप विज्ञान आज उन सत्यों का उच्चारण कर रहा है जिनको गत शताब्दी का विज्ञान 'अध्यात्म-वादियो की मूर्खतापूर्ण भ्रान्ति' कहकर अवमानित करता था।

२९. हमारी श्वसनक्रिया और विचारप्रक्रिया का परस्पर निश्चित प्रकार का सम्बन्ध है, इस सिद्धान्त के आधार पर, इस यन्त्र के द्वारा मस्तिष्क की विभिन्न अवस्थाओ का निर्देश पाया जा सकता है जैसे कि कार्डियोग्राम द्वारा हृदय की गति का। इस यन्त्र का मुखौटा (मास्क) पहनने के पश्चात् यन्त्र द्वारा अंकित आलेख (ग्राफ) पर से उस व्यक्ति के चित्त की विविध अवस्थाओ का निर्देश मिल सकता है, जैसे कि वह शान्त है या चिन्ताग्रस्त, गहरे विचार मे मग्न है या तन्द्रा मे, एकाग्र है या विक्षिप्त, ध्यान में लीन है या निद्रा मे, इत्यादि। (अधिक ब्योरे के लिये देखें 'दि पावर विदिन' पृ० ७९/९५).

५

हमारा प्राण प्रश्न

बीसवी सदी के विज्ञान का प्रस्थान ज्ञात-अज्ञात भाव से अध्यात्म की छावनी की ओर हो चुका है। इस वस्तुस्थिति का निर्देश करते हुए डा० पॉल ब्रन्टन ने लिखा है कि "प्रथम विश्वयुद्ध के अनन्तर भौतिक विज्ञानो में एक शान्त क्रान्ति हो रही है। उन्नीसवी शताब्दि का सीधा सादा जड़वाद अब विश्वसनीय नही रहा। 'थीयरी ऑफ रिलेटिवीटी', 'क्वोन्टम थीयरी' और 'वेव मेकेनिक्स' विश्व का हमारा दृष्टिकोण बदल रहे है तब आज के युग मे वह असंगत एवं तिरस्कृत बन चुका है। जब ठोस अणु का इलेक्ट्रिक चार्ज मे रूपान्तर किया गया और उसके बाद शुद्ध ईथर मे वह विलीन किया गया तब जड़वादी का 'पदार्थ' उससे छिन गया। प्राचीन काल के बेबिलोनिया, इजिप्त और भारत के ज्ञानी पुरुषों के बोध को समझने-समझाने का प्रारम्भ हमने कर दिया है, परन्तु हम यह कार्य आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति के प्रकाश के द्वारा कर रहे हैं। स्मृति पट पर से विलुप्त प्राचीनो ने जो बातें कही थी उन्ही का, परन्तु तनिक भिन्न रूप से, पुनरुच्चारण करने का प्रारम्भ विज्ञान कर रहा है, इसके सूचक प्रमाण बढते जा रहे हैं।"[३०]

३०. A silent revolution has been taking place in physical sciences ever since the Great War. The naive materialism of the nineteenth century no longer appears credible and is pitifully out of date, while the theory of relativity, the quantum theory and wave mechanics are transforming our view of the

बीसवी शताब्दि की नई खोजो के फलस्वरूप बुद्धिशाली मनुष्य को यह समझने का अवसर मिला है कि ज्ञानी पुरुषो ने हजारो साल पहले जो तत्त्वनिरूपण किया था उस ओर आज विज्ञान लडखड़ाता हुआ आ रहा है।

आत्म विशुद्धि के द्वारा प्राप्य प्रज्ञा का प्रत्यक्ष प्रमाण

क्रेस्कोग्राफ का आविष्कार कर, उसके द्वारा, वनस्पति भी हमारी ही तरह सुख-दु.ख का सवेदन करती है इसका सबूत विज्ञान युग को सर जगदीशचन्द्र बसु ने दिया। विज्ञान जगत् मे यह एक महत्त्व की खोज मानी गई और उससे जगदीशचन्द्र बसु ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। बुद्धिवादी समझे जाने वाले पाश्चात्य जगत् को जिस बात ने आश्चर्यमुग्ध बना दिया उस तथ्य से तो जैन जगत् का अशिक्षित मानव भी चिर परिचित था, क्योकि वनस्पति में जीव का अस्तित्व है और हमारे स्पर्श से भी उसे अत्यन्त दु.ख होता है यह बात भगवान् महावीर जैसे भारत के आर्ष द्रष्टाओ ने आज से ढाई हजार वर्ष पहले विश्व को बतलाई थी; और यह ज्ञान जैन कुल में उत्पन्न बालक को जन्म घुँटी मे ही प्राप्त हो जाता है।

बिना किसी भी बाह्य साधन-सामग्री (apparatus) के, मात्र आत्मशुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान की आन्तरिक शक्ति के बल पर, केवल विश्वकल्याण के लिए ज्ञानियो ने जो सत्य विश्व को प्रदान किये हैं उसमे से ऐसे अनेक सत्य, शताब्दियों के पश्चात् प्रयोगों से सिद्ध तथ्यो के आधार पर, आधुनिक विज्ञान को अतंतोगत्वा स्वीकारने पड़े हैं।

universe When the solid atom was broken up into electric charge and then dissolved into prestine ether, the materialist was robbed of his matter! We are beginning to expound the doctrines of ancients, the teachings of Babylonia, Egypt and India, but we are doing so by the light of modern scientific progress. Evidence accumulates that science is beginning to say the same thing as those forgotten ancients, albeit in a different way.

– The Quest of the Overself, p. 38

ज्ञानी किसी भी बाह्य उपकरण के अभाव मे भी सृष्टि के अन्तस्तल में निहित गूढ रहस्य देख सके थे, इसका अधिकाधिक प्रमाण स्वयं विज्ञान ही प्रतिदिन प्रस्तुत कर रहा है। आज जो वैज्ञानिक संशोधन हो रहे हैं उनमे बिना गहरे उतरे ही, हमारे अपने दैनन्दिन जीवन व्यवहार मे भी, इसके प्रमाण सजग मनुष्य को उपलब्ध हो सकते है।

आजकल अपराधो की तलाश में कुत्तो का प्रयोग हो रहा है, यह हम जानते है। ये कुत्ते अपराधियो को किस तरह ढूंढते है यह कया जानते हो? कुत्ता मनुष्य को उसकी शरीर की गन्ध पर से पहचान जाता है। उसकी इस शक्ति का यहाँ उपयोग किया जाता है। अपराध शोधक कुत्ते को अपराध के स्थान पर ले जाकर अपराधी ने जिसका उपयोग किया हो वैसी कोई वस्तु उसका वहाँ रह गया कपड़ा, चप्पल, जूता, रूमाल आदि उसे सुंघाई जाती है। उसके बाद वैसी गन्ध जहाँ से आती हो वहाँ यह कुत्ता जाता है। इस प्रकार अपराधी जिस मार्ग से गया हो उस मार्ग से वह कुत्ता पीछा करता हुआ अपराधी की टोह पुलिस को देता है। बारह घण्टे तक, अथवा अधिक से अधिक चौबीस घण्टे तक यह सभव होता है। इस प्रकार, मनुष्य जहाँ से सीर्फ गुजरा हो वहाँ भी उसके परमाणु बारह घण्टे तक कुत्ते की घ्राणेन्द्रिय ग्रहण कर सके उतनी मात्रा मे विद्यमान रहते है, तो वह जहाँ बैठा हो वहाँ उसके परमाणु सविशेष मात्रा में रहे और वे विजातीय व्यक्ति के नाड़ीतत्र पर कुछ विकारी प्रभाव पैदा करें यह समझ मे आ सके वैसी बात है। इसीलिए ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए बताये गये नियमो मे भगवान् महावीर ने यह भी सूचन किया कि स्त्री के आसन का पुरुष और पुरुष के आसन का स्त्री अमुक समय तक उपयोग न करे। उनका ज्ञान कितना गहरा और तलस्पर्शी था इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें इस विधान मे दृष्टिगोचर होता है।

वैज्ञानिक और धार्मिक एक दूसरे को समझने की धीरज रखें

ढाई हजार वर्ष पहले, बिना किसी वैज्ञानिक साधन के, प्रकृति का यह रहस्य जिस प्रज्ञा ने प्राप्त किया उस प्रज्ञा द्वारा निरुपित

अन्य कोई बात आधुनिक विज्ञान से भिन्न प्रतीत होती हो तो वहाँ विज्ञान पर आस्था रखने वाले को भी जल्दबाजी से किसी निर्णय पर आ जाने के बजाय, सत्य क्या है यह समझने के लिए मन उन्मुक्त रखना क्या समुचित नही ?

अपने को बुद्धिवादी बताने वाले लोगो के सामने अपने भूतपूर्व राष्ट्रपति सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का आक्षेप है कि 'बुद्धिवादी मनुष्य जिन वादों और सिद्धान्तो का स्वयं ने खंडन किया मानता है उन वादो व सिद्धान्तों मे उसको आवेश, जिद्द और संकुचितता के दूषण दीखते हैं। किन्तु कितनी ही बार स्वय मे भी, विज्ञान की प्रमाणिकता का गुणगान करते समय वे ही दूषण आ जाते हैं"[31]

दूसरी ओर धर्मशास्त्रों पर आस्था रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह समझ लेना चाहिए कि शास्त्रो के आधार पर निर्मित अपनी मान्यता के साथ मेल न रखने वाला कोई नया विचार विज्ञान जगत् में से अपने सम्मुख उपस्थित हो तब उसकी वैज्ञानिक पार्श्वभूमिका को बिना समझे, मात्र विरोध के लिए विरोध करने की वृत्ति से, न तो विज्ञान के ऊपर आस्था रखने वाले के हृदय मे शास्त्र पर श्रद्धा पैदा की जा सकती, और न इस तरह अपने आप्त पुरुषो की प्रतिष्ठा बढ़ाई जा सकती है। वैज्ञानिको के द्वारा, जानबूझ कर नहीं, परन्तु अज्ञानवश, असत्य निरूपण की सम्भावना है, परन्तु उनमे सत्य प्राप्त करने की अत्युत्कट अभिलाषा होती है और वे तथ्यो का तटस्थ अवलोकन, पृथक्करण और मूल्याकन करते है यह तो स्वीकारना ही होगा। यह तो सब कोई जानते है कि विज्ञान प्रयोग की कसौटी पर कसने के बाद ही किसी भी सिद्धान्त को मानता है। इस बात की यथार्थता की प्रतीति, विज्ञान के सिद्धान्तो पर आधारित खोजो एवं आविष्कारो तथा उनके द्वारा प्राप्त सुख सुविधाओ से, दैनन्दिन जीवन व्यवहार मे हम प्रति दिन कर रहे हैं।

३१. धर्मों का मिलन, पृष्ठ ३२.

ऐसा होने पर भी, धर्मशास्त्र-अर्थात् ज्ञानियो द्वारा बताये गये स्वरूप प्राप्ति (मुक्ति) के विज्ञान के ग्रन्थो-पर आस्था रखने वाला व्यक्ति अर्वाचीन विज्ञान की आज की बात को अन्तिम सत्य के रूप मे स्वीकार करने मे हिचकिचाये यह स्वाभाविक है, क्योकि विज्ञान एक ऐसी नदी है जिसमे नित्य नई नई तरगे उठा करती हैं। काल-प्रवाह के साथ-साथ विज्ञान की मान्यताएँ भी परिवर्तित होती रहती हैं, यह तथ्य विज्ञान की कण्ठी बाँधने वाले को भी स्वीकारना ही होगा।

विज्ञान की परिवर्तनशीलता

आज से सौ साल पहले इलैक्ट्रिसिटी-विद्युत और चुम्बकत्व ये दोनो भिन्न भिन्न शक्तियाँ मानी जाती थी, परन्तु गत शताब्दि में ओस्टर्ड और फेराडे ने प्रयोगो द्वारा यह सिद्ध किया कि विद्युत का प्रवाह सर्वदा चुम्बकीय क्षेत्र से लिपटा हुआ है, और अमुक परिस्थिति में चुम्बकीय बल विद्युतप्रवाह पैदा करते हैं। इन प्रयोगो से 'इलैक्ट्रो-मैग्नेटिक फील्ड' की खोज हुई, और विद्युत एवं चुम्बकत्व ये दोनो मूलत. एक ही शक्ति है ऐसी मान्यता रूढ हुई।

और, वैज्ञानिक मान्यताओ मे से सभी मान्यताएँ प्रयोग के आधार पर ही स्थापित नही हुई। वैज्ञानिक सिद्धान्तो के भी दो पहलू हैं: एक प्रयोगो के आधार पर स्थापित और दूसरा गणित के आधार पर स्वीकृत। आधुनिक भौतिक विज्ञान के अत्यन्त मान्य सिद्धात– क्वोन्टम थीयरी', 'थीयरी ऑफ रेलेटिविटी' और यूनिफाइड फील्ड थीयरी'–गणित के आधार पर स्थापित किये गये हैं।[३२] गणित

३२. (1) All attempts failed until Plank found by mathematical means an equation ... The extra ordinary feature of his equation was that *it rested on the assumption* that radiant energy is emitted not in an unbroken stream but in discontinuous bits or portions which he termed quanta

Plank had no evidence for such an assumption, for no one knew anything (then or now) of the actual mechanism of radiation.

The Universe and Dr Einstein, (Mentor edition, 1955), p.25.

के आधार पर प्रतिष्ठित कितने ही सिद्धान्त समय बीतने पर अपूर्ण प्रतीत हुए हैं, और तब, उनके आधार पर निर्मित अनेक नियमो का भी परिमार्जन करना पड़ा है।

दो शताब्दियों से भी अधिक समय के प्रयोग और सिद्धान्त यह बात भारपूर्वक कहते थे कि प्रकाश की तरंगें हैं, फिर भी आइन्स्टाइन के फोटोइलेक्ट्रिक के नियम ने यह उतनी ही प्रबलता से प्रमाणित किया कि प्रकाश के कण (फोटोन) हैं। इसी प्रकार सन् १९२५ में फ्रान्स के युवा भौतिकशास्त्री लूई-द-ब्रोग्ली ने सूचित किया कि इलेक्ट्रोन को कण (particle) न मानकर तरंगो की एक रचनाविशेष मानें तो दूसरी कई गुत्थियाँ सुलझ सकती हैं। इस साहसिक कल्पना ने, क्वोन्टम सिद्धान्त विषयक इससे पूर्व दो दशाब्दी के संशोधन, जिनके आधार पर पदार्थ के मूलभूत घटक के कणों के बारे में वैज्ञानिकों ने अमुक निश्चित धारणाएँ बना ली थी, उनको फिकवा दिये।[33] ऐसा ही यूनिफाइड फील्ड थीअरी के बारे मे भी हुआ। आइन्स्टाइन ने सर्व प्रथम सन् १९२९ मे इस थीयरी के बारे में अपना सिद्धान्त प्रकट किया। बाद मे, वह अपूर्ण प्रतीत होने पर स्वयं आइन्स्टाइन ने ही इसे अप्रमाणित घोषित किया, और सन् १९४९ मे नई थीयरी उपस्थित की। सन् १९४८ मे हर्मन बोण्डी, थोमस गोल्ड और फ्रेड होइल ने विश्व की उत्पत्ति का प्रतिपादन

(ii) The Unified Field Theory....sets forth in one *Series of mutually consistent equations* the physical laws governing the two fundamental forces of the universe, gravitation and electro-magnetism. ibid, p 14,

३३. This audacious concept flouted two decades of quantum research in which physicists had build up rather specific ideas about the elementary particles of matter

ibid, p. 30,

करती 'स्टेडी स्टेट थीयरी' Steady State Theory स्थापित की, परन्तु इस सिद्धान्त के प्रमुख प्रतिष्ठापक फ्रेड होइल ने ही सन् १९६५ मे घोषित किया कि उनका सिद्धान्त भ्रान्त था। इसी प्रकार इलेक्ट्रोन, जो सन् १९२५ तक पदार्थ (matter) के अन्तिम घटकतत्त्व और 'विश्व की नींव के अविनश्वर आधार' the imperishable foundation stones of the universe'— समझे जाते थे, आज केवल 'इलेक्ट्रिकल चार्ज' मात्र बन गये हैं।

वैज्ञानिक सिद्धान्तो की अस्थिरता के बारे मे आज स्वय वैज्ञानिक भी सजग हैं। ब्रिटिश भौतिकशास्त्री सर जेम्स जिन्स ने कहा है कि "आज हम यह अनुमान करने के लिए प्रेरित हुए हैं, परन्तु यह कौन जानता है कि ज्ञान-सरिता आगे चलकर अभी कितनी मोड लेगी? .. आज तक हमने जो कुछ कहा है और जो कोई कार्यकारी निर्णय प्रस्तुत किये हैं वे सब अनिश्चित हैं, और सत्य कहे तो मात्र कल्पना की उड़ान हैं।"[३४]

तत्त्वज्ञान की ओर गतिशील विज्ञान

विज्ञान का एक शोभास्पद पहलू यह रहा है कि वह अपनी भूल स्वीकार करने मे सदा तैयार रहता है। आज सत्य के रूप मे वह जिस की पूजा करता है, वह भी अगर समय बीतने पर मिथ्या ज्ञात हो तो, उसे फेंक देने मैं वह हिचकिचाता नही। फलत: वह जड़वाद की पकड़ में से बाहर आ रहा है। उन्नीसवी सदी का वैज्ञानिक जैसा जड़वादी था वैसा आज का वैज्ञानिक नही रहा। मेक्स प्लेक की क्वोन्टम थीयरी, आइन्स्टाइन की थीयरी ऑफ रिलेटीविटी और उसके बाद यूनिफाइड फील्ड थीयरी की स्वीकृति के पश्चात् आज का वैज्ञानिक उन्नीसवी शताब्दी के वैज्ञानिक की भाँति सीना तान

३४. .... So at least we are tempted to conjucture to-day, and yet who knows, how many more times the stream of knowledge may turn on itself ? ... .. everything that has been said, and every conclusion that has been tentatively put forward is quite frankly speculative and nncertain.

James Jeans, Mysterious Universe, p 138.

कर यह नही कहता कि मैं जो कहता हूँ वही अन्तिम सत्य है। उसे स्वयं अपनी मर्यादा का भान हो चुका है।[३५]

क्वोन्टम थीयरी के प्रतिष्ठापक मेक्स प्लेंक का कहना है कि "हम एक गुत्थी सुलझाते है तो उससे भी अधिक उलझन भरी गुत्थी सामने आ खड़ी होती है। .... उत्तुंग पर्वत पर के आरोहण में, तलहटी से ऊपर चढ़ते समय पर्वत का प्रत्येक शिखर हमें उससे ऊँचे दूसरे शिखर का दर्शन कराता है, ठीक इसी तरह .... एक अत्यन्त रहस्यमय तत्त्व है, जो प्रत्येक पुरुषार्थ से बार बार परे रहता है।" एडिंग्टन जैसे अग्रणी वैज्ञानिक कहते है कि इस भौतिक जगत् का चेतना के साथ अनुसंधान न करें तो यह एक कल्पना ही रहेगा।

आइन्स्टाइन जैसे प्रथम कक्षा के वैज्ञानिक ने भी कहा है कि "वैश्विक आध्यात्मिक अनुभव वैज्ञानिक संशोधन का अत्युत्तम और प्रबल आधार-मूल है।... ....अगम्य का संवेदन हमारे अनुभव में आने वाली गहनतम और परम सौन्दर्यपूर्ण ऊर्मि है। समग्र सत्य विज्ञान का उद्भव उसी में से होता है। इस ऊर्मि से जो अपरिचित है, (विश्व मे विलसित अगम्य तत्त्व के भान से) जो आश्चर्यमुग्ध हृदय से गहरे अहोभाव में विलीन नही हो जाता वह निष्प्राण है।"[३६]

३५. ... It would be difficult to-day to find any scientist who imagines himself, because of his ability to discern previous errors, in a position to enunciate final truths. On the contrary, modern theorists are aware, as Newton was, that they stand on the shoulders of giants and that their particular perspective may appear as distorted to posterity as that of their predecessors seemed to them.

The Universe and Dr. Einstein, (Mentor edition, 1955), p. 124.

३६. The cosmic religious experience is the strongest and noblest main spring of scientific research .... The most beautiful and most profound emotion we can experience is the sensation of the mystical. It is the sower of all true science. He to whom this emotion is a stranger, who can no longer wonder and stand rapt in awe, is as good as dead.

Dr. Albert Einstein, ibid, p. 117.

एक दिन स्वयं विज्ञान ही तत्त्वज्ञानियों द्वारा निरूपित सत्यों को उद्घोषित करेगा ऐसी संभावना पश्चिम के विचारक आज देख रहे हैं। आध्यात्मिक भारत के ज्ञानी पुरुषों के प्रति अहोभाव व्यक्त करते हुए वे कहते हैं कि 'यह खास उल्लेखनीय है कि विज्ञान भी ज्ञात-अज्ञात भाव से तत्त्वज्ञान की छावनी की ओर गतिशील है। क्योंकि आइन्स्टाइन, प्लेंक, हाइजनबर्ग, जिन्स और दूसरे अग्रगण्य वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित विज्ञान के नवीनतम सिद्धांतों का प्रतिपादन भारत के ऋषियों द्वारा उस समय हुआ था जब कि पाश्चात्य संस्कृति अपनी बाल्यावस्था में मिट्टी में खेलती थी'।[३७]

इस परिस्थिति में, यह तो स्पष्ट है कि, विज्ञान की सभी उक्तियों को बिना शंका किये या प्रश्न उठाये ज्यों की त्यों मान लेने का आग्रह तो रखा ही नहीं जा सकता। भौतिक क्षेत्र में विज्ञान ने चाहे जितनी विराट सिद्धियाँ क्यों न पाई हों, परन्तु आध्यात्मिक क्षेत्र में तो वह अभी रेंगता हुआ बालक ही है, यह बात भूलनी नहीं चाहिए।

यह जागृति धार्मिक क्षेत्र में भी आवश्यक

दूसरी ओर धार्मिक लोगों को भी अब इस वस्तु स्थिति के बारे में उदासीन नहीं रहना चाहिए कि नई पीढ़ी की धर्मश्रद्धा सुरक्षित रखने के लिए उसकी बुद्धि का समाधान करना आज आवश्यक हो गया है। आज के मनुष्य की बुद्धि को बिना सन्तुष्ट किये उसकी धर्मश्रद्धा को बनाये रखने की आशा निष्फल ही होगी। अतएव धार्मिक लोगों को चाहिए कि भौतिक जगत् से सम्बद्ध वैज्ञानिक अन्वेषण जब उनकी मान्यता जो पूर्ण ज्ञानियों द्वारा किये गये

३७. What is of special interest is that science is also unwittingly moving into the camp of the hidden philosophy, for some of its latest tenets as formulated by Einstein, Plank, Heisenberg, Jeans and others were anticipated and affirmed by the Indian sages at a time when Western Civilization was babbling in its infancy.

Paul Brunton, The Hidden Teaching Beyond Yoga, p. 11.

उल्लेखों के आधार पर निर्मित मानी गई हो के साथ मेल न खाते हों, तब, 'धर्म पर की श्रद्धा से लोगों को विचलित करने के लिए भौतिकवादियों का यह मिथ्या प्रचार है' ऐसा कहकर उनके आगे आँखें न मूंद ले, न बिना समझे बूझे उनका विरोध करने की जल्दबाजी करें, पर पहले यह जाँच करें कि क्या उनकी अपनी मान्यता को पूर्ण ज्ञानियों के ही वचनों का वज्रवत् अचल आधार सचमुच है।[३८]

और भी एक बात ध्यान में रखने योग्य है, और वह यह कि अपनी मान्यता-ज्ञानियों के वचन के आधार पर निर्मित मान्यता भी-ज्ञानियो के वचनों में से उनका भाव ग्रहण करने की हमारी अक्षमता के कारण गलत हो सकती है। अतः यद्यपि ज्ञानी यथार्थवादी थे इसमें कोई शक नहीं, उनके कथन के बारे में हमारी जो समझ है वह यथार्थ है या नही यह जाँच करना जरूरी है। मतलब कि ज्ञानियो की बात को हम जिस प्रकार समझे हैं उसकी सत्यासत्यता की परीक्षा करने में हमें हिचकिचाना नहीं चाहिए। प्रश्न ज्ञानियो के कथन की यथार्थता का नही, हमारी समझ की यथार्थता का है। अतः दो बाते हमें स्मरण में रखनी चाहिए। एक तो यह कि ज्ञानियो का निरूपण यथार्थ है, और दूसरी, हमारी समझ अधूरी है, वह गलत भी हो सकती है।

इसके अनेक कारण है। उनमें से एक कारण यह है कि ज्ञानियो के वचनो का पूर्ण लेख आज हमारे पास नही है। उदाहरणार्थ, जैन परम्परा मानती है कि गणधर भगवानों-भगवान् महावीर के पट्ट शिष्यो-द्वारा ग्रथित आगम सूत्रों में से आज जो ग्रन्थ उपलब्ध है वे मूल आगमों के अल्पांश मात्र हैं। चौदह पूर्वों वाला बारहवाँ अंग तो आज सर्वथा अनुपलब्ध है। उसमें से मात्र कोई कोई अंश ही, अन्य ग्रन्थों में उद्धृत हुए प्राप्त होते हैं। इस समय उपलब्ध अवशिष्ट ग्यारह अंग भी गणधर रचित मूल रचना की अपेक्षा अत्यल्प अवशेष

---

३८. देखें उपाध्याय अमरमुनि (कविजी) का लेख। "क्या शास्त्रो को चुनौती दी जा सकती है?" —अमर भारती (मासिक पत्रिका), फरवरी, १९६९; पृ०, ३३-५९, अथवा कविजी की पुस्तक 'चिंतन की मनोभूमि' पृ० २२३-२४०, (सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा)।

मात्र ही हैं। गौतम बुद्ध, श्री कृष्ण, ईसा मसीह, मुहम्मद पैगम्बर आदि के उपदेशो की भी यही स्थिति है।[३९] प्राय: सब धर्मप्रवर्तको के उपदेश उनके पीछे शताब्दियो के बाद ग्रन्थारूढ़ हुए हैं। फलत: उनके उपदेशो का जो अंश उस समय स्मृति में सुरक्षित रहा होता है उतना ही, नही कि पूर्ण उपदेश, भावी पीढियो को ग्रन्थों में मिलता है। इस प्रकार ज्ञानियों के वचनो के अल्पांश पर ही हमारी समझ का निर्माण होने से, कही कही ज्ञानियो के वचनो को समझने मे अथवा शास्त्रो की किसी सज्ञा या सकेत का अर्थघटन करने में हमारी भूल हो यह सम्भव है।

एक दृष्टान्त दूँ। कल्पसूत्र आदि शास्त्रग्रन्थो में कालगणना का नाप बतलाते हुए कहा है कि 'स्तोक: सप्तोच्छ्वासमान:'[४०] इत्यादि। इस पर से जैन परम्परा मे ३७७३ श्वासोच्छ्वास=एक मुहूर्त अर्थात् ४८ मिनिट (७ श्वासोच्छ्वास = १ स्तोक, ७ स्तोक १ लव और ७७ लव = १ मुहूर्त) का नाप आज प्रचलित है। इस पर विचार-विमर्श करने वाले को यह ज्ञात हुए बिना नही रहेगा कि इसमे कही भूल हो रही है; क्योकि सामान्यत. मनुष्य एक मिनिट में १६-१८ श्वासोच्छ्वास लेता है। योगसाधको के श्वासोच्छ्वास तो इनसे भी कम होते हैं। इससे, ३७७३ श्वासोच्छ्वास का ४८ मिनट नही किन्तु २२२ मिनट अर्थात् करीब साढे तीन घण्टे होगे, जबकि ४८ मिनट के करीब आठ सौ साढे आठ सोर वासोच्छ्वास ही होगे। इस प्रकार उपर्युक्त गणना प्रत्यक्ष-बाधित होती है। परन्तु मूल आगम-वचन मे आये हुए 'पाण' शब्द से ज्ञानियो को 'श्वासोच्छ्वास' नही, 'किन्तु नाड़ी की धड़कन' (pulse) अभिप्रेत होनी चाहिए। यह

३९ माना जाता है कि भगवद्गीता मे, कुरुक्षेत्र के मैदान पर अर्जुन को दिया गया श्री कृष्ण का उपदेश अक्षरश शब्दबद्ध हुआ है, परन्तु इतिहासकार इससे सहमत नही होते। उनका कहना है कि इस समय उपलब्ध महाभारत सातवाहन युग (ई० पूर्व २१२ से ई० स० २३८ तक) मे संकलित हुआ है, (देखो। जयचन्द्र विद्यालकार. भारतीय इतिहास की रूपरेखा, पृ० १००३)

४०. कल्पसूत्र, व्याख्यान छठा, सूत्र ११८ की सुबोधिका टीका।

अर्थघटन स्वीकार करने पर आगमवाणी की यथार्थता अबाधित रहती है और हमारी समझ में रही क्षति दूर होती है।

यह दृष्टान्त, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आगमवाणी के हमारे अर्थघटन में स्खलना आ सकती है। क्या यह, हमें कुछ अधिक नम्र और हमारी अपनी समझ से भिन्न विचार रखनें वाले के प्रति कुछ अधिक सहिष्णु बनने की आवश्यकता का निदश नहीं करता ?

स्थल विषयक जैन आगमोक्त नाप के किसी सकेत के अर्थघटन मे भी ऐसी ही किसी उलझन भरी गुत्थी की सम्भावना है। जिसे सुलझाये बिना, नगर आदि के विस्तार और अन्तर के बारे मे शास्त्र ग्रन्थों में दिये गये कितने ही उल्लेखों का समन्वय करना कठिन हो रहा है।

विचक्षण धर्मनेताओ को यह समझने में कोई कठिनाई न होनी चाहिये कि आजकी इस परिस्थिति मे, शास्त्र से विज्ञान का कहाँ विरोध है इस बात पर 'मेग्निफाइंग ग्लास' रखकर नही, किन्तु विज्ञान और आगम के बीच रहा साम्य दिखा कर ही, विज्ञान पर आस्था रखने वाले के मन में आगम वचन के ऊपर बहुमान और उसके प्ररूपक आप्त पुरुषों के प्रति भक्ति पैदा की जा सकेगी। और, आध्यात्मिक गुत्थियों को सुलझाने की दिशा मे विज्ञान जिस प्रकार आगे गतिशील है उसे देखते हुए, इसके लिये अनुकूल परिस्थिति का निर्माण आज हो रहा हो ऐसा प्रतीत होता है।

समान भूमिका

हम यह तो देख चुके है कि, अर्वाचीन विज्ञान को मान्य रखने वाले को भी अब इस तथ्य को स्वीकार करना ही रहा कि

१. हम में इस शरीर के अतिरिक्त कोई अविनाशी तत्त्व रहा है;

२. इस देह का नाश होने के पश्चात्, भीतर रहे हुए "मैं" को अन्यत्र जन्म लेना पड़ता है; और

३. भव भ्रमण के लिए, इस पृथ्वी के अतिरिक्त, विभिन्न जीवन परिस्थितियो वाला विराट विश्व है, फिर भले ही हम उसे

विज्ञान द्वारा दिये गये 'ग्रह' के नाम से, 'एस्ट्रल वर्ल्ड' के नाम से या शास्त्रोक्त 'द्वीप' 'देवलोक' आदि के नाम से पहचानें।

संक्षेप में, हम सब अनन्त विश्व के प्रवासी हैं; स्थिर निवासी कहीं के भी नही।

अब, हमारे समक्ष प्रश्न यह है की हमारी यह यात्रा किस लिए है? इसका लक्ष्य क्या है? आगे का हमारा प्रवास लघु, निष्कण्टक और सुविधापूर्ण हो इसके लिए इस जीवन में क्या किया जाय? ये प्रश्न अत्यधिक महत्व के हैं! अतएव विज्ञान में आस्था रखने वाले और आगम के श्रद्धालु दोनों को चाहिए कि वे एक दूसरे की मान्यता में रहे हुए उपर्युक्त मुख्य तथ्यों का साम्य लक्ष्य में रखकर, इनकी अपेक्षा गौण बातों में प्रतीत होते मतभेद के विवाद मे अपने समय और शक्ति का व्यय न करके, हमारी अनन्त यात्रा की पश्चाद्भू मे हमारा वर्तमान जीवन किस प्रकार बिताना श्रेयस्कर होगा इस प्राण प्रश्न को सुलझाने में अपनी समग्र शक्ति लगा दे।

६

सुख-समृद्धि का मूल स्रोत

तीस वर्ष की उम्र से पहले ही धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र और सगीत, इस प्रकार तीन-तीन विषयो मे सर्वोच्च उपाधि प्राप्त करने वाले डॉ० आल्वर्ट स्वाइत्जर ने अपने उज्ज्वल भविष्य का परित्याग कर अफ्रीका के दु:ख पीडित हब्शियो के बीच मे रहकर उनकी सेवा करने का निश्चय किया। और तीन विषयो मे पी० एच० डी० की डिग्री रखने वाले स्वाइत्जर ने अपनी समग्र ख्याति एवं ऐश्वर्य की ओर से मुँह मोडकर, तीस वर्ष की अवस्था मे डॉक्टरी का अध्ययन शुरू किया। वह पूर्ण करके सन् १९१३ मे वे अफ्रीका चले गये। इस प्रकार आराम की जिन्दगी का स्वेच्छा से त्याग कर, अफ्रीका की जगली जातियो की सेवा के लिए, वे कांगो नदी के तट पर जा बसे; और अनेक कठिनाइयो का सामना कर उन्होने इस सेवा मे अपना समस्त जीवन लगा दिया। आज की दुनिया के स्वार्थपूर्ण वातावरण मे स्वाइत्जर मे यह सेवाभावना कैसे प्रकटित हुई? इसका कुछ निर्देश उनके बचपन के जीवन से मिलता है।

स्वाइत्जर के बाल्यकाल की एक घटना है कि, एक बार उनकी माता ने उनके लिए एक ओवरकोट तैयार किया और वह उनको पहनने के लिए दिया। बालक आल्वर्ट ने कहा, "मम्मी, आज तो ठडी अधिक नही है, मुझे ओवरकोट की आवश्यकता नही है"। माता ने कहा, "देख, कुहरा बहुत है। तू यह पहन ले"। आल्वर्ट ने कहा, "मम्मी, दूसरे किसी लड़के के पास ओवरकोट नही है, तो फिर मैं अकेला यह कैसे पहनूं?"। "ठीक" कहकर उसकी माता

ने यह बात वही छोड दी। दूसरे दिन पुन यही बात निकली तब उसके पिता ने उसको खूब धमकाया, परन्तु फिर भी आल्बर्ट कोट पहनने के लिए तैयार न हुआ। पिता ने कोट पहनने के लिए उसे समझाते हुए कहा कि, 'तू ऐसी जिद क्यो करता है ? तू अच्छा लडका है। तेरी मम्मी ने कितनी मेहनत से यह कोट तैयार किया है। और कुछ नही तो उसे प्रसन्न करने के लिए भी तुझे यह पहन लेना चाहिए'। परन्तु आल्बर्ट कोट पहनने के लिए राजी न था, क्योकि दूसरे लडको को जो सुविधा न मिलती हो वह सुविधा लेने के लिए उसका मन मानता नही था। उसकी इस जिद से अकुलाकर उसके पादरी पिता ने उसका हाथ खीच कर घर से बाहर निकाल दिया और कहा, 'जब तक तू अपनी जिद न छोड़े तब तक घर से बाहर ही रहना'। और आल्बर्ट घर के बाहर घुटनो पर हाथ टिकाये रोता हुआ बैठा रहा। अपने पड़ौसी के साथ अपने जैसा प्रेम रखने की ईसा मसीह ने की हुई आज्ञा 'Love thy neighbour as thyself' के अमल मे बाल आल्बर्ट अपने पादरी पिता से आगे निकल गया।

पूर्व के जीवनों में पोषित वृत्ति-प्रवृत्ति का प्रतिघोष

बालको मे देखे जाते ऐसे आत्मिक गुणविकास के तथा बौद्धिक प्रतिभा के अथवा काव्य, सगीत, नृत्य आदि ललित कलाओ मे पारगतता के दृष्टान्त एक बात बुलन्द आवाज मे स्पष्ट करते हैं कि जीवन मे मनुष्य ने जो गुण प्राप्त किये हो अथवा शक्तियो का विकास साधा हो उसका लाभ शरीर के बदल जाने के बाद, अन्य जन्म मे भी उसे मिलता है। हेनरी फॉर्ड का ऐसा कथन उद्धृत किया जाता है कि, "पुनर्जन्म की खोज ने मेरी अस्वस्थता दूर की है। मैंने उससे शाति महसूस की और मुझे ऐसा लगा कि जीवन भले रहस्यपूर्ण हो, परन्तु उसमे व्यवस्था एव प्रगति रही हुई है। तब से जीवन के रहस्य के उद्घाटन की खोज मे अन्यत्र झाँकना मैंने छोड दिया है।"

जी० पी० वीडर नाम का एक अमेरिकन लड़का चार वर्ष की आयु मे गणित मे दक्ष बन गया था, और 'कोम्प्युटर' की गति से

बडी बड़ी रकमो के गणित के प्रश्न हल कर देता था। आयर्लैण्ड के विलियम हेमिल्टन ने स्कूल-कालेज मे बिना गये ही, बारह वर्ष के अवस्था मे प्रकाश पर महानिबध लिखकर पी० एच० डी० डिग्री प्राप्त की। छोटी उम्र मे ही असामान्य बुद्धि-प्रतिभा बतलाने वाले ऐसे बालको के दृष्टान्त हम यदा-कदा सुनते हैं। इस बात का स्मरण कराने वाली एक लड़की अमेरिका मे हाल ही मे प्रसिद्ध हुई है। एडिथ स्टर्न नामकी यह लडकी चौदहवे वर्ष मे स्नातिका बन इस समय मिशिगन विश्वविद्यालय मे प्राध्यापिका है।

मात्र सोलह वर्ष की अवस्था मे ही ज्ञान, योग एव भक्ति के त्रिवेणीसगम जैसे "अमृतानुभव" और गीता की सर्वोत्तम टीकाओ में स्थान पाने वाली 'ज्ञानेश्वरी' की रचना करने वाले सन्त ज्ञानदेव, नौ वर्ष की आयु मे ही रामायण एव महाभारत की सक्षेप मे पद्य रचना करने वाले और दसवें वर्ष मे 'दूर दर्शन' आदि अतीन्द्रिय शक्तियो का परिचय देने वाले श्रीमद् राजचन्द्र; और इस जीवन मे बिना किसी भी प्रकार की साधना के, विद्यार्थी अवस्था मे ही आत्म-साक्षात्कार करने वाले श्री रमण महर्षि जैसे आध्यात्मिक जगत् के देदीप्यमान तारको के नाम भी इस सन्दर्भ मे उल्लेखनीय हैं। दीर्घकाल के पुरुषार्थ के अभाव मे जिन सफलताओ और सिद्धियो की प्राप्ति सम्भव नही है वे, बचपन मे ही, इस जीवन मे बिना किसी प्रयत्न के, इन महानुभावो को कैसे प्राप्त हुई ?

हमारी अपनी वर्तमान शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियो एव मर्यादाओ का तथा हमे प्राप्त कौटुम्बिक और सामाजिक परिस्थिति का बीज हमारे अपने पूर्व जीवनो मे पालित-पोषित वृत्तिओ और प्रवृत्तियो मे रहा है। ~~इस तथ्य की स्पष्ट समझ और~~ विश्वास मनुष्य यदि प्राप्त कर ले तो, वर्तमान जीवन का प्रवाह निश्चित करने की सही दृष्टि वह प्राप्त कर सकेगा।

प्रकृति का अनुल्लंघनीय नियम

प्रकृति का एक पवित्र नियम है जिसका उल्लघन कभी कोई नहीं कर सकता। मनुष्य जो कुछ अच्छा-बुरा कार्य करता है अथवा

मंगल-अमंगल ध्यान या विचार तक करता है उसका बदला उसे अवश्य मिलता ही है। चाहे जैसे एकान्त स्थान मे पाप किया हो तब भी उसका फल व्यक्ति को मिलेगा ही, दुख एवं दारिद्र्य से वह आक्रात होगा ही। प्रकृति को किसी भी प्रकार ठगा नही जा सकता। उसकी आंख मे धूल झोकी नही जा सकती। हम चाहे जैसी निर्जन एवं एकान्त गुफा मे जाकर पापाचरण करे तब भी प्रकृति के इस नियम से छूटका नही जा सकता। हृदय मे तुम पापी विचार को स्थान दो तो उसके परिणाम स्वरूप वाह्य जगत् मे दुखदायक परिस्थिति, कभी न कभी तुम्हें घेर ही लेगी। इस प्रकार किसी का किया सुकृत कोई जानता हो या नही, प्रकृति तो उसके प्रत्येक सुकृत का लेखा रखती है, और उसका पारितोषिक उसे घर बैठे ही पहुंचाती है।

हमारे प्रत्येक आचार-विचार के जो प्रत्याघात हमे भुगतने पड़ते है उसका विशद अवबोध कराने वाला कर्म का सिद्धान्त जैन, बौद्ध, हिन्दू आदि आध्यात्मिक विचारधाराओ मे अपनाया गया है। परामनोविज्ञान के संशोधनो से भी कर्मसिद्धान्त को समर्थन मिला है। "दूसरा जन्म कहाँ लेना इसकी पसंदगी क्या की जा सकती है?" इस प्रश्न का उत्तर 'एज-रिग्रेशन' के प्रयोगों मे मिला है कि "ऐसी पसदगी नही की जा सकती, परन्तु पृथ्वी पर के पूर्व जीवन अथवा अन्य ग्रहों पर बिताये गये जीवन के अनुसार ही नये जीवन मे वह आत्मा कोनसा शरीर धारण करे और समाज मे कैसा स्थान प्राप्त करे यह निश्चित होता है।"[४१]

'हिप्नोटिक ट्रान्स' की सहायता से एक हजार से भी अधिक व्यक्तियो के पूर्व जीवनों का अभ्यास करने के पश्चात् डॉ० एलेक्झेण्डर

४१. The subject was then asked if there was any choice in the matter of the body into which an entity was being reincarnated, She replied that there was no choice, but that it all depended upon how one had lived in one's past life on earth and in the intermediary life on the other planets as to what body and what station of life one would inhabit in this new incarnation The Power Within, p. 180

केनन ने लिखा है कि, "गत जन्म मे आचरित किसी दुष्ट कृत्य के बदले मे वह व्यक्ति, क्रिया-प्रतिक्रिया के इस नियम के कारण, इस जीवन मे किस प्रकार दुखी होता है यह दिखलाकर, यह अभ्यास, प्रकृतितत्र मे अत्यन्त व्यापक अर्थ मे प्रवर्तमान अदल इन्साफ की बात कह जाता है। कई मनुष्य यह समझ नही पाते कि उनको एक के बाद दूसरी आपत्ति क्यो झेलनी पड़ती है? उनके गत जन्मो मे दृष्टिक्षेप करने पर ज्ञात होता है कि उन्होने पहले क्रूर कर्म किये है। और कई लोग आज कुछ भी करे तब भी उनके दाव सही पड़ते है। क्या गत जन्मो में किये गये सत्कर्मों का यह पुरस्कार नही हो सकता?"[४२]

गत जीवन के आचार-विचार के प्रतिफल के रूप मे व्यक्ति का वर्तमान जीवन आकार लेता है, इसका प्रमाण एड्गर केसी के 'लाइफ रीडिंग्ज' से भी उपलब्ध होता है। "केसी ने गत जीवन के आधार पर उन मनुष्यो की शक्तियाँ, विशेषताऐ, रुचि, रसवृत्ति और व्यवसाय तक के जो भविष्य कथन किये थे वे आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध हुए है"।[४३] 'एज-रिग्रेशन' द्वारा व्यक्ति के गत

४२. The study explains the scale of justice in a very broad way showing how a person appears to suffer in this life as a result of something he has done in a past life through this law of action and reaction known in the East as Karma .... Many a person cannot see why he suffers one disaster after another in this life, yet reincarnation may reveal atrocities committed by him in lives gone by. Others, no matter what they seem to do 'fall on their feet' as it were, and may it not be the reward for services rendered in lives gone by?

ibid, pp. 170–1.

४३. ....the detailed projections made by Cayce, which were based, he had indicated, on their former earth-experiences, have proved singularly true, even to the extent of predicting skills, traits, hobbies, interests and professions,

The Search for Bridey Murphy, p 93.

जीवन मे दृष्टिपात करने के प्रयोगो मे यह भी देखा गया है कि एक जीवन के आचार-विचार की प्रतिच्छाया उस जीवन के वाद के दूसरे जीवन मे, अथवा अनेक भवो का अन्तर पड़ने के पश्चात्, सतह पर दिखाई पडती है।[४४]

हमारी वर्तमान परिस्थिति का बीज

पूर्व जीवन का कर्म जैसे वर्तमान जीवन मे फल दिखाता है, वैसे ही इस जीवन का कर्म भी वर्तमान जीवन मे अपना प्रत्याघात पैदा कर सकता है यह सत्य पश्चिम मे अब स्वीकृति पा रहा है। इस जीवन मे प्राप्त प्रसन्नता की क्षणो का अथवा दुख के दिनो का बीजवपन हमने पूर्व जीवन मे ही किया हो ऐसा कोई नियम नही है; हो सकता है कि उसका बीज हमने इसी जन्म मे बोया हो और केवल प्रवृत्ति ही नही, हमारे मन मे पैदा होने वाले भाव और विचार भी अपने वैसे प्रत्याघात उत्पन्न करते है। "ऐसा नही है कि विचार कार्य मे परिणत हों तभी कर्म के नियमानुसार अपने प्रत्याघात पैदा करने मे समर्थ हो, अन्यथा नही। यदि उनमे पर्याप्त उत्कटता हो और पर्याप्त समय तक वे रहे हो तो अन्त मे वे अपने अनुरूप फल वाह्य परिस्थिति मे भी उत्पन्न करेगे ही। एक उदाहरण से यह वात स्पष्ट की जा सकती है। यदि कोई मनुष्य किसी को उत्कटतापूर्वक सतत् धिक्कारता हो—यहाँ तक कि उसे मार डालने का संकल्प किया हो परन्तु उस कृत्य के दुष्परिणाम के डर से उसे मार डालने की हिम्मत न हो, तो उसके इन घातक विचारों का अनुरूप प्रत्याघात उस पर एक दिन अवश्य पड़ेगा, और उस समय वह स्वय ही अकस्मात् मृत्यु का, किसी घातक दुर्घटना का अथवा उसके चारित्र को भस्मसात् करने वाले द्वेष की तरह उसके शरीर को भीतर ही भीतर कुतर-कुतर कर समाप्त करने वाली किसी व्याधि का शिकार वनेगा। इस प्रकार, यद्यपि सचमुच हत्या का

४४ Vide, The Power Within, pp 171 3.

अपराधी न होने पर भी, हत्या के विचारों के कारण उसे शारीरिक दण्ड भुगतना पड़ता है।"[४५]

कर्म के सिद्धान्त को अपनाने के लिये उत्सुक पश्चिम

इस प्रकार, परामनोवैज्ञानिक संशोधनों ने कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धान्त की प्रतीति पाश्चात्य जगत् को करा दी है। फलत वहां कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धान्त की पुन प्रतिष्ठा करने की मांग शुरू हो गई है। उक्त सुप्रसिद्ध अंग्रेज लेखक ने लिखा है कि "कर्म एक वैज्ञानिक नियम है। इसे एशियाई धर्मों ने अपनाया था और यूरोप की धार्मिक श्रद्धा में भी उसका स्थान था, परन्तु ईसा के पाँच सौ वर्ष बाद कुस्तुन्तुनिया की धर्म संगति ने ईसा के उपदेशों में से उसे निकाल दिया। इस प्रकार कुछ मूर्ख मनुष्यों के मण्डल ने पश्चिम

४५ Every deed creates both its physical reaction and the psychological tendency to repeat the deed It was mentioned . that thought tends to be creative and that sooner or later it produces Karmic fruit in man's general environment This is also true of his moral life Here, it is not always necessary for his thoughts to translate themselves into deeds before they can become Karmically effective. If they have sufficient intensity and if they are prolonged over a sufficient period they will eventually bring appropriate results even in external circumstances This can be made clearer by an actual illustration If a man persistently and intensely hates some body even to the point of ardently wishing his death, but if through fear of consequences he lacks the courage to slay the other person, then his murderous thoughts will one day react upon himself in an equilibrated form He may then himself experience a violent death or fall victim to a fatal accident or suffer from a disease which is as corrosive to his body as his hatred was to his character. Thus although not actually guilty of committing murder, he undergoes a physical penalty for *thinking* murder.

—Dr Paul Brunton, The Wisdom of the Overself, p. 138.

को इस वैज्ञानिक सिद्धांत से वंचित किया। परन्तु अब इस वैज्ञानिक सत्य को अर्वाचीन जगत् में पुनः प्रतिष्ठित करने का समय आ गया है। राष्ट्र के शासकों, नेताओ, शिक्षा-शास्त्रियो और धर्म गुरुओं का यह कर्त्तव्य है कि वे इस पुनः प्रतिष्ठा के कार्य को वेग प्रदान करें। सत्य की यह माँग है इतना ही नही, पश्चिम की संस्कृति की सुरक्षा और स्थैर्य के लिये यह नितान्त आवश्यक है। जब मनुष्य यह समझने लगेगा कि वह अपनी वृत्ति-प्रवृत्ति के प्रतिफल मे से छूटक नही सकता, तब वह अपने आचार एवं विचार मे अत्यन्त सावधान रहेगा। जब उसे यह ज्ञात होगा कि धिक्कार और द्वेष एक ऐसा तीक्ष्ण अस्त्र है जो केवल सामने के व्यक्ति को ही नही, परन्तु उससे टकराकर स्वयं छोड़ने वाले को भी घायल करता है, तब मानव जाति के इस सर्वाधिक अनर्थकारी पाप को अपने हृदय मे स्थान देने से पहले वह सौ बार विचार करेगा।

"…. … इस समझ से सुदृढ नैतिक जीवन स्वत. उद्भूत होगा। पश्चिम को पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धान्त शीघ्र ही अपनाने की अत्यन्त आवश्यकता है, क्योकि ये सिद्धान्त व्यक्ति एवं राष्ट्र को अपने उत्तरदायित्व का जो भान कराते हैं वह कोई भी असंगत वाद या मत नही करा सकता।"[४६]

—

४६ Although Karma is really a scientific law it was appropriated by the Asiatic religions as well as by the pegan faiths of primitive Europe. ... it lived in Christian faith for five hundred years after Jesus Then a group of men, the Council of Constantinople, banished it from the Christian teaching .... because it offended their own petty personal prejudices. Thus a little band of foolish men.. have robbed the West of a religious belief which, in the turn of history's wheel, must now be restored to the modern world for the scientific truth that it really is.

It is the duty of those who rule nations, guide thought, influence education and lead religion to make this restoration. Truth demands it in any case, but the safety and survival of Western civilization imperiously demand it still more. When

हमारे बन्धन की रस्सी

हमने यह देखा कि व्यक्ति की अच्छी-बुरी कोई भी प्रवृत्ति अथवा विचार तक अपनी प्रतिक्रिया उसके जीवन मे अवश्य पैदा करते हैं। रेनोर जोन्सन ने ठीक ही कहा है कि भौतिक जगत् मे सर्वत्र स्वीकृत कार्य-कारण अथवा क्रिया-प्रतिक्रिया के सिद्धान्त the law of cause and effect or action and reaction—का हमारी अपनी प्रवृत्ति, विचार, भावना आदि सब स्तरो पर स्वीकार ही आध्यात्मिक जगत् का कर्म का नियम है। हम यह अनुभव करते है कि प्रत्येक मनुष्य का जीवन अमुक मर्यादाओ से घिरा हुआ है; पूर्ण स्वतन्त्र कोई भी नही है। बाह्य परिस्थिति मे अमुक परिवर्तन लाकर वह स्वय स्वतन्त्रता का आस्वाद ले सकेगा ऐसी आशा मे मानव अनेक युद्ध लडा है, परन्तु उसके पश्चात् भी स्वतन्त्रता तो उसे चकमा देकर दूर ही रही है। इसका कारण यह है कि उसके बन्धन के मूलभूत कारण बाहर नही, परन्तु अपने हृदय और मन के भीतर पडे है। हमारी वासनाएँ, आदतें, मानसिक वृत्तियाँ, इच्छाएँ, आकाँक्षाएँ, और पसन्दगी-नापसन्दगी के हम दास है। हमारी राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थिति ही नही, किन्तु हमारी अपनी बौद्धिक एवं शारीरिक शक्तियाँ, हमारे आस-पास का वातावरण और हमारा मानसिक निर्माण भी हमारे ऊपर अमुक मर्यादाएँ

men learn that they cannot escape the consequences of what they are and what they do they will be more careful in conduct and more cautious in thinking. When they comprehend that hatred is a sharp boomerang which not only hurts the hated but also the hater, they will hesitate twice and thrice before yielding to this worst of all human sins.

....A sound ethical life will follow naturally as a function of such understanding The West has great and quick need for the acceptance of Karma and rebirth because they make men and nations ethically self-responsible as no irrational or incoherent dogma can make them ... Hence the urgency of popularizing the Karma doctrine

The Hidden Teaching Beyond Yoga, pp. 335–6.

लादते हैं। हम सर्व कैदी हैं। किसी के बन्धन की रस्सी दूसरे से लम्बी होगी, जिससे वह कुछ अधिक निर्बन्ध भाव से घूम फिर सकता होगा, परन्तु इस रस्सी से अंकित वर्तुल हमारी स्वतन्त्रता की लक्ष्मण-रेखा-सा बन जाता है। अधिकांश मानवकैदियो का यह वर्तुल अत्यन्त छोटा होता है, परन्तु मनुष्य को इसका भान नही है।

कर्म का सिद्धान्त हमे अपनी मर्यादाओ के मूल कारण तक ले जाता है, और हमारी अपनी बेड़ी स्वय हम किस तरह बना रहे हैं इसका स्पष्ट निर्देश देकर, उसमे अभीष्ट परिवर्तन लाने की सही कुंजी हमारे हाथ में रख देता है।

सुख-समृद्धि का मूल स्रोत

जगत् को हम जो अनुभव प्रसन्नता का अथवा रुदन का प्रदान करते है वह हमारे सम्मुख आयगा ही। हमारी परिस्थिति में यदि हम अनुकूल सुधार करना चाहते है तो सर्वप्रथम हमे अपने आचार-विचार पर चौकी बिठा देनी पड़ेगी। दूसरे को दुःख या ग्लानि का अनुभव कराये ऐसी किसी भी प्रवृत्ति या विचार से अलग रहने के लिए हमे जागरूक रहना पडेगा। **जीवन में सुख-शान्ति पाने का उपाय यही है कि दूसरो को सुख-शान्ति मिले इस प्रकार अपना जीवन बनाना। "जैसा बोओगे वैसा पाओगे" यह नियम प्रकृति मे सर्वत्र प्रवर्तमान है।** गेहूँ चाहिये तो गेहूँ बोओ और गुलाब चाहिये तो गुलाब। बबूल बोकर गुलाब की आशा रखना व्यर्थ है। इसी प्रकार सुख चाहते हो तो सुख बोओ; सुख का त्याग करो और दूसरो को दो जैसा कि किसान बीज का त्याग करता है और धरती को देता है।

यह बात मनुष्य बराबर समझ ले तो उसे ज्ञात होगा कि **समृद्धि का मूल औदार्य में तथा तंगी का मूल अपनी ही संकुचित स्वार्थवृत्ति मे रहा है। संघर्ष नहीं, सहयोग; द्वेष नहीं, सहानुभूति; तिरस्कार नहीं, करुणा; ईर्ष्या या मत्सर नहीं, प्रमोद ये मात्र**

आध्यात्मिक उन्नति के ही नहीं, परन्तु सांसारिक जीवन को सफलता के भी आदि स्रोत हैं। इस बात ने आजकल मानस चिकित्सको के 'प्रिस्क्रिप्शनों' मे भी स्थान पाया है। प्राणी मात्र मे समान आत्मा रही है इस जागृति पूर्वक का जीवन व्यवहार जीवन मे सुख, शान्ति और समृद्धि लाता है और साधना मार्ग मे से विघ्नो को दूर रखता है।

कर्म के सिद्धान्त को ठीक समझा जाय तो वह निस्क्रियता के बदले पुरुषार्थ की प्रेरणा देता है, निराशा पैदा न करके नई आशा प्रकट करता है। भूतकाल की वृत्ति-प्रवृत्ति से हमारा वर्तमान हमी ने बनाया है, इसी प्रकार वर्तमान का समझदारी से उपयोग कर हम अपना भावी जैसा चाहे वैसा बना सकते है। इतना ही नहीं, भूतकाल के कर्म से निर्मित हमारी वर्तमान परिस्थिति में भी, इस प्रकार, हम परिवर्तन ला सकते हैं।

कर्म के नियम से परे

कर्म के इस नियम के ज्ञान से मनुष्य, दु.खरूप प्रतिक्रिया पैदा करने वाली प्रवृत्ति से अलग रह कर, कर्म की प्रतिक्रिया को अपने अनुकूल बना सकता है, परन्तु इस प्रकार कर्मविपाक की प्रक्रिया के दासत्व से वह सर्वथा विमुक्त नही हो पाता। उसके इस दासत्व का अन्त क्या किसी भी प्रकार आ सकता है? अर्थात् जिस का प्रत्याघात ही न हो ऐसी प्रवृत्ति क्या सम्भव है? अथवा क्रिया प्रतिक्रिया की यह परम्परा बिना रुके अनन्तकाल तक अस्खलित गति से चलती ही रहेगी? आत्मा, परलोक, पुनर्जन्म और कर्म जैसी मूलभूत बातो का निर्णय होने के पश्चात्, विमर्शशील मनुष्य के लिए महत्व के प्रश्न यह रहते हैं कि क्रिया-प्रतिक्रिया के इस चक्र मे से क्या उन्मुक्त हुआ जा सकता है? इस चक्र का अस्तित्व क्यो है? इसका अन्त किस प्रकार लाया जा सकता है?

भौतिक विज्ञान का एक नियम है कि क्रिया के साथ प्रतिक्रिया अनिवार्य है। विश्व मे क्रिया-प्रतिक्रिया का यह चक्र चलता ही

रहता है। परन्तु इसमे एक अपवाद देखा गया है। पदार्थ की विभिन्न अवस्थाओं के निरीक्षण के प्रयोगो के समय तापमान कम करते-करते उसे परम शून्य-एब्सोल्यूट जीरो (-२७३.१५ डिग्री सेण्टीग्रेड) तक ले जाने के प्रयोग मे, वैज्ञानिको ने एक अद्भुत घटना देखी। परम शून्य तो एक ऐसी अवस्था है, जहाँ कभी पहुँचा नही जा सकता, परन्तु वहा पहुँचने के प्रयोगो में वैज्ञानिको ने देखा कि परम शून्य के समीप पहुचने पर पदार्थ की प्रतिरोध शक्ति एकाएक अदृश्य हो जाती है। भौतिक विज्ञान के इस परम शून्य के चमत्कार की प्रतिकृति आध्यात्मिक जगत् मे भी पाई जाती है।

साधना द्वारा मनुष्य अहता का लोप करके 'शून्य' तक पहुँच जाय तो उसकी प्रवृत्ति प्रतिक्रिया से परे हो जाती है। फिर कर्म के बन्धन उस पर अपनी पकड़ जमा नही सकते, और उसके सहज सुख, ज्ञान एव आनन्द को मर्यादित करने वाले पुराने किनारे टूट जाते हैं। 'अह'-शून्य अवस्था मे होने वाला कार्य प्रतिक्रिया पैदा नही करता यह खोज है आन्तरप्रकृति के नियमों को खोजने वाले आध्यात्मिक जगत् के सशोधको की।

आन्तर प्रकृति पर विजय

बाह्य प्रकृति के नियमो का अन्वेषण करके विज्ञान बाह्य प्रकृति पर प्रभुत्व पाने के लिए प्रयत्नशील है, ज्ञानियो का लक्ष्य है आन्तर प्रकृति पर विजय। बाह्य प्रकृति का विजय आकर्षक है, परन्तु आन्तर प्रकृति का विजय सर्वोत्तम और भव्यातिभव्य है। अणु से लेकर ग्रहो एव ताराओ के नियामक प्राकृतिक नियमो का ज्ञान पाकर अणु का विस्फोट करना अथवा चन्द्र के धरातल पर पैर रखना एक उत्तेजक अनुभव हो सकता है, परन्तु वासनाओ, उर्मियो और चित्त मे उमडते सकल्प-विकल्पो का नियमन करने वाले नियमो का ज्ञान पाकर, अह और मन से पार हो, समाधि अवस्था मे प्रवेश कर आत्मदर्शन पाना उससे भी कही अधिक रोमाचक अनुभव है।

वासना-विजय के मार्ग पर प्रस्थान करने की इच्छा रखने वालों के लिए, ज्ञानियो द्वारा निर्दिष्ट आत्मसाक्षात्कार के पथ पर बिना कदम उठाये कोई चारा ही नही है, यह सत्य आज चिन्तनशील वैज्ञानिक भी स्वीकारने लगे है।[४७] तृष्णा, स्वार्थ, द्वेष, वैर आदि अनेक वासनाओ का मानव दास है। उन सबका उद्‌गम स्थान और आधार मानव के अन्तःकरण मे रहे अह और ममता की ग्रथि है। इस ग्रंथि को पहचानने की दृष्टि मनुष्य को अध्यात्म से मिलती है, और फिर इस ग्रन्थि को नष्ट करने की शक्ति भी अध्यात्म ही उसे दे सकता है।

विज्ञान मनुष्य के बाह्य जीवन को, कलेवर को, खोखे को ओप देता है; मनुष्य का आतर पोत विज्ञान नही बदल सकता। मनुष्य के हृदय मे रही तृष्णा, द्वेष, आदि अधमवृत्तिया यथावत् बनी रहे और विज्ञान के द्वारा उसके हाथ मे अपार शक्ति आ जाय तो वह स्वय का और जगत् का अहित ही करेगा। अणु मे रही हुई अमर्यादित शक्ति अणु विस्फोट द्वारा विज्ञान ने मनुष्य के हाथ मे सौप दी। इससे पहला पराक्रम मनुष्य ने एक क्षण मे लाखो जीवित स्त्री-पुरुषो-बालको को एक साथ अग्नि स्नान कराने का हीरोशिमा और नागासाकी को भस्मीभूत करने का किया। विज्ञान ने सुख सुविधा के अधिक साधन मनुष्य को दिये है, परन्तु यह नही भूलना चाहिये कि मनुष्य के दु.ख, पीडा, हत्या बढाने मे भी विज्ञान का बहुत बडा हिस्सा रहा है। विज्ञान मनुष्य के हाथ मे शक्ति देता है, इस शक्ति का सदुपयोग करने का विवेक विज्ञान नही सिखाता। यह विवेक उसे अध्यात्म देता है। विनोबाजी के शब्दो मे कहे तो "विज्ञान जीवन की प्राणशक्ति है

४७ The fact is that we are too much slaves of sense perception We are hypnotised by space and by time the forms under which we try to understand the outer world We live in a dream from which the only way to wake up is to take the ancient path of self-realisation All those who have found their feet upon it and travelled a little way have seen the material world differently

—Raynor Johnson, The Imprisoned Splendour, p 344.

और अध्यात्म जीवन का चित्त है। चित्त के मार्ग-दर्शन में प्राण काम करता है। इसलिए अध्यात्म का मार्गदर्शन विज्ञान को मिलना चाहिये। .... बिना अध्यात्म के विज्ञान को ठीक दिशा ही न मिलेगी। .... आत्मज्ञान है आंख, और विज्ञान है पॉव। अगर मानव को आत्मज्ञान की दृष्टि न हो, तो वह अन्धा न मालूम कहाँ चला जायगा, कुछ पता नही। . . .. विज्ञान मे दोहरी शक्ति होती है। एक विनाश-शक्ति और दूसरी विकास-शक्ति। यह सेवा भी कर सकता है और संहार भी। अग्निनारायण की खोज हुई, तो उससे रसोई भी बनती है और घर मे आग भी लगायी जा सकती है। किन्तु अग्नि का उपयोग घर फूंकने मे करना है या चूल्हा जलाने मे, यह अक्ल विज्ञान मे नही है। यह अक्ल तो आत्मज्ञान मे है। जैसे पक्षी दो पंखो से उडता है, वैसे ही मनुष्य आत्मज्ञान और विज्ञान, इन दो शक्तियो से अग्रसर हो सुखी होता है।"[४८]

अध्यात्म मानव के अंतर मे रही दुर्वासनाओ के मल को दूर करने का काम करता है। अध्यात्म की सहायता से अन्त:करण निर्मल होने के बाद मनुष्य के पास जो कुछ भी शक्ति होगी उससे उसके जीवन मे सुख और शान्ति बढेगी। अन्यथा, विज्ञान द्वारा शक्ति और समृद्धि वह कदाचित् प्राप्त कर सके परन्तु सुख और शान्ति के लिये तो तड़फना ही उसके भाग्य मे रहेगा।

बाह्य सयोग और परिस्थिति विनश्वर है और जीवन मे शान्ति एव सुख बाह्य साधनो से नही, किन्तु आत्मा मे से ही उपलब्ध होगे- यह आद्याक्षर अध्यात्म की पाठशाला मे जो नही सीखता उसे प्रकृति अपने ढग से यह पाठ सिखाती है। मानवसर्जित दंगे, युद्ध, अणु-विस्फोट या भूचाल, बाढ, अकाल आदि प्राकृतिक आपत्तियो से असंख्य मनुष्य, जिन्हे वह जीवनाधार मान रहे हो वे घरबार, कुटुम्ब-परिवार और जीवन भर की मेहनत से इकट्ठी की हुई सम्पत्ति वगैरह पलभर मे

४८ विनोबा भावे, 'आत्मज्ञान और विज्ञान,' पृ० १३६-१३७ (चौथा संस्करण), सर्व सेवा सघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।

गँवा बैठते हैं। 'यह सब विनश्वर है' ज्ञानिओ के इस वचन को समझने से इन्कार करने वाले जगत् को प्रकृति इस प्रकार यह पाठ सिखाती है; और यह करके, उसकी बहिर्मुख दृष्टि को अन्तर्मुख करने का अवसर प्रदान करती है।

यह पाठ हम अध्यात्म की पाठशाला मे ज्ञानियो के चरणो मे बैठकर सीखें या प्रकृति की पाठशाला मे तंगी, वियोग, विनाश एवं विषाद का अनुभव कर, दीर्घकाल पर्यन्त चिन्ता की भट्टी में तपकर सीखे यह हमारी अपनी इच्छा-freewill पर छोड़ा है प्रकृति ने।

अध्यात्मवाद का उज्ज्वल भविष्य

उन्नीसवी शताब्दी का विज्ञान जड़वाद की खाई मे कूद पड़ा था और गत शताब्दी मे वह जड़वादी ही रहा, परन्तु बीसवी शताब्दी के विज्ञान ने अध्यात्म शिखर पर आरोहण शुरू कर दिया है, और विज्ञान का प्रस्थान अध्यात्म की सीमा मे अब प्रविष्ट हो चुका है। इस शताब्दी के अन्त के पहले अध्यात्मवाद का सूर्य, जड़वाद के बादलो को भेद कर, पुनः एक बार पूर्ण रूप से प्रकाशित होगा ऐसा भविष्यकथन अनेक क्षेत्रो मे से किया जा रहा है।

अपनी भविष्यवाणियाँ सत्य सिद्ध होने के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध प्रो० हरार नाम के इजराईल के यहूदी भविष्यवेत्ता ने कहा है कि "भारत मे एक दैवी महापुरुष का अवतार हो चुका है। सन् १९७१ई० तक, वह विना किसी प्रकार की प्रसिद्धि पाये, चुपचाप आध्यात्मिक क्रान्ति की जडे गहरी जमायेगा। बाद मे समस्त एशिया और दुनिया मे वह क्रान्ति फैल जायगी। विज्ञान के कारण दुनिया मे से सडे हुए धर्म और संस्कृति का लोप होगा तब इस मौन बीजारोपण मे से एक नये प्रकार की विश्वव्यापी धार्मिक क्रान्ति होगी। ... . साइबेरिया और मंगोलिया की सीमाओं को लेकर रूस और चीन के बीच विकट संघर्ष पैदा होगा। सन् १९८० तक दुनिया मे विश्वयुद्ध के बादल घिरेगे। बहुत से छोटे-मोटे देश नष्ट होकर बडे देशों मे मिल जायेगे। भारत का उनमे अग्रिम स्थान होगा। युनो का हेड क्वाटर भारत मे आ जायगा। भारत उसका अग्रणी बनेगा। ... . हिमालय मे से भारत को कई गुप्त भण्डार मिलेगे और कल्पनातीत

सांस्कृतिक विरासत प्राप्त होगी। ..... सन् १९८० से २००० तक के बीस वर्षों मे भारत विद्युत गति से प्रगति के शिखरों पर आरोहण करता जायगा। .... राज्य करने वाले नेता आध्यात्मिक जगत के महापुरुषो को वन्दन करके उनकी आज्ञा शिरोधार्य करने योग्य मानेंगे।[४९]

आयोवा (अमेरिका) के प्रसिद्ध भविष्यदृष्टा डॉ० रोबर्ट चार्ल्स एण्डरसन ने अपनी अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति के आधार पर भविष्यवाणी की है कि "दस वर्ष के भीतर अमेरिका के दो महानगर नष्ट हो जायेंगे। तीसरा महायुद्ध होगा, परन्तु वह लम्बे समय तक नही चलेगा। अमेरिका और रूस मिलकर चीन का नाश करेंगे। इसके पश्चात् कुछ साल मे इस पृथ्वी पर से युद्ध समाप्त हो जायेंगे। विश्व के सभी राष्ट्र एक हो जायेंगे और विश्वसमाज का निर्माण होगा।" अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है कि इनकी भविष्य-वाणियाँ ९५ प्रतिशत सत्य सिद्ध हुई हैं।[५०]

अमेरिकन महिला जिन डिकसन भी एक प्रसिद्ध भविष्यदृष्टा है। उसने भविष्यवाणी की है कि चीन द्वारा आरम्भ किया गया युद्ध जल्दी पूरा हो जायगा और सन् १९८० तक सभी प्रकार के युद्धो का अन्त आ जायगा। पश्चिम एशिया मे एक दैवी बालक का फरवरी, १९६२ मे जन्म हुआ है। वह बालक बडा होकर दुनियाँ मे क्रान्ति फैलायेगा। विश्व पर उस अवतारी पुरुष का प्रभाव उसकी उन्नीस वर्ष की आयु से फैलने लगेगा और कुछ ही वर्षों मे वह समस्त मानव जाति को एकता के सूत्र मे बाँध देगा। उसका उपदेश सुनकर विविध धर्मों के अनुयायी अपने मतभेद भूल जायेंगे। उसकी वाणी से मानव मात्र का हृदय शुद्ध और निर्मल बन जाएगा। सन् १९९९ में विश्व मे सम्पूर्ण शान्ति स्थापित हो जायगी और पृथ्वी पर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना साकार होगी।

४९. गुजरात समाचार, (गुजराती दैनिक) ता० १२-५-१९७१.

५०. 'कादम्बिनी', अक्टूबर, १९६९.

शुद्धि-पत्रक

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
५	उपात्य	मेरा अपना अनुभव :	मेरा अपना अनुभव ।
८	२५	Imprisoned	Imprisoned
९	२	शोध	शोध
९	३	शोध	शोध
१०	५	ला रहे हैं।	ला रहे हैं !
१०	२०	क्या है, इसकी	क्या है इसकी
११	३	आध्यात्मिक तत्व	आध्यात्मिक तत्त्व
१५	४	मत्रा	मात्र
१६	१५	बात	बात
१७	१८	नही हुई।''	नही हुई।
१८	२४	मस्तिष्क को	मस्तिष्क की
२०	अंतिम	pp. 28-4	pp. 23-4
२५	१	मुद	मुर्दे
२५	२५	कोकिन	कोफिन
३९	अतिम	Bridey, Murphy	Bridey Murphy,
४१	७	इसके अलावा,	और,
४४	२४	प्रकाश घण्टे	घण्टे
४९	३	लक्ष्य	लक्ष
४९	२०	आये हुए	रहे हुए
५१	२४	इसका प्रतीति	इसकी प्रतीति
५१	३०	प्रोफसर पूर्व-	प्रोफेसर, पूर्व-
५६	८	ढाचे मे से	ढाचे मे
५७	११	दुनियाँ	दुनिया

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
५८	५	,,	,,
५८	६	निदश	निर्देश
५८	२४	wnich	which
६०	१	ज्ञात-अजात	ज्ञात-अज्ञात
६१	१	शताब्दि	शताब्दी
६१	२	सकझने	समझने
६१	२१	न्अततोगत्वा	अन्ततोगत्वा
६२	१८	सीर्फ	सिर्फ
६२	२८	की धीरज	का धीरज
६३	१०	प्रमाणिकता	प्रामाणिकता
६४	११	शताब्दि	शताब्दी
६७	५	उत्तूंग	उत्तुंग
६९	२५	उद्‌घत	उद्‌धृत
७१	१	अवाधित	अबाधित
७१	६	आवश्यवता का निदश	आवश्यकता का निर्देश
७५	उपात्य	प्रकुनि	प्रकृति
८१	१६	आकाँक्षाएँ	आकाक्षाएँ
८१	१६	पसन्दगी-नापसन्दगी के	पसन्दगी-नापसन्दगी-इन सब के
८२	२०	प्रवर्तमान	प्रवर्तमान
८३	७	निस्क्रियता	निष्क्रियता
८७	१	ज्ञानिओ	ज्ञानियो

मुनिश्री की एक अन्य अमूल्य कृति

आत्मज्ञान और साधनापथ

करीबन पृष्ठ २४८ डिमाई

डॉ. नेमीचन्द जी जैन द्वारा अनूदित।

यथासंभव मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली–७ द्वारा प्रकाश्य।

'आत्मज्ञान और साधनापथ' पुस्तक मे तत्त्वज्ञान के गहन विषय को लोकसहज भाषा मे जो रूप आपश्री ने दिया है, खूब उपकारक सिद्ध होगा। विषय प्रतिपादन भी अद्भुत है। इस पुस्तक को बार-बार पढ़ने की स्वतः इच्छा होती है, इससे जान सकेंगे कि इसमें चेतना विद्यमान है।

बम्बई, ३६ **मुनि (अब आचार्य) श्री पद्मसागरजी गणिवर**

आपकी गुजराती पुस्तक ('आत्मज्ञान अने साधनापथ') पढ ली है। जैन साधुओ मे अगर ऐसी निर्भीकता आ जावे तो उद्धार हो जावे। पुस्तक हर जैन जैनेतर को पढने लायक है, कम से कम साधु-साध्वी को तो अवश्य ही पढ़नी चाहिये। आपसे भविष्य में बहुत कुछ आशा हो सकती है।

दिल्ली ७, **लाला सुन्दरलालजी जैन**

'आत्मज्ञान अने साधनापथ' एक अप्रतिम कृति है। पहले मैं इसे अनुवाद की मंशा से पढ नही पाया था। अब पढ सका हूँ। उपकृत हुआ हूँ। मुझे भी इसमे से कुछ विचार-मणियाँ मिली है। आप एक सफल कृतिकार है। आप सहज है, स्वाभाविक हैं, और अपने प्रतिपाद्य के जानकार हैं। साधुवाद!

"' इसे घर-घर पहुँचना चाहिये। हर घर के साफ-सुथरे आँगन मे यदि इसका मंगलोच्चार नही होता है तो मुझ-जैसे आदमी को उसमे सन्तोष नही है।

डॉ० नेमीचन्द जैन,

इन्दौर (म० प्र०) सम्पादक : 'तीर्थङ्कर' मासिक

आपकी रचनाएँ वस्तुत ज्ञानवर्धक, प्रेरक एव आत्मजिज्ञासुओं के लिए महत्त्वपूर्ण तथा दिशानिदेशक हैं। शास्त्र का तो सार हैं।

अम्बाला शहर (हरयाणा) **प्रो० पृथ्वीराज जैन**

'आत्मज्ञान और साधना पथ पुस्तक' पढ़ी । मन में उठते बहुत से प्रश्नो का इसमे उत्तर मिला ······ साधना और आत्मज्ञान विषय का इतना तलस्पर्शी अभ्यास, विशद व्याख्या और विषय के बारे मे हरएक साधक को स्वाभाविक उपस्थित होते प्रश्नो का इतना सुन्दर निरूपण मेरे पढ़ने मे आज तक नही आया ।

जस्टीस टी० यु० मेहता
हरयाणा हाईकोर्ट

सर्वांग सुन्दर ग्रन्थ ···· ···· यह ग्रन्थ सिर्फ, जैन समाज के लिए नही, वरन् जगत के हरएक साधक के लिए यह एक अमूल्य ग्रन्थ है । प्रस्तुत ग्रन्थ का हिन्दी, मराठी और अग्रेजी भाषा में अनुवाद कर प्रकाशित किया जाय तो अनेक साधकों के लिए यह कार्य आशीर्वाद रूप होगा ।

बम्बई,

मनसुखलाल ताराचन्द मेहता,
'आत्मानन्द प्रकाश' जनवरी, ७५

प्रथम तो पुस्तक, व्यस्तता के कारण ऊपर-ऊपर देख गया और अच्छी लगी । परन्तु अवकाश मिलते ही ध्यानपूर्वक पढ़ी तब प्रतीति हुई कि जिसके जीवन का ध्येय चित्तशुद्धि अथवा आत्मसाधना हो उसके लिए यह बहुत ही उपयोगी है इसमे सन्देह नहीं । साधकों के लिए तो बहुत ही उपयोगी और सहायक है ।

मूर्तिपूजक सम्प्रदाय मे वैज्ञानिक पद्धति और अनुभवयुक्त साहित्य बहुत कम लिखा जाता है ऐसी शिकायत है । परन्तु आपकी पुस्तक अन्य सम्प्रदाय के विद्वानो अथवा अनुभवी सन्तो की रचना के समक्ष ठहर सके ऐसी है ।

आपने प्रभु महावीर के निर्वाण महोत्सव के अवसर पर ऐसा साहित्य देकर सघ की बहुत बड़ी सेवा की है ।

बम्बई

रिषभदास रांका

यह पुस्तक मनीषियों की दृष्टि में

'विज्ञान और अध्यात्म' नामक पुस्तक पढकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। अर्वाचीन युग मे पूज्य मुनिवर्य श्री का तुलनात्मक प्रयास अत्यत प्रशंसनीय है। स्कूलों, कॉलेजो और ज्ञानसत्रो के अभ्यास के लिये पुस्तक का प्रचार वांछनीय है।

जयपुर — साध्वीजी श्री निर्मलाश्रीजी
एम. ए., साहित्य रत्न

विशाल दृष्टि से और मध्यस्थता से विज्ञान और अध्यात्म को मानो नजदीक ला रख दिया है, और आत्मधर्म की पुष्टि की है।

इसे अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, आदि भाषा मे छपवाकर इसका प्रचार करना चाहिये।

तलाजा (गुजरात) — अमरचंद मावजी शाह

जैन मुनियो मे भी इस विषय के ऐसे अभ्यासी हैं, इस विचार से मैं बहुत ही आनदित हूँ।

.... लेखनशैली सुन्दर है और प्रतीतिजनक भी।

बम्बई — पं० धीरजलाल टोकरशी शाह

मुनिश्री ने नया मार्गदर्शन कराया है। ऐसी पुस्तको की ही इस युग मे असर होगी। मुनिश्री का यह प्रयास प्रशंसनीय है।

बम्बई — अमृतलाल कालीदास दोशी

.... शैली, स्वरूप, वस्तु तथा सौष्ठव जैसे सब साहित्यिक तत्वों का विचार करें, तो आज मुनिश्री अमरेन्द्रविजयजी एक सफल मौलिक सर्जक माने जायेंगे। 'विज्ञान और अध्यात्म' तथा 'आत्मज्ञान और साधनापथ' नामक आपकी दो कृतियो ने गुजराती जैन चिंतनात्मक साहित्य को अनुपम सौन्दर्य प्रदान किया है। इन कृतियों की वजह से यह साहित्य एक नयी ही दिशा मे मुड़ गया है।

बम्बई — गुणवन्त ए० शाह
'ती[illegible]र' दिसम्बर, ७५

श्री जिनदत्तसूरि ज्ञानमाला के कतिपय अभिनव प्रकाशन

१. दादा गुरु इकतीसा (पांचवी आवृत्ति) श्री गोपाल जैन
२. दादा कुशल गुरु की अमर कहानी
३. प्रभु गुरु स्तवन (तृतीय आवृत्ति) ०-६०
४. नमस्कार चिंतामणि (चौथी आवृत्ति) गुजराती ले० मुनिराज श्री कुंदकुंदविजयजी म० सा० अनुवादक चाँदमल सीपाणी ५-५०
५. जैसलमेर पंच तीर्थी का इतिहास मुनिराज श्री प्रकाशविजयजी म० सा० (चौथी आवृत्ति) संपादक चाँदमल सीपाणी २-००
६. धर्म व संसार का स्वरूप श्री गोपीचंद धाड़ीवाल २-५०
७. जीवन दर्शन श्री गोपीचंद धाड़ीवाल (चतुर्थ आवृत्ति) २-५०
८. अध्यात्म विज्ञान योग प्रवेशिका श्री गोपीचंद धाड़ीवाल (दूसरी आवृत्ति) ४-२५
९. दादा गुरु चरित्र (चारो दादा साहब का संक्षिप्त जीवन) ०-६०
१०. विज्ञान और अध्यात्म मुनिराज श्री अमरेन्द्रविजयजी म० सा० (दूसरी आवृत्ति) ४-२५
११. साइंस आफ हेप्पीनेस श्री गोपीचंद धाड़ीवाल (अंग्रेजी) [दूसरी आवृत्ति] २-५०
१२. अध्यात्म कल्पद्रुम सार श्री हरिश्चंद धाड़ीवाल ६-००
१३. परमेष्ठि नमस्कार पं० भद्रंकरविजयजी गणि ४-००
१४. चैत्यवदन व्याख्या श्री गोपीचंद धाड़ीवाल १-२५
१५. पंच परमेष्ठि नमस्कार के चमत्कार अनुवादक चाँदमल सीपाणी ३-००
१६. आनंदघनजी के पदों पर एक दृष्टि गोपीचंद धाड़ीवाल १-२५
१७. चैत्यवदन का महत्व अनुवादक चाँदमल सीपाणी १-२५
१८. लाल-कृत स्तनावलि सदुपयोग